CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

# जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 10 अंक : 126 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, गुरूवार 29 मई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

### विश्व पर्यावरण दिवस पर गंगादशमी का अनूठा संयोग

# जल स्वावलम्बन अभियान को बनाएं जन आंदोलन, योग दिवस के आयोजन को प्रदेश की धरोहर से जोड़ें : भजनलाल

## प्रदेश में मनाया जाएगा जल स्वावलम्बन पखवाड़ा, जल स्रोतों पर होगा पूजन

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार जल व पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से नीतिगत निर्णय लेकर राजस्थान को स्वस्थ व स्वच्छ प्रदेश बनाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर इस वर्ष गंगादशमी का अनूठा संयोग बना है। गंगादशमी की मान्यता को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार इस अवसर को जल स्वावलम्बन पखवाड़े के माध्यम से वर्षा जल के अधिक संग्रहण और जल स्रोतों के रख-रखाव व स्वच्छता के लिए व्यापक स्तर पर मनाने जा रही है। शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित बैठक में निर्देश दिए कि जल स्वावलम्बन पखवाड़े में आयोजित होने वाली गतिविधियों में आमजन की पूर्ण सहभागिता सुनिश्चित हो और प्रत्येक गांव को इन गतिविधियों में जोड़ा जाएं ताकि यह एक जन आंदोलन का रूप ले सके।

### 5 जून से 20 जून तक मनाया जाएगा जल स्वावलम्बन पखवाड़ा

मुख्यमंत्री ने कहा कि 5 जून से 20 जून तक जल स्वावलम्बन पखवाड़ा मनाया जाएगा। इस दौरान गंगा दशमी व विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में प्रत्येक ग्राम व शहर में समस्त विभागो की ओर से जल स्रोतों, नदियों, जल धाराओं एवं तालाबों पर पूजन कलश यात्रा, जागरूकता अभियान, स्वच्छता अभियान व अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। साथ ही, विभिन्न जल संग्रहण संरचनाओं का लोकार्पण व नई संरचनाओं का शुभारम्भ भी किया जाएगा। इसी तरह प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की 10 नई जलग्रहण परियोजनाओं का शुभारम्भ भी होगा।

### जल संचयन बनें जन-अभियान

मुख्यमंत्री ने कहा कि 'सबका श्रम-सबकी सहभागिता' की भावना के साथ जल स्वावलम्बन पखवाड़े में आयोजित होने वाली गतिविधियों की जागरूकता के लिए वृहद् स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जाए और जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं व आमजन को सहभागिता के लिए प्रेरित किया जाए। साथ ही, उन्हें सरकारी संस्थाओं में दान करने व रेलवे स्टेशनों आदि पर यात्रियों व आमजन के लिए जल सेवा की व्यवस्था एवं पक्षियों के लिए परिंडे लगाने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार भी ऐसी संस्थाओं व समाजसेवियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करेगी। शर्मा ने कहा कि कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान के अन्तर्गत भामाशाहों, प्रवासी राजस्थानियों के माध्यम से क्राउण्ड फण्डिंग व कॉरपोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी निधि के तहत रिचार्ज/जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण करवाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जल स्वावलम्बन पखवाड़े में पेयजल स्रोतों की सफाई मरम्मत, जल बचत के लिए जन जागरूकता अभियान सहित अन्य कार्यक्रम भी संचालित किए जाएंगे। उन्होंने इस दौरान अस्पतालों सहित सरकारी संस्थाओं में स्वच्छता संबंधी गतिविधियों व सीएसआर के जरिए जन भागीदारी बढ़ाने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री पौधरोपण महाभियान व हरियालो राजस्थान मिशन के अन्तर्गत प्रदेश ने पिछले वर्ष 7 करोड़ से अधिक पौधारोपण का रिकॉर्ड बनाया था। इस वर्ष भी 11 करोड़ पौधारोपण के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आगामी मानसून सत्र में पौधारोपण की आवश्यक गतिविधियों की भी तैयारियां शुरू की जाएं।

### पर्यटन स्थलों पर हो योगाभ्यास का आयोजन

शर्मा ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर विश्व भर में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से योग का बड़ा महत्व है और राज्य सरकार ने योग को आमजन के जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने के क्रम में कई निर्णय लिए हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान का पर्यटन दुनियाभर में बेजोड़ है। इसलिए इस वर्ष के योग दिवस के आयोजन को प्रदेश की संस्कृति व धरोहर से जोड़ते हुए प्रत्येक संभाग व जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर योगाभ्यास का आयोजन सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही, ब्लॉक, ग्राम पंचायत, आयुष्मान आरोग्य मंदिर और सरकारी व गैर-सरकारी संस्थानों में भी योगाभ्यास का आयोजन किया जाए। बैठक में उन्होंने अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम के लिए भी दिशा-निर्देश भी प्रदान किए। बैठक में विभिन्न विभागों के उच्चाधिकारी मौजूद रहे और वीसी के जरिए मुख्य सचिव व समस्त संभागीय आयुक्त व जिला कलक्टर भी जुड़े।

## माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दसवीं में लड़कियों से फिर मारी बाजी

जयपुर टाइम्स

**जयपुर/अजमेर(कासं.)।।** राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से 10वीं कक्षा का रिजल्ट घोषित कर दिया गया है। इस वर्ष कुल 10,94,186 छात्रों ने परीक्षा के लिए पंजीकरण कराया था, जिनमें से 10,71,460 छात्र परीक्षा में शामिल हुए। कुल 10,02,842 छात्र सफल घोषित किए गए हैं, जिससे कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 93.03% रहा। लड़कियों ने एक बार फिर बाज़ी मारी है। इस बार लड़कियों का पास प्रतिशत 94.08% रहा, जबकि लड़कों का पास प्रतिशत 93.16% दर्ज किया गया। कुल पास होने वाले छात्रों में 5,23,043 लड़के और 4,79,799 लड़कियां शामिल हैं। रिजल्ट के अनुसार, 5,46,370 छात्रों को प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई, जबकि 3,76,774 छात्रों को द्वितीय श्रेणी और 79,519 को तृतीय श्रेणी मिली। केवल पास की श्रेणी में 179 छात्र आए हैं। वहीं, 30,599 छात्रों को सप्लीमेंट्री दी गई है। जिलावार प्रदर्शन की बात करें तो टॉप 5 जिलों में सीकर (97.56%), झुंझुनू (97.53%), नागौर (97.26%), डीडवाना-कुचामन (97.23%) और कोटपुतली-बहरोड़ (96.15%) शामिल हैं। वहीं प्रदर्शन में पीछे रहने वाले जिले प्रतापगढ़ (83.92%), धौलपुर (87.75%), कोटा (87.90%), बारां (88.17%) और सलूम्बर (88.61%) हैं। रिजल्ट में लड़कियों की बेहतर परफॉर्मेंस और जिलेवार अंतर ने एक बार फिर शिक्षा के क्षेत्र में असमानता और सुधार की आवश्यकता को उजागर किया है।

## भाजपा कार्यकर्ताओ की नब्ज टटोलने आएंगे जेपी नड्डा

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा 31 मई को एक दिवसीय दौरे पर जयपुर आ रहे हैं। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य भले ही महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम में भाग लेना हो, लेकिन इसके राजनीतिक मायने कहीं ज्यादा गहरे बताए जा रहे हैं। नड्डा के दौरे को पार्टी के संगठनात्मक समीकरणों की जांच-पड़ताल और आगामी रणनीतियों की नींव के तौर पर देखा जा रहा है। सूत्रों के अनुसार नड्डा जयपुर स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय में वरिष्ठ नेताओं और पदाधिकारियों के साथ एक अनौपचारिक लेकिन महत्वपूर्ण बैठक कर सकते हैं। इस बैठक में प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया सहित अन्य बड़े नेता शामिल हो सकते हैं। प्रदेश कार्यालय में इस संभावित बैठक को लेकर तैयारियां तेज हैं, हालांकि भाजपा की ओर से अब तक आधिकारिक कार्यक्रम जारी नहीं किया गया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष के इस दौरे के दौरान संगठन की वर्तमान स्थिति, नेताओं के बीच समन्वय और कार्यकर्ताओं के फीडबैक को गंभीरता से लिया जाएगा। नड्डा प्रदेश भाजपा की नई कार्यकारिणी के गठन को लेकर प्रारंभिक चर्चाएं भी कर सकते हैं। इसके अलावा आगामी महीनों में चलाए जाने वाले संगठनात्मक अभियानों की रूपरेखा भी इसी बैठक में तय की जा सकती है। सूत्रों का दावा है कि नड्डा को हाल ही में प्रदेश भाजपा में सामने आई गुटबाजी और आंतरिक मतभेदों की जानकारी दी जाएगी। वे यह भी जानने की कोशिश करेंगे कि प्रदेश सरकार और पार्टी संगठन के बीच तालमेल का स्तर क्या है और जमीनी कार्यकर्ताओं तक संवाद कैसे पहुंच रहा है। आगामी निकाय चुनावों की तैयारी और रणनीति को लेकर भी इस दौरे को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। नड्डा नेताओं को आवश्यक दिशा-निर्देश दे सकते हैं ताकि पार्टी संगठन हर स्तर पर मजबूत और संगठित रूप में सामने आए। यद्यपि दौरे का सार्वजनिक चेहरा महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम होगा, लेकिन राजनीतिक हलकों में इसे भाजपा के लिए एक निर्णायक मोड़ माना जा रहा है। संगठन में संभावित बदलावों और नेतृत्व के मूल्यांकन की झलक इस दौरे में साफ देखी जा सकती है।

## मणिपुर में सियासत गर्म, अचानक सरकार बनाने की हलचल

### गवर्नर से मिले भाजपा नेता, 44 विधायकों के समर्थन का दावा

जयपुर टाइम्स

**इंफाल(एजेंसी)।** मणिपुर में सरकार गठन की कवायदों ने एक बार फिर रफ्तार पकड़ ली है। भाजपा नीत एनडीए के 10 विधायक सरकार बनाने का दावा पेश करने के लिए इंफाल में राजभवन पहुंचे हैं। भाजपा के आठ, एनपीपी के एक और एक निर्दलीय विधायक ने राज्य में सरकार बनाने का दावा पेश करने के लिए मणिपुर के राज्यपाल अजय कुमार भल्ला से मुलाकात की। उन्होंने दावा किया कि उनके पास 44 विधायकों का समर्थन है। मणिपुर में विधायकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने सरकार बनाने का दावा पेश करने के लिए बुधवार को राजभवन में राज्यपाल से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल को समर्थन का औपचारिक पत्र सौंपा और मौजूदा राजनीतिक अनिश्चितता के बीच एक स्थिर शासन विकल्प प्रदान करने की अपनी तत्परता दोहराई। राज्यपाल से मिलने के बाद विधायक राधेश्याम ने कहा कि 'हमारे पास 44 विधायकों का समर्थन है और सभी भाजपा विधायक जनता की इच्छा का प्रतिनिधित्व करने वाली सरकार बनाने के लिए तैयार हैं। हम राज्यपाल से हमारे बहुमत पर विचार करने और त्वरित कार्रवाई करने का आग्रह करते हैं। राज्यपाल से दावे की समीक्षा करने और संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार निर्णय लेने की उम्मीद है। निर्दलीय विधायक निशिकांत सिंह ने कहा कि ज्यादातर लोग चाहते हैं कि एक लोकप्रिय सरकार बने और यही कारण है कि हम राज्यपाल से मिलने यहां आए हैं। हमने अन्य बातों पर भी चर्चा की, जैसे कि लोकप्रिय सरकार बनने के बाद राष्ट्रपति शासन का कामकाज पहले जैसा नहीं रह सकता। मुख्य रूप से मुख्य मुद्दा एक लोकप्रिय सरकार का गठन था। राज्यपाल की प्रतिक्रिया भी अच्छी थी। उन्होंने कहा कि हमें उम्मीद है कि जल्द ही सरकार का गठन हो जाएगा। हम राज्यपाल से अपील कर रहे हैं कि हमें लोकप्रिय सरकार चाहिए। हमने राज्यपाल को एक कागज भी दिया है, जिस पर हम सभी ने हस्ताक्षर किए हैं। मणिपुर में एनडीए के सभी विधायक लोकप्रिय सरकार बनाने के लिए बहुत उत्सुक हैं। हम जनता का समर्थन भी चाहते हैं। हमने जो कागज दिया है, उस पर करीब 22 लोगों के हस्ताक्षर हैं। राज्यपाल से मिलने के लिए 10 विधायक यहां आए हैं। इससे पहले 21 विधायकों ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर पूर्वोत्तर राज्य में शांति और सामान्य स्थिति सुनिश्चित करने के लिए 'लोकप्रिय सरकार' बनाने का आग्रह किया गया था। पत्र पर भाजपा के 13, एनपीपी-नगा पीपुल्स फ्रंट के तीन-तीन और विधानसभा के दो स्वतंत्र सदस्यों के हस्ताक्षर थे।

### मोदी सरकार ने खोला राहत का पिटारा

## किसानों को सौगात, आंध्र प्रदेश में फोरलेन हाईवे का एलान

जयपुर टाइम्स

**नई दिल्ली(एजेंसी)।** केंद्र सरकार ने अपनी कैबिनेट बैठक में 5 बड़े फैसले लिए हैं। इसमें खरीफ की फसलों पर एमएसपी बढ़ाने से लेकर आंध्र प्रदेश में फोरलेन हाईवे के निर्माण को मंजूरी और किसान क्रेडिट कार्ड के जरिए कम ब्याज पर ऋण की योजना को मंजूरी दी है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार ने खरीफ की फसलों पर लागत से 50 फीसदी अधिकर एमएसपी को मंजूरी दी है। वैष्णव ने कहा कि सरकार ने बीते 10 साल में लगातार एमएसपी में बढ़ोतरी की है और हालिया फैसले से 7 करोड़ से अधिक किसानों को फायदा होगा। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि सरकार ने खरीफ की फसलों पर एमएसपी को मंजूरी दी है। इसके लिए सरकार ने 2,07,000 करोड़ रुपये का बजट तय किया है। सरकार ने 14 खरीफ फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य को मंजूरी दी है। वैष्णव ने कहा कि सरकार ने ये सुनिश्चित किया है कि किसानों को उनकी लागत के ऊपर न्यूनतम 50% मार्जिन मिले। इसके अलावा कैबिनेट ने आंध्र प्रदेश में बडवेल-गोपावरम गांव (एनएच-67) से गुरुविंदपुडी (एनएच-16) तक फोरलेन बडवेल-नेल्लोर राजमार्ग के निर्माण को मंजूरी दी है। इस फोरलेन की लंबाई 108.134 किलोमीटर होगी और इसके निर्माण में 3653.10 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

**किसानों को आसानी से मिलेगा ऋण**

कैबिनेट ने वर्तमान 1.5 प्रतिशत ब्याज छूट के साथ वित्त वर्ष 2025-26 के लिए संशोधित ब्याज छूट योजना (एमआईएसएस) को जारी रखने को मंजूरी दी है। बता दें कि संशोधित ब्याज छूट योजना का उद्देश्य किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से किसानों को सस्ती ब्याज दर पर अल्पकालिक ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इसके अलावा कैबिनेट ने भारतीय रेलवे के दो मल्टीट्रैकिंग परियोजनाओं को मंजूरी दी, जो महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में लागू की जाएंगी। इसमें रतलाम और नागदा के बीच तीसरी और चौथी रेल लाइन और वर्धा व बल्लारशाह के बीच चौथी रेल लाइन की परियोजना शामिल है। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के चार जिलों को कवर करने वाली इन दोनों परियोजनाओं से भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 176 किलोमीटर की वृद्धि होगी।

## सुखद भविष्यवाणीः राजस्थान में इस साल मानसून में होगी जबरदस्त बारिश

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** मौसम विभाग ने कहा है कि इस साल जून से सितंबर तक आने वाले मानसून सीजन के दौरान भारत के अधिकांश हिस्सों में सामान्य से अधिक बारिश हो सकती है। मौसम विज्ञान विभाग ने इस साल दक्षिण- पश्चिम मानसून के लिए अपना नया पूर्वानुमान जारी किया। मौसम विभाग की रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष पूरे भारत में दीर्घ अवधि औसत (एलपीए) का 106 प्रतिशत बारिश होने की संभावना है, यानी इस वर्ष सामान्य से 6 प्रतिशत ज़्यादा बारिश हो सकती है. मानसून के पहले महीने जून में भारत के अधिकांश हिस्सों में सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है। लेकिन दक्षिणी भारत के कुछ क्षेत्रों और उत्तर-पश्चिम और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में सामान्य से कम वर्षा हो सकती है। रिपोर्ट की ख़ास बात ये है कि मध्य और दक्षिण भारत में सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है जो कृषि उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। उत्तर-पश्चिम भारत में सामान्य वर्षा होने की उम्मीद है। भारत के अधिकांश वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों को कवर करनेवाले मानसून के कोर ज़ोन में भी सामान्य से अधिक वर्षा होने की उम्मीद है। यह खरीफ फसलों की खेती के लिए अच्छा माना जा रहा है। पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल जैसे प्रमुख कृषि क्षेत्रों में अच्छी बारिश होने की संभावना है। लेकिन पूर्वोत्तर भारत में सामान्य से कम वर्षा हो सकती है, जिससे क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र और कृषि के लिए कुछ चिंताएं पैदा हो सकती हैं। अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय में सामान्य से कम वर्षा होने की संभावना है, जबकि कुछ पूर्वोत्तर और पहाड़ी क्षेत्रों में लगभग सामान्य वर्षा हो सकती है। मौसम विभाग ने पूरे देश के लिए अपने पूर्वानुमान में राजस्थान के लिए भी अच्छी बारिश की भविष्यवाणी की है। मौसम विभाग के अनुसार पश्चिमी राजस्थान के हिस्सों में 115% बारिश हो सकती है। यानी इन इलाकों में सामान्य से 15 प्रतिशत ज़्यादा बारिश होने का अनुमान है। पूर्वी राजस्थान में 110% बारिश का अनुमान व्यक्त किया गया है, यानी पूर्वी राजस्थान के क्षेत्रों में औसत से 10 प्रतिशत ज़्यादा बारिश हो सकती है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान से तापमान के बारे में भी एक संकेत मिलता है। देश के अधिकांश भागों में अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने की उम्मीद है, लेकिन उत्तर-पश्चिम और पूर्वोत्तर भारत के कई भागों में अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक रह सकता है। मध्य भारत और उससे सटे दक्षिणी प्रायद्वीप के कुछ हिस्सों को छोड़कर अधिकांश क्षेत्रों में न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने का अनुमान है, जहां सामान्य से कम न्यूनतम तापमान दर्ज किया जा सकता है। अच्छी बात यह है कि उत्तर-पश्चिम, मध्य और पूर्वी भारत के अधिकांश हिस्सों में हीटवेव वाले दिनों की संख्या सामान्य से कम रहने की संभावना है।

# किसी प्रकार की खानापूर्ति व उदासीनता पाई तो संबंधित के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जावेगी-जिला कलक्टर

## जिला कलक्टर ने ली केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं व बजट घोषणाओं आदि की समीक्षा बैठक

जयपुर टाइम्स

**अलवर(निसं.)।** जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं, बजट घोषणाओं, राजस्थान संपर्क पोर्टल, अंतर विभागीय लंबित कार्यों आदि की विस्तृत समीक्षा कर जिला स्तरीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि जिले में केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं को उनकी मंशा के अनुरूप धरातल पर प्रभावी रूप से क्रियान्वित करावे। प्रत्येक पात्र व्यक्ति को इन योजनाओं से जोडकर उन्हें लाभांवित कराया जावे। रेंडम आधार पर इन योजनाओं की जांच की जाएगी। यदि इनके संचालन में किसी प्रकार की खानापूर्ति व उदासीनता पाई गई तो संबंधित के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई अमल में लाई जावेगी। उन्होंने राजस्थान स पर्क पोर्टल की समीक्षा कर निर्देश दिये कि प्रतिदिन संबंधित अधिकारी पोर्टल का अवलोकन कर इस पर आने वाली परिवेदनाओं का गुणवत्ता के साथ निस्तारण करना सुनिश्चित करें। साथ ही उन्होंने निर्देश दिये कि मुख्यमंत्री कार्यालय, जनसुनवाई आदि से प्राप्त परिवेदनाओं का भी गुणवत्ता के साथ त्वरित निराकरण किया जावे। पोर्टल का अवलोकन नहीं करने, परिवेदनाओं के निस्तारण में उदासीनता बरतने व निस्तारण का कार्य गुणवत्तापूर्ण नहीं करने पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जावेगी। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक से संबंधित परिवेदनाएं अधिक समय तक लंबित रखने पर नाराजगी जाहिर कर तुरंत दोनों प्रकरणों का निस्तारण कराने के निर्देश दिये। जिला कलक्टर ने जिले के लिए हुई बजट घोषणाओं की समीक्षा कर निर्देश दिये कि निर्धारित टाइम लाइन के अनुरूप कार्यों को चरणबद्ध रूप से पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। राज्य स्तर से संबंधित बिंदुओं को समय पर अवगत कराए ताकि उनका समयबद्ध रूप से निराकरण कराया जा सके। साथ ही उन्होंने निर्देश दिये कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जावे। कार्यों की प्रगति रिपोर्ट नियमित रूप से भिजवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने गुरू गोवलकर आकांक्षी ब्लॉक विकास योजना के तहत जिले के रामगढ़ ब्लॉक का चयन होने की जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश के 41 ब्लॉक में से अलवर जिले के रामगढ़ ब्लॉक का चयन किया गया है। इस योजना के तहत पिछडे ब्लॉक में सामाजिक एवं आर्थिक विकास कार्य किए जाएंगे। इसके लिए डेढ करोड रूपये का विशेष बजट आवंटित हुआ है। उन्होंने योजना के रामगढ़ में प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जिला स्तरीय अधिकारियों को स्वयं मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिये। इसके पश्चात जिला कलक्टर ने प्रोजेक्ट समृद्ध किसान के साथ कृषि व किसानों से जुडी योजनाओं की समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि आपसी समन्वय रखकर किसानों को न केवल योजनाओं से जोडे बल्कि उनका लाभ दिलाकर उन्हें समृद्धि की ओर लाने की दिशा में कार्य करें। बैठक में एडीएम प्रथम मुकेश कायथवाल, यूआईटी सचिव धीगदे स्नेहल नाना, डीएफओ अलवर राजेन्द्र हुड्डा, डीटीओ सुरेश यादव, सरस डेयरी की एमडी सुनीता यादव, सीएमएचओ डॉ. योगेन्द्र शर्मा, पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता भूरी सिंह, जयपुर डिस्कॉम के अधीक्षण अभियन्ता सुधीर पाण्डे, जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियन्ता रमेश चन्द शर्मा, कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक पी.सी मीणा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक लक्ष्मण सिंह, महिला एवं बाल विकास विभाग के उप निदेशक महेश चंद गुप्ता, रीको के वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक परेश सक्सेना, पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक रमेश मीणा, एलडीएम बाबूलाल पालरिया, पर्यटन विभाग की उप निदेशक टीना यादव, राजीविका की डीपीएम रेखारानी व्यास सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

# अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महिला महासभा का शपथग्रहण समारोह, युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं वृद्धजन सम्मान समारोह हुआ संपन्न

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** जयपुर स्थित अग्रवाल कालेज ऑडिटोरियम में अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महिला महासभा का शपथग्रहण कार्यक्रम एवं सर्ववर्गीय जायसवाल समाज, जयपुर द्वारा आयोजित युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं वृद्धजन सम्मान समारोह का भव्य आयोजन हुआ। सर्वप्रथम ध्वजारोहण एवं भगवान सहस्रबाहु अर्जुन की आदमकद फोटो पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जलित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि किशोर हेमराज जायसवाल, मदनलाल प्रभातीलाल जायसवाल, शिवचरण हाडा, कन्हैयालाल पारेता, हरीश कलाल रहे एवं अति विशिष्ट अतिथि संजय जायसवाल, राजेंद्र जायसवाल, आदित्य वर्धनम, उत्तमचंद चौधरी, गौरव जायसवाल, आनंद सिंह मेवाडा, जुगल किशोर जायसवाल रहे। अभी हाल ही में घोषित अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा के मुख्य महासभा की नव निर्वाचित कार्यकारिणी, पदाधिकारियों एवं महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष पूनम गुप्ता, महासचिव हर्षा जायसवाल, कोषाध्यक्ष मनीषा सुवालका एवं पूरी टीम को राष्ट्रीय अध्यक्ष मदनलाल जायसवाल ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। समारोह में सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों व महिला प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मी जायसवाल सहित सभी को नियुक्ति पत्र दिये गये। कार्यक्रम में महासभा के संरक्षक किशोर हेमराज जायसवाल ने नवनिर्वाचित पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि मैं चाहता हूं कि हम सब तन, मन, धन से पूरी टीम के साथ खड़े रहे। राष्ट्रीय अध्यक्ष मदनलाल जायसवाल ने सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारीयो को बधाई देते हुए बताया कि अहमदाबाद में 32 कमरों का भवन निर्माणाधीन है एवं उसका जल्दी ही काम पूरा कर लिया जायेगा। शपथ ग्रहण से पूर्व भामाशाह एवं वरिष्ठ समाजसेविका स्व. सरला गुप्ता को एक मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष गौरव जायसवाल ने बताया कि 2 नवम्बर 2025 को इंदौर में सामूहिक विवाह एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की जायेगी। इसके बाद सर्ववर्गीय जायसवाल समाज जयपुर की ओर से आयोजित युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं वृद्धजन सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। परिचय सम्मेलन में करीब 150 युवक-युवतियों ने अपना मंच पर आकर अपना परिचय दिया। कार्यक्रम में 75 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु वर्ग के शिवचरन हाडा एवं उत्तम चंद चौधरी सहित करीब 80 स्वजातीय बंधुओं को माला, दुपटटा एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में हरीश कलाल बांसवाड़ा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष मदनलाल जायसवाल, ललित जायसवाल, एडवोकेट निधि सुवालका, कंचन हाडा एवं राजपाल जायसवाल व अन्य का तलवार एवं महाराणा प्रताप की तस्वीर भेंट कर सर्वोच्च सेवा सम्मान से सम्मानित किया। कार्यक्रम में राजस्थान हैहयवंशी कलाल महासभा, शांति देवी सोमवंशी चैरिटेबल ट्रस्ट, श्री सहस्त्रबाहु सोमवंशी वेलफेयर सोसाइटी राजस्थान, जायसवाल सेवा समिति राजस्थान के पदाधिकारीयो एवं आयोजन समिति सहित अन्य समितियां के पदाधिकारीयो का माला, दुपट्टा एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। समिति के ललित जायसवाल, एडवोकेट निधि सुवालका, कंचन हाडा एवं जुगल किशोर जायसवाल ने कहा कि इस तरह के आयोजन समाज में होते रहने चाहिए जिससे समाज के लोग एकत्रित होते हैं और अपने विचार आदान प्रदान करते हैं। समाज की छुपी हुई प्रतिभाएं सामने आती है समाज में जागृति आती है और एकजुट होकर आगे बढ़ता है और कहा कि कार्यक्रम में सभी सम्मानित दानदाताओं, कार्यकर्ताओं एवं बड़ी संख्या में आए सभी स्वजाति बंधुओं का आभार प्रकट करते हैं। मंच संचालन सूर्य प्रकाश सुवालका व मीतू हाडा ने किया।

# भारत विकास परिषद् अलवर एवं भा. वि.प अलवर चैरिटेबल ट्रस्ट ने लगाया शिविर

## ग्रीष्मकालीन महिला एवं बाल संस्कार शिविर में बच्चे ले रहे हैं रुचि

जयपुर टाइम्स

**अलवर(निसं.)।** भारत विकास परिषद् अलवर एवं भा. वि.प अलवर चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा ग्रीष्मकालीन महिला एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन ओसवाल स्कूल अलवर में आयोजित किया जा रहा है। प्रकल्प संयोजक महिला शिविर आशा मित्तल ने जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में नृत्य, योगा,जूडो- कराटे , ढोलक, ड्राइंग पेंटिंग, मेंहदी, सिलाई, आर्ट अंडर क्राफ्ट, कैलोग्राफी, ब्यूटीशियन सहित अन्य अभिरुचियों का प्रशिक्षण अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा दिलवाया जा रहा है। बाल संस्कार कार्यक्रम प्रकल्प संयोजक महिला अनुराधा चौहान ने सूचित किया कि बाल संस्कार शिविर में भाग ले रहे बच्चों को अभिरुचि के अनुसार तो प्रशिक्षण दिया ही जा रहा है पर साथ ही उन्हें संस्कारित करने के लिए व्या यान सहित अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। मंगलवार को बाल संस्कार के तहत डॉ सरोज गुप्ता ने ओम का उच्चारण एवं गायत्री मंत्र के उच्चारण का हमारे शरीरिक और मानसिक स्तर पर क्या असर होता हैं इसके बारे में जानकारी दी, इसके अतिरिक्त उन्होने सभी बच्चों को भोजन प्रणाली के बारे में भी बताया कि हमें भोजन किस प्रकार करना चाहिए और हमारी अच्छी सेहत के लिए हमें भोजन के किन नियमों का पालन करना चाहिए, डॉ सरोज गुप्ता ने बताया कि हमारी प्राचीन संस्कृति का हमारे जीवन में क्या महत्व है। शिविर में लगभग 85 प्रशिक्षणारथियों (बालिकाओं) ने भाग लिया। प्रशिक्षण का समापन 30 मई 2025 शुक्रवार को किया जायेगा। शाखा सचिव राधे श्याम ने बताया कि शिविर के संचालन में शाखा पदाधिकारियों सहित शाखा के पुरुष एवं महिला सदस्य रमन सोनी, सुरेश गोयल, राधे श्याम, अशोक गुप्ता, रमेश अग्रवाल आशा मित्तल, अनुराधा चौहान, अनुपमा गोयल, नीना सोनी, सरिता रानी, नीना गुप्ता,हेमन्त अग्रवाल, सरोज गुप्ता, कुमुद गुप्ता आदि का भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है।

# लोहिया पाड़ी व्यापार समिति द्वारा किया स्वागत

**अलवर(निसं.)।** संयोजक महेंद्र गोयल ने बताया कि लोहिया पाड़ी व्यापार समिति के संरक्षक दिनेश खंडेलवाल के नेतृत्व में अध्यक्ष भवानी शंकर के सहयोग से रेडीमेड एसोसिएशन के अध्यक्ष राजा कोरजानी, श्री अग्रवाल महासभा के नव निर्वाचित अध्यक्ष अतुल किशोर गुप्ता, कोषाध्यक्ष जगन्नाथ गोयल, मंत्री विजय कुमार अग्रवाल, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मेश कुमार सिंह, श्री महावर धर्मशाला अध्यक्ष सुरेश चंद्र गुप्ता का भव्य स्वागत किया गया।

# अत्यधिक एक समान पके हुए फलों के उपयोग में लेने से बचें

जयपुर टाइम्स

**अलवर(निसं.)।** आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण जयपुर के निर्देशानुसार प्रदेश भर में चलाए जा रहे फल एवं सब्जियों के एसिटिलीन गैस से पकाए जाने के एवं उनमें घातक रसायनों, रंग, वैक्स पॉलिश एवं आर्टिफिशियल स्वीटनर आदि की मिलावट के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत आज नई सब्जी मंडी परिसर, अग्रसेन चौराहा से 6 फल की प्रतिष्ठानों की जांच की गई जहां पर एथिलीन गैस से ही फलों का पकाया जाना पाया गया उनमें एसिटिलीन गैस का कोई उपयोग नहीं पाया गया इसी क्रम में सब्जी मंडी परिसर से आम, केला, चीकू, मोसमी, पपीता आदि फलों के 9 नमूने जांच हेतु लिए गए, सभी फल सब्जी विक्रेताओं, आढतियो थोक विक्रेता एवं खुदरा विक्रेताओं को बताया गया कि एफएसएसएआई से खाद्य पदार्थ विक्रय करने का पंजीयन अथवा लाइसेंस लेना अनिवार्य है अगर किसी फल या सब्जी विक्रेता के पास खाद्य लाइसेंस नहीं पाया जाएगा तो उनके विरुद्ध fssai के अनुसार नियमानुसार कार्रवाई की जावेगी, एफएसएसएआई द्वारा सभी उपभोक्ताओं से आग्रह किया जाता है कि वह केवल लाइसेंस धारी या विश्वसनीय विक्रेताओं से ही फल खरीदें एवं सभी फलों को उपयोग से पूर्व अच्छी तरह से धोकर काम में लेवे,अत्यधिक चमकदार छिलके वाले एवं अत्यधिक एक समान पके हुए फलों के उपयोग में लेने से बचे, ऐसे आम जिन्हें कैल्शियम कार्बाइड से कृत्रिम रूप से पकाया गया हो उनका उपयोग में लेने से बचें, केले जिन्हें रसायनों एवं कृत्रिम रूप से पकाने की आशंका हो उनका उपयोग करने से बचे, अंगूर एवं सेव जिन पर अत्यधिक वैक्स कोटिंग या कीटनाशक अवशेष मौजूद हो सकते हैं उनको अच्छी तरह से धोकर एवं साफ करके ही काम में लेवे, ऐसे फल सब्जी नहीं खरीदे जो की कटे फटे हो और उनमें कीड़े आदि से कोई नुकसान किया हुआ हो।

# वरिष्ठ नागरिकों के सशक्तिकरण हेतु जिला स्तरीय कार्यशाला का सफल आयोजन

जयपुर टाइम्स

**खैरथल-तिजारा(निसं.)।।** पी. एम. श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खैरथल में वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण एवं सशक्तिकरण के उद्देश्य से एक भव्य जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिलेभर से बड़ी संख्या में वरिष्ठ नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला का शुभारंभ जिला कलक्टर किशोर कुमार द्वारा दीप प्रज्वलन एवं वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान के साथ हुआ। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में बुजुर्गों की समाज में महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्हें प्रशासन की ओर से हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी रमेश दहमीवाल ने कार्यशाला के विभिन्न सत्रों की रूपरेखा प्रस्तुत की। आयुर्वेदिक विभाग के सहायक निदेशक डॉ. अजित बाल्यान ने योग की भूमिका पर व्याख्यान दिया, वहीं योगाचार्य जितेन्द्र कुमार ने उपस्थित बुजुर्गों को योगाभ्यास करवाया और मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने के उपाय बताए। जिला रसद विभाग की पूनम चौधरी ने पोषण से जुड़ी आवश्यक जानकारियाँ साझा कीं। समाज कल्याण अधिकारी गजराज यादव ने पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से विभागीय योजनाओं की जानकारी दी और माता-पिता भरण पोषण अधिनियम 2007 की विस्तारपूर्वक व्याख्या करते हुए वरिष्ठ नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। थानाधिकारी रामनिवास मीणा ने वरिष्ठ नागरिकों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार की रोकथाम हेतु पुलिस विभाग की भूमिका पर प्रकाश डाला। लीड बैंक अधिकारी आर.बी. चौधरी ने वित्तीय साक्षरता और डिजिटल बैंकिंग के विषय में मार्गदर्शन दिया, वहीं शिक्षा विभाग के राजेश यादव ने अंतर पीढ़ीगत संवाद को मजबूत बनाने और डिजिटल ज्ञान के विस्तार पर बल दिया।
जिला पेंशनर्स समाज के अध्यक्ष पोहप सिंह यादव ने वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं को साझा करते हुए समाधान हेतु सुझाव दिए। सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा ई-मित्र कियोस्क की दो विशेष व्यवस्थाएं की गईं, जिनके माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को त्वरित सेवाएं और सहायता उपलब्ध कराई गई। समापन सत्र में समाज कल्याण विभाग के जिलाधिकारी ने प्रतिभागियों से फीडबैक प्राप्त किया और उनके सुझावों को गंभीरता से लेने का आश्वासन दिया। अंत में जिला प्रशासन की ओर से सभी विभागों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा वरिष्ठ नागरिकों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर समाज कल्याण विभाग के अंकित महावर, सत्यनारायण, नीरज भडाना, विश्वेन्द्र, तिलकराज शर्मा, सौरभ सिंह, नवीन कुमार यादव, विक्रम सिंह गुर्जर, बलराम मीणा, बाबूलाल बुद्धा सहित अनेक विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

# 'ट्रस्ट का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है'

## जिला कलक्टर ने किया वी-शक्ति ट्रस्ट कार्यालय एवं प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन

जयपुर टाइम्स

**अलवर(निसं.)।** जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बुधवार को हसनखां मेवात नगर में वी-शक्ति ट्रस्ट के कार्यालय एवं प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस दौरान उन्होंने तुलसी पूजन कर तुलसी के पौधे का रोपण किया। वी-शक्ति ट्रस्ट की अध्यक्ष प्रज्ञा यादव ने बताया कि ट्रस्ट का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने कहा कि पहले महिलाएं केवल मिट्टी के बर्तन बनाने, सिलाई करने जैसे कार्य हाथ से करने तक ही सीमित थीं, वर्तमान समय में महिलाएं कंप्यूटर, अंग्रेजी शिक्षा और डिजिटल दुनिया में अपनी जगह बनाना चाहती हैं। वी-शक्ति ट्रस्ट उन्हें विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। उन्होंने बताया कि ट्रस्ट ने सेवानिवृत महिलाओं और पुरुषों के लिए एक 'गौशाला लाइब्रेरी' की भी स्थापना की गई है जहां वे अपने खाली समय में जाकर गीता और गोपाल के पाठ पढ़ सकते हैं। उन्होंने बताया कि बच्चों के लिए कंप्यूटर शिक्षा हेतु 'ई-गुरुकुल' और 'ई-लाइब्रेरी' की शुरुआत की गई है,जहाँ उन्हें डिजिटल ज्ञान प्रदान किया जा रहा है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए 'ज्ञान वाहन' संचालित किया जा रहा है जिसमें डिजिटल सुविधाओं से युक्त पुस्तकें मौजूद हैं जो बच्चों को तकनीकी रूप से सशक्त बना रही हैं। उन्होंने बताया कि वी-शक्ति ट्रस्ट द्वारा अलवर के विभिन्न क्षेत्रों में लघु मेलों का आयोजन किया गया था जिसमें महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्रशिक्षण, निशुल्क स्वास्थ्य जांच और विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन मेलों में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने अलवर सांसद खेल उत्सव की जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष आयोजित हुए कार्यक्रम में लगभग 13 हजार बच्चों ने हिस्सा लिया। उनमें से विजेता रहे 700 लड़के और लड़कियों के लिए 1 जून से समर कैंप आयोजित किया जा रहा है। इस कैंप में देशभर से श्रेष्ठ कोच प्रतिभागियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त इस शिविर में बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु विभिन्न गतिविधियाँ भी करवाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि वी-शक्ति ट्रस्ट महिलाओं को विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं और बालिकाओं को चिकित्सकों द्वारा माहवारी के बारे में जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि इस प्राकृतिक प्रक्रिया के दौरान महिलाओं को न तो घबराना चाहिए और न ही शर्म महसूस करनी चाहिए। इस दौरान राजीविका की डीपीएम रेखारानी व्यास सहित बडी संख्या में महिलाए एवं बालिकाएं मौजूद रही।

## राज्य के सभी जिलों में कल फिर होगा ब्लैक आउट एवं मॉक ड्रिल

### नागरिक सुरक्षा विभाग ने जिला मजिस्ट्रेटों को जारी किए दिशा निर्देश

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)** राज्य के नागरिक सुरक्षा विभाग ने सभी जिला कलेक्टर एवं मजिस्ट्रेट को ब्लैक आउट एवं मॉक ड्रिल के संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए हैं। निदेशालय, नागरिक सुरक्षा राजस्थान के निदेशक जगजीत सिंह मोंगा के द्वारा जारी दिशा-निर्देश के अनुसार गुरुवार शाम राज्य के सभी 41 जिलों में मॉक ड्रिल एवं ब्लैक आउट कराया जाना है। मोंगा ने बताया कि गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी पत्र के अनुसार पश्चिमी सीमा से लगे राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदशों के सभी जिलों में 29 मई को सिविल डिफेंस अभ्यास आयोजित किए जाने का निर्णय लिया गया है। इसी क्रम में राज्य के सभी 7 संभागों के 41 जिलों में द्वितीय सिविल डिफेंस अभ्यास ( ऑपरेशन शील्ड ) का आयोजन किया जाएगा।

## खरीफ फसलों की एमएसपी बढ़ने पर खाद्य मंत्री सुमित गोदारा ने जताया आभार, कहा- बीकानेर के किसानों को होगा सीधा लाभ

### मूंगफली की कीमत में 480 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी

जयपुर टाइम्स

**बीकानेर/जयपुर(निसं.)।** केंद्र सरकार द्वारा खरीफ विपणन सीजन 2025-26 के लिए 14 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि को लेकर राजस्थान के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और केंद्रीय मंत्रिमंडल का आभार जताया है। उन्होंने इस निर्णय को किसानों के लिए लाभकारी और संवेदनशील बताया है। गोदारा ने कहा कि इस बार राम तिल के **राजस्थान पत्रिका** में सर्वाधिक 820 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है, वहीं रागी में 596 रुपये, कपास में 589 रुपये, तिल में 579 रुपये और मूंगफली में 480 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की गई है। खासकर मूंगफली की एमएसपी अब बढ़ाकर 7263 रुपये प्रति क्विंटल कर दी गई है, जिससे बीकानेर जिले के किसानों को बड़ा लाभ मिलेगा। मंत्री गोदारा ने बताया कि बीकानेर जिले के लूणकरणसर क्षेत्र को राज्य का प्रमुख मूंगफली उत्पादक क्षेत्र माना जाता है। जिले में खरीफ का कुल क्षेत्रफल 16 लाख हैक्टेयर है, जिसमें से लगभग 3.25 से 3.50 लाख हैक्टेयर में मूंगफली की खेती होती है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार का यह निर्णय किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने और कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने की दिशा में अहम कदम है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और किसानों का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

## प्रसार कार्यकारिणी के चुनावों का परिणाम घोषित

### डॉ. हरिशंकर आचार्य अध्यक्ष, अभय सिंह महासचिव के पद पर हुए निर्विरोध निर्वाचित

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कास)।** पब्लिक रिलेशंस एंड एलाईड सर्विसेज एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (प्रसार) की कार्यकारिणी के चुनावों का परिणाम बुधवार को घोषित किया गया। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के कर्मियों के संगठन 'प्रसार' के अध्यक्ष पद पर डॉ. हरिशंकर आचार्य, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर अजय कुमार, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष पद पर धर्मेंद्र कुमार मीना, मुख्यालय उपाध्यक्ष पद पर चंद्रशेखर पारीक, महासचिव पद पर अभय सिंह और संयुक्त सचिव पद पर अंजलिका पंवार निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। पूर्ण पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ संपन्न हुई निर्वाचन प्रक्रिया के उपरांत, प्रसार चुनाव कार्यालय ने सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई दी और उन्हें संगठन के विकास एवं सुचारु संचालन में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। साथ ही सभी सदस्यों एवं पदाधिकारियों से अनुरोध किया गया कि वे मिलकर प्रसार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए काम करें।

## संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, पाली को किया एपीओ

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग मंत्री जोराराम कुमावत के निर्देश पर पशुपालन विभाग, पाली में सेवारत संयुक्त निदेशक डॉ. ओमप्रकाश बुनकर को एपीओ कर दिया गया है। पाली प्रवास के दौरान मंत्री ने संयुक्त निदेशक के गौशाला के संबंध अपने ही एक कर्मचारी के साथ हुई बहस का वीडियो वायरल होने की जानकारी मिलने पर इस मामले में संज्ञान लेते हुए कार्रवाई के निर्देश दिए। मंत्री के निर्देश पर पशुपालन विभाग की शासन उप सचिव संतोष करोल ने डॉ. ओमप्रकाश बुनकर को प्रशासनिक कारणों से आदेशों की प्रतीक्षा (एपीओ) में रखते हुए मुख्यालय निदेशालय पशुपालन, जयपुर भेज दिया है।

## नगर निगम ग्रेटर सतर्कता शाखा की टीम द्वारा की गई कार्यवाही

### 6 हजार 500 रुपये का किया कैरिंग चार्ज वसूल, 2 केन्टर सामान जब्त

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देशानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में बुधवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में वार्ड नं. 32, काँटा चौराहा, बोरिंग चौराहा, 31 नंबर बस स्टैण्ड 200 फीट रोड़, कालवाड़ रोड़, महेशपुरी वार्ड नं. 28 आदि स्थानों से अस्थाई अतिक्रमण को करने वालों के विरूद्ध 6 हजार 500 रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल कर 2 केन्टर सामान जब्त किया गया। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में वार्ड नं. 32, काँटा चौराहा, बोरिंग चौराहा, 31 नंबर बस स्टैण्ड 200 फीट रोड़, कालवाड़ रोड़, महेशपुरी वार्ड नं. 28 आदि स्थानों से अस्थाई अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्यवाही के दौरान 2 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया व अस्थाई अतिक्रमण करने वालों से मौके पर 6 हजार 500 रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल किया गया तथा दौरे के दौरान कार्यवाही सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाइश करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरूद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी।

### एसीबी में मामला दर्ज, आरोपियों को बचाने में प्रतिभा दिखा रहीं जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी

# एलडीसी भर्ती में जयपुर जिला परिषद में भ्रष्टाचार उजागर

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** भजनलाल सरकार राज्य में जवाबदेह, संवेदनशील और पारदर्शी शासन देने के लिए प्रयास कर रही है और इसके लिए अधिकारियों को जीरो टॉलरेंस पर कार्य करने के निर्देश दे रही है मगर कुछ भ्रष्ट अधिकारी मुख्यमंत्री की मंशा पर पानी फेर रहे हैं। जयपुर जिला परिषद एक तरह से भ्रष्टाचार का केंद्र बन गई है। इस जिला परिषद में अभी एक साल पहले भी एक कार्मिक की ओर से उसकी पत्नी को पिछले दरवाजे से नियुक्ति देकर एलडीसी बनाने का सनसनीखेज मामला सामने आया था जो अभी ठंडा भी नही पड़ा कि ऐसा ही एक और मामला सामने आया है। यह ताजा मामला जिला परिषद के कार्मिकों की ओर से एलडीसी भर्ती 2013 व तृतीय श्रेणी अध्यापक भर्ती 2013 की नियुक्तियों में हुए फर्जीवाड़े से जुड़ा हुआ है। इसके उजागर होने पर कई राज खुलने के कयास लगाए जा रहे हैं। इस मामले में एसीबी की ओर से सीईओ जिला परिषद जयपुर को पत्र जारी कर 8 कार्मिकों के खिलाफ 17- के अन्तर्गत विस्तृत जांच व अभियोजन की स्वीकृति मांगी गई है। मगर हैरतअंगेज तो यह है कि 90 दिवस के उपरांत भी सीईओ अधिकृत अधिकारी जिला परिषद जयपुर की ओर से एसीबी को स्वीकृति नहीं दी गई है जो काफी कुछ बयां कर रही है। तृतीय श्रेणी अध्यापक भर्ती 2013 में हुए फर्जीवाड़े यह खेल इस तरह है। सम्बन्धित भर्ती कार्मिकों की ओर से किये गए फर्जीवाड़े में विज्ञप्ति पदों से अधिक पदों पर नियम विरुद्ध बिना रिक्त पदों के नियुक्ति प्रदान की गई। आश्चर्य जनक तो यह है कि विभाग भी मान रहा कि 120 अधिक पदों पर आदेश जारी हो गए। जिला परिषद सीईओ ने भी 16 अधिक पदों पर बिना रिक्त पद पर नियुक्तियों देना रिकॉर्ड में स्वीकार किया है। वही नियम विरुद्ध नियुक्ति प्रदान कर भर्ती सम्बन्धित रिकोर्ड को प्लान के तहत गायब व खुर्द - बुर्द कर दिया है। जिला परिषद जयपुर के सीईओ /ACEO ने पत्रांक 1418, 27.02.2020 से भर्ती सम्बन्धित रिकार्ड गायब होने के सम्बन्ध में पंचायती राज विभाग के निदेशक व विशिष्ठ शासन सचिव को सूचित किया था।

विभाग ने सीईओ जिला परिषद जयपुर को पत्रांक 61, 04.03.2020 के जरिए 4 बिन्दुओं पर अविलंब कार्यवाही करते हुए की गई कार्यवाही की तथ्यात्मक रिपोर्ट मांगी थी।

जिला परिषद जयपुर के सीईओ /एसीईओ सहित सम्बन्धित अधिकारी व कार्मिकों की ओर से विभागीय पत्र संख्या 61, 04.03.2020 के बिंदु संख्या 2,3 व 4 पर आज तक कार्यवाही नही कर दोषी कार्मिकों को संरक्षण देने का आरोप भी शिकायत कर्ता ने लगाया है।

इस सम्बन्ध में विभाग ने सीईओ व एसीइओ को कार्यवाही करने के लिए बहुत संख्या में पत्र व अर्द्धशाकिय पत्र जारी करने सहित कारण बताओ नोटिस भी जारी किए लेकिन प्रकरण में जिला परिषद स्तर से कोई कार्यवाही नही कर प्रकरण को दबाने की कोशिश की गई हैं।

जब इस मामले में कोई कार्रवाई विभागीय स्तर पर नहीं की गई तो शिकायतकर्ता ने एसीबी में शिकायत की। इस प्रकरण की प्राथमिक जाँच में एसीबी ने गंभीर मामला माना और बड़े फर्जीवाड़े से सम्बन्धित दस्तावेज एसीबी को मिले तो एसीबी ने प्रार्थमिक जाँच में 8 कामिक व अधिकारीयों को दोषी मानकर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज करने सहित विस्तृत जाँच की स्वीकृति मांगी। शिकायत में कहा गया है कि भर्ती व विज्ञप्ति में बिना आवेदन के अभ्यर्थियों से मिलीभगत व गठजोड़ कर फर्जी तरीके से नियुक्ति प्रदान करना, बतौर उदाहरण सुनील दत्त जांगिड, जीतेन्द्र कुमार व प्रमोद कुमार सोनी ने भर्ती में आवेदन ही नही किया था। निर्धारित समय के 2-3 वर्ष उपरांत आवेदन कर फर्जी तरीके से भर्ती में शामिल हो गए और भर्ती सम्बन्धित एजेंसी जिसमें लगभग 20 कार्मिक भर्ती का काम कर रहे थी किसी ने यह फर्जीवाड़ा नही पकड़ा कैसे संभव हो सकता हैं। जांच उपरान्त तीनो कार्मिकों को राजकीय सेवा से बर्खास्त किया गया।

नीलम शर्मा व जगदीश शर्मा ने आवेदन के समय कोई बोनस अंक व इसके सम्बन्धित कोई प्रमाण पत्र प्रस्तुत नही किया लेकिन भर्ती लिपिक व अन्य सम्बन्धित कार्मिकों व अधिकारियों से मिलकर फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र के आधार पर एलडीसी बन गए। शिकायत पर जांच उपरांत राजकीय सेवा से दोनों को बर्खास्त किया गया।

भर्ती लिपिक नितेश टाटीवाल और भर्ती प्रभारी संदीप वर्मा ने मिलकर अंजली चन्द्रा जिसने कभी भर्ती की विज्ञप्ति में आवेदन ही नही किया, उसका फर्जी व कूटरचित आवेदन तैयार करते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय में दर्ज की याचिका 17700/2018 का फर्जी व झूठा हवाला देकर फर्जी नियुक्ति प्रदान की गई। जाँच में फर्जीवाडा सामने आने के बाद अंजली चंद्रा को राजकीय सेवा से बर्खास्त किया और उसके पति संदीप वर्मा जो सहप्रभारी अधिकारी भर्ती था, सहित भर्ती लिपिक नितेश टाटीवाल को निलंबित कर जाँच की गई, लेकिन इस क्रम में सीईओ जिला परिषद जयपुर की ओर से उक्त कार्मिकों को बचने और संरक्षण देने का पत्र संख्या राजकाज रेफरेंस 15490 14 , 22.05.25 को जारी कर भ्रष्ट कार्मिकों को बचाने की कोशिश की गई हैं। बता दे कि

अंजलि चंद्रा की फर्जी नियुक्ति सहित नीलम शर्मा और जगदीश शर्मा की फर्जी नियुक्ति में सम्पूर्ण जांच हो चुकी हैं। अब तक फर्जी तरीके से एलडीसी में भर्ती होने वाले 6 कार्मिक बर्खास्त हो चुके हैं और अध्यापक भर्ती 3-4 बार जाँच हो चुकी हैं। जाँच में दोषी कार्मिक को नामजद नोटिस व आरोप पत्र भी जारी हो चुके हैं, अब कोई जांच शेष नही हैं, अन्य कोई प्रकरण नही हैं यही प्रकरण एसीबी में दर्ज हैं और इनके संबंध में ही एसीबी स्वीकृति की मांग कर रही हैं, लेकिन सीईओ प्रतिभा संपूर्ण भर्ती की जाँच का हवाला देकर विभाग को भ्रमित व गुमराह कर रही हैं जो जांच में दोषी हैं उनके खिलाफ अब कोई कार्यवाही नही हो रही हैं। सीईओ की ओर से विभाग को गुमराह व भ्रमित कर प्रकरण में देरी व प्रकरण को कमजोर कर सरकार भ्रष्टाचार पर जीरों टॉलरेंस नीति की धज्जियां उड़ा रही है।

## संस्कारों की पुनर्स्थापना बनायेगी भारत को जगद्गुरु - देवनानी

### देवनानी ने लक्ष्मणगढ में सामूहिक उपनयन एवं यज्ञोपवीत में लिया भाग

### भारतीय ज्ञान प्रणाली में गुरू शिष्य परंपरा पर देवनानी ने दिया व्याख्यान

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ में आयोजित त्रिदिवसीय सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार (उपनयन) यज्ञानुष्ठान कार्यक्रम में भाग लिया। यह कार्यक्रम वैदिक परंपराओं के संरक्षण और युवा पीढ़ी में संस्कारों के संचार के उद्देश्य से आयोजित किया गया।देवनानी ने कहा कि हमारे देश की संस्कृति ही वह तत्व है जिसने हमारी सभ्यता को जीवन्त रखा है। मिस्र यूनान और रोम की सभ्यतायें मिट गई है। देश में मध्यकालीन तुर्क एवं मुगल आक्रमण एवं अंग्रेजो ने आधुनिक काल में हमारे संस्कारों एवं संस्कृति को मिटाकर सनातन सभ्यता को मिटाने का कुत्सित प्रयास किया, इसीलिए आज हमे अपने संस्कारों को पुनर्जागृत करने की आवश्यकता है। देवनानी ने ये विचार आचार्य नटवरलाल जोशी की स्मृति में सीकर जिले के लक्ष्मणगढ के आदर्श विद्यामंदिर में आयोजित त्रिदिवसीय सामूहिक उपनयन यज्ञोपवीत संस्कार तथा प्रशिक्षण कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में विचार व्यक्त किये। देवनानी ने भारतीय ज्ञान प्रणाली में गुरू शिष्य परम्परा एवं यज्ञोपवीत विषय पर व्याख्यान दिया तथा उपनयन एवं यज्ञोपवीत को सरल भाषा में समझाया। देवनानी ने इस बात पर जोर दिया कि परिवार हमारे समाज की प्रमुख इकाई है तथा परिवारों को संस्कारों की वैज्ञानिकता समझते हुए नई पीढ़ी में इनका बीजारोपण करना होगा। उन्होंने कहा कि शिष्य परम्परा का क्षरण हुआ है, किन्तु योग्य शिक्षकों, शिष्यों एवं श्रेष्ठ संस्थाएँ अभी समाप्त नहीं हुई है। देवनानी ने आचार्य नटवरलाल जोशी के सम्पूर्ण जीवन को संस्कृत-संस्कृति एवं समाज के लिए समर्पित बताते हुए लोगों से आग्रह किया कि राष्ट्रवाद और संस्कार एक दूसरे के पूरक है। समाज और परिवारजनों को जोशी द्वारा चलाये गये वैदिक उपक्रमों और संस्कारों को निरंतर आगे बढाना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय कुलगुरू अनिल राय ने की। कार्यक्रम में श्री हरीराम रणवा, महेश शर्मा सहित गणमान्य नागरिक मौजूद थे। प्रारंभ में आचार्य नटवर लाल जोशी स्मृति की ओर से अपूर्व जोशी ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि बताई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशीष जोशी ने किया। शशिकांत जोशी, हर्षनाथ सहरिया और बुद्धिप्रकाश व्यास ने अतिथियों का सम्मान किया। आचार्य महेन्द्र जोशी के सानिध्य में स्वस्तिवाचन किया गया। इस मौके पर आदर्श विद्या मंदिर के प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान भी किया गया।

## वीर सावरकर का क्रांतिकारी व्यक्तित्व और प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा आज भी करोड़ों युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत- देवनानी

**जयपुर(कासं.)।** राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने महान स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रवादी चिंतक, लेखक एवं समाज सुधारक वीर विनायक दामोदर सावरकर की जयंती के अवसर पर समस्त प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दी है। देवनानी ने कहा कि वीर सावरकर भारत माता के ऐसे सपूत थे, जिन्होंने जीवनपर्यंत देश की स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने हेतु संघर्ष किया। देवनानी ने कहा कि वीर सावरकर का क्रांतिकारी व्यक्तित्व और प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा आज भी करोड़ों युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनका असाधारण त्याग और आत्मबल भारत के स्वाधीनता संग्राम का एक अमिट अध्याय है। देवनानी ने कहा कि वीर सावरकर न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि उन्होंने समाज को जात-पात, भेदभाव और अंधविश्वास से मुक्त करने का भी प्रयास किया। उन्होंने 'एक मंदिर, एक भोजन, एक जल' जैसे सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त किया।

## विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने महाराणा प्रताप जयंती पर दी शुभकामनाएं

### महाराणा प्रताप का जीवन आने वाली पीढ़ियों को देशभक्ति, आत्मसम्मान और परिश्रम का मार्ग दिखाता रहेगा- देवनानी

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने महान राष्ट्रनायक और वीरता के प्रतीक महाराणा प्रताप की जयंती पर समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। देवनानी ने कहा कि महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के ऐसे युगपुरुष हैं जिन्होंने अपने मातृभूमि की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष किया और कभी भी अन्याय के सामने सिर नहीं झुकाया। उनका साहस, स्वाभिमान और बलिदान हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। देवनानी ने कहा कि महाराणा प्रताप का जीवन आने वाली पीढ़ियों को देशभक्ति, आत्मसम्मान और परिश्रम का मार्ग दिखाता रहेगा। उनकी स्मृति में हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि राष्ट्र के हित में सदैव समर्पित रहें। देवनानी ने प्रदेश वासियों से आह्वान किया कि हम सभी महाराणा प्रताप के जीवन मूल्यों को आत्मसात करें और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान दें। देवनानी ने कहा कि उन्होंने राजस्थान के स्कूलों के पाठ्यक्रम में बदलाव किए थे ताकि ये बदलाव राज्य और देश के गौरवपूर्ण इतिहास को उजागर कर सकें और विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना विकसित हो सकें। देवनानी ने कहा कि उन्होंने विद्यालय के पाठ्यक्रम में परिवर्तन करते हुए मुगल सम्राट अकबर को "महान" के रूप में प्रस्तुत करने की बजाय महाराणा प्रताप को "महान" के रूप में शामिल किया। इस बदलाव का उद्देश्य विद्यार्थियों को राजस्थान के गौरवपूर्ण इतिहास से जोड़ना और उनमें देशभक्ति की भावना विकसित करना था।

## जोयला में हनुमान जी मंदिर जीर्णोद्वार प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारी जोरो शोरो पर

### नगर में 30 व 31 मई दो दिवसीय होंगे अनेक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

**सुमेरपुर(निसं.)।** शिवगंज क्षेत्र के निकटवर्ती जोयला गांव में हनुमानजी मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की तैयारियां जोरों पर हैं जिसमें अनेकों प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। हनुमानजी मंदिर जीर्णोद्वार प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव नगर में 30 मई शुक्रवार से शुरू होगा जिसमें 31 मई शनिवार को संपन्न होगा। प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर मंदिर परिसर के साथ गांव को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा है और सभी तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही है। आयोजन के प्रथम दिन 30 मई शुक्रवार प्रातः 7.00 बजे गणपति पूजा अर्चना होगी तथा 8.00 बजे विशाल वरघोड़ा निकाला जाएगा। साथ ही हवन 12.30बजे होगा। साथ शाम 8.30 बजे भव्य भजन संध्या कार्यक्रम होगा जिसमें राजस्थान के जाने माने गायक कलाकार सीमाजी कपासन,मनीष कालंद्री,सुरेश गहलोत सहित कई अन्य कलाकार भाग लेंगे। दूसरे दिन 31 मई शनिवार 7.30 बजे गणपति दिशादेव स्थापना, मंदिर पर ध्वजा चढ़ाई जाएगी। पूजा अर्चना के बाद 11.30 बजे महाप्रसादी का आयोजन होगा। इस धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन साधु संतों एवं ठाकुर ईश्वर सिंह देवड़ा के शुभ सानिध्य में तथा समस्त ग्रामवासियों के तत्वाधान में आयोजित होगा। इस आयोजन को लेकर हनुमान सेवा समिति के सभी सदस्य ग्रामीण जन तैयारी में जुटे हुए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार हनुमान जी मंदिर जीर्णोद्वार प्राण प्रतिष्ठा दो दिवसीय महोत्सव में दानदाताओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया है और भाग लेने वाले सभी दानदाताओं की तरफ से शानदार अलग अलग व्यवस्था की जा रही है। राम प्रकाश शर्मा और जयप्रकाश शर्मा सहित भगत परिवार की ओर से कराई जा रही इस प्राण प्रतिष्ठा में तीन दिनों तक वैदिक रीति-रिवाजों से पूजा होगी।

### *ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर एसडीएम को सौंपा ज्ञापन*

# पातलीसर बड़ा से आडसर जाने वाले मुख्य रास्ते को 15 दिनों से रोका

### 125 खेतों सहित दो गांवों का रास्ता पड़ा है बंद

जयपुर टाइम्स

**सरदारशहर(निस)।** उपखंड क्षेत्र के गांव पातलीसर बड़ा से आडसर जाने वाले मुख्य रास्ते को भागीरथ जाट और भंवरलाल प्रजापत ने अपने खेत में कटानी रास्ते को रोक रखा हैं। जिसके कारण दो गांवों सहित 125 से अधिक खेतों का आवागमन बंद हो गया है। जिसको खुलवाने के लिए ग्रामीणों ने कई बार उनको समझाया लेकिन अभी तक उन्होने नहीं खोला है। ग्रामीणों ने कई बार तहसीलदार, नायब तहसीलदार, पटवारी सहित अन्य जिम्मेदार अधिकारियों को अवगत करवाने के बाद भी कोई सुनवाई नहीं हो पाई है। ऐसे में बुधवार को

सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण एकत्रित होकर सरदारशहर एसडीएम कार्यालय में विरोध प्रदर्शन करते हुए एसडीएम डॉ द्विव्या चौधरी को ज्ञापन देकर पुलिस जाप्ते के साथ कटानी रास्ते को खुलवाने की मांग की। गांव के प्रेमसिंह पूनियां ने बताया कि राजस्थान सरकार का रास्ता खोलो अभियान चल रहा है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण अभियान है। लेकिन पातलीसर बड़ा में यह फेल हो रहा है। इससे सरकार व प्रशासन की छवि खराब हो रही है। गांव के ग्रामीणों ने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर यह रास्ता दो दिनों में नहीं खोला गया तो बीकानेर सरदारशहर जाने वाली मुख्य सड़क पर जाम लगाकर विरोध किया जाएगा। उसके बाद मौके पर प्रशासन को आना तो होगा। लेकिन गांव के ग्रामीणों को परेशान किया जा रहा है। ग्रामीणों ने यह भी कहा कि गांव में किसी प्रकार की कोई पार्टी बाजी तक नहीं है। पूरा गांव एक तरफ है और यह दो व्यक्ति एक तरफ है। इसके बाद भी यह दोनों गांव के आगे भारी पड़ रहे है। एसडीएम डॉ दिव्या चौधरी ने बताया कि मैंने सरदारशहर तहसीलदार को पुलिस जाप्ता के साथ रास्ता खोलने के लिए बोला है। जल्द ही रास्ता खोल दिया जाएगा। इस मौके पर भगवानाराम, हड़मानराम पूनियां, तोलाराम सुथार, बीरबलराम भारी, लालचंद सारण, दशराथसिंह, उदराम, महावीर शर्मा, छोटूलाल प्रजापत, नथाराम, सांवतराम, भगवानाराम भारी, पूर्णाराम पूनियां, पालाराम, मामराज, समुंद्रसिंह, मनरूपसिंह, रमेश सांसी, शंकरलाल शर्मा सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित रहे।

# जेल सुधार का इंतजार

यों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी चाहते हैं कि इन सब मामलों का निपटारा जल्द से जल्द हो। लेकिन कोलेजियम की सिफारिशों के बाद भी सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालयों में पद खाली रहते हैं, तो इसके लिए कोई और नहीं, सरकार ही जिम्मेवार है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश टीएस ठाकुर तो जजों की कम संख्या को लेकर कई बार न्यायपालिका की तस्वीर भारत सरकार के सामने में रख चुके हैं। इसके बावजूद सुप्रीम कोर्ट, उच्च न्यायालयों व जिला अदालतों में जजों की कमी बरकरार है। विचाराधीन कैदियों की बढ़ती गई तादाद का जजों की संख्या कम होने से सीधा संबंध है। जजों के कम होने से लंबित मामलों की तादाद बढ़ती जाती है, और फलस्वरूप जेलों में विचाराधीन कैदियों की भीड़ भी। इसलिए न्यायिक सुधार के बगैर भारतीय जेलों की दशा नहीं सुधर सकती। व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह असल में एक मानवीय मसला है। विचाराधीन कैदियों में ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो बेगुनाह हों।

भारत दुनिया का एक ऐसा मुल्क है जहां जेलों में कैदी ठूंस-ठूंस कर रखे गए हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो द्वारा जारी ताजा आंकड़ों ने साबित कर दिया है कि यदि इस गंभीर मसले को निपटाने में केंद्र, राज्य सरकारों और न्यायपालिका ने रुचि नहीं दिखाई तो आने वाले दिनों में भारतीय जेलों में पांव रखने की भी जगह नहीं रहेगी। ब्यूरो के मुताबिक, भारत में कैदियों की संख्या 4,11,992 है, जिनमें विचाराधीन कैदियों की संख्या 2,78,508 है। इसका सीधा मतलब यह हुआ कि जेलों में बंद 67.6 फीसद लोगों के मामले अदालतों में विचाराधीन हैं। दूसरी गौरतलब बात यह है कि भारतीय जेलों में बंद विचाराधीन कैदियों की सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि देखें तो ऐसा स्पष्ट दिखता है कि दलित, आदिवासी और मुसलिम कैदियों का अनुपात कुल जनसंख्या में उनके अनुपात से कहीं ज्यादा है। ब्यूरो ने माना है कि पचपन फीसद विचाराधीन कैदी इन्हीं समुदायों से ताल्लुक रखते हैं। इस तरह जेलों की हालत आम प्रशासनिक सलूक से भिन्न नहीं है। तमाम सरकारी महकमे इन्हीं समुदायों के साथ सबसे ज्यादा बेरुखी से पेश आते हैं। यह अलग बात है कि इनके हितों की रक्षा के लिए कई विशेष प्रावधान किए गए हैं। दूसरी तरफ, रसूख वाले और दबंग कैदियों का हाल यह रहता है कि जेल में बंद होते हुए भी वे ऐशो-आराम की सारी सुविधाएं हासिल कर लेते हैं, कई तो अपनी आपराधिक गतिविधियां भी वहां से संचालित करते रहते हैं। समझा जा सकता है कि यह सब जेल प्रशासन की मिलीभगत और भ्रष्टाचार के बगैर संभव नहीं होता होगा।

यों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी चाहते हैं कि इन सब मामलों का निपटारा जल्द से जल्द हो। लेकिन कोलेजियम की सिफारिशों के बाद भी सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालयों में पद खाली रहते हैं, तो इसके लिए कोई और नहीं, सरकार ही जिम्मेवार है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश टीएस ठाकुर तो जजों की कम संख्या को लेकर कई बार न्यायपालिका की तस्वीर भारत सरकार के सामने में रख चुके हैं। इसके बावजूद सुप्रीम कोर्ट, उच्च न्यायालयों व जिला अदालतों में जजों की कमी बरकरार है। विचाराधीन कैदियों की बढ़ती गई तादाद का जजों की संख्या कम होने से सीधा संबंध है। जजों के कम होने से लंबित मामलों की तादाद बढ़ती जाती है, और फलस्वरूप जेलों में विचाराधीन कैदियों की भीड़ भी। इसलिए न्यायिक सुधार के बगैर भारतीय जेलों की दशा नहीं सुधर सकती। व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह असल में एक मानवीय मसला है। विचाराधीन कैदियों में ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो बेगुनाह हों। फिर, उनमें ऐसे लोग भी होते हैं जो अपने ऊपर लगे अभियोग की संभावित सजा से ज्यादा समय जेल में गुजार चुके होते हैं और मामले का निपटारा न होने के कारण जेल में सड़ते रहते हैं।

आजादी के बाद जेल सुधार की दिशा में कई समितियां बनाई गईं। इनमें मुख्य रूप से वर्ष 1983 में मुल्ला समिति, 1986 में कपूर समिति, 1987 में बनी अय्यर समिति थी। लेकिन इन सारी समितियों के

सुझावों को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। तंग कोठरी में कैदियों के रहने की व्यवस्था, दवा की कमी, शैक्षणिक सुविधाओं के अभाव से निजात दिलाने के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक तौर पर कई तरह की सेवाएं प्रदान करने की बात इन सिफारिशों में कही गई थी। इसके अतिरिक्त सजा-काल को स्वरोजगार की तैयारी से जोड़ने का सुझाव भी दिया गया था। मगर आज भी जेल सुधार की दिशा में कोई ठोस पहल शुरू न होना दर्शाता है कि हमारी राज्य-व्यवस्था में फिलहाल इसकी इच्छाशक्ति नहीं है।

इसके पहले के आंकड़ों पर नजर डालें तो स्थिति और भी भयावह दिखती है। वर्ष 2010 से वर्ष 2014 के बीच तीस फीसद विचाराधीन कैदी तीन साल से अधिक समय से जेल में बंद रहे। वर्ष 2014 में हर दस में से सात विचाराधीन कैदी थे। जबकि हर दस में से दो को बिना दोषी ठहराए दो वर्ष से अधिक समय जेल में बंद रखा गया। जम्मू कश्मीर में 57 फीसद, गोवा में 52 फीसद, गुजरात में 48 फीसद विचाराधीन कैदी पाए गए। सबसे ज्यादा 18345 मामले उत्तर प्रदेश में देखे गए।

विचाराधीन कैदियों को दोष सिद्ध होने तक निर्दोष माना जाता है। यह प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत भी है। लेकिन सच्चाई यह है कि जेल के अंदर उन्हें हिरासत के दौरान मनोवैज्ञानिक और शारीरिक यातनाएं झेलनी पड़ती हैं। बहुत सारे विचाराधीन कैदियों को कोई कानूनी सहायता नहीं मिल पाती। असल में जेल में रहते हुए उनके पास संसाधनों का अभाव रहता है। इतना ही नहीं, वकील से बात करने का मौका भी नहीं मिलता। ताजा आंकड़ों के मुताबिक जेलों में कैद पचहत्तर फीसद कैदी या तो अनपढ़ हैं या फिर अधिक से अधिक दसवीं कक्षा तक पढ़े हुए हैं। संविधान का अनुच्छेद 21 सभी नागरिकों को गरिमापूर्ण ढंग से जीने के अधिकार का भरोसा दिलाता है। इसी अनुच्छेद का हवाला देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 1980 में विचाराधीन मामलों की त्वरित सुनवाई के आदेश दिए थे। अधिकांश विचाराधीन कैदी गरीब और वंचित सामाजिक समूहों से आते हैं, जो काफी कम पढ़े लिखे होते हैं। इसलिए उनकी आवाज दबा दी जाती है। वर्ष 2005 में लागू दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 436-ए में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि कोई कैदी, उसके ऊपर लगाए गए अभियोग की अधिकतम संभावित सजा की आधी अवधि फैसले के इंतजार में जेल में गुजार चुका हो तो अदालत उसे निजी मुचलके या बिना किसी जमानत के ही रिहा कर सकती है।

ऐसी बात भी नहीं है कि केंद्र सरकार का ध्यान इस ओर नहीं आकृष्ट कराया गया। भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश आरसी लाहोटी ने 1,382 जेलों की अव्यवस्था को लेकर सुप्रीम कोर्ट को वर्ष 2013 में एक पत्र लिखा। उसके बाद जिलों में विचाराधीन कैदी समीक्षा समिति की स्थापना की गई और वर्ष 2015 से 31 जनवरी 2016 के बीच कम से कम छह हजार विचाराधीन कैदियों को रिहा भी किया गया। यहां इस बात का उल्लेख करना जरूरी है कि जितने कैदी रिहा किए गए वे भारतीय जेलों में बंद विचाराधीन कैदियों की कुल संख्या के महज दो फीसद थे। वर्ष 2013 में भी जेलों में हुए सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि जेल रिकार्ड में भारी विसंगतियां हैं। साथ ही, सूचना प्रणाली का प्रबंधन भी सही नहीं है।

इसके अतिरिक्त प्रभावी कानूनी सहायता की कमी, महिला पुलिस के अभाव, मार्गरक्षक पुलिस और वीडियो कॉन्फ्रेंस की भारी कमी के चलते भी कैदियों की संख्या में इजाफा होता है। भारत में जेलों की क्षमता से 112 फीसद ज्यादा कैदी वहां ठुंसे हुए हैं। कुल कैदियों में इक्कीस फीसद मुसलिम हैं। मुसलिम कैदियों की सर्वाधिक संख्या उत्तर प्रदेश की जेलों में है। उसके बाद बिहार, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल का नंबर आता है।

सम्पादकीय

## भारत की चुप्पी अब इतिहास बनेगी', पाकिस्तान को मोदी का आखिरी इशारा

एक बार फिर प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को स्पष्ट संदेश दिया है कि अगर वह आतंकवाद का रास्ता नहीं छोड़ेगा, तो उसे और बुरे नतीजे भुगतने पड़ सकते हैं। पहलगाम हमले के बाद भारतीय सेना ने जिस सूझबूझ और शौर्य के साथ पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को ध्वस्त किया, वह एक बड़ी मिसाल है। उसके बाद पाकिस्तान के हुक्मरान भी सोचने पर विवश हुए कि आतंकवाद को पोसने का इतना बड़ा खमियाजा देश को उठाना पड़ा है। मगर चूंकि वहां की सेना और खुफिया एजंसी आतंकवाद को भारत के खिलाफ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करती रही हैं, इसलिए वे अब भी अपने रास्ते में बदलाव को तैयार नहीं दिख रही हैं। प्रधानमंत्री ने इस बात को जोर देकर रेखांकित किया कि पाकिस्तान का एकमात्र मकसद भारत से नफरत करना और इसे नुकसान पहुंचाने के तरीके सोचना है, जबकि हमारे देश ने गरीबी खत्म करने और आर्थिक विकास का लक्ष्य रखा है। प्रधानमंत्री के इस बयान पर पाकिस्तान की तिलमिलाहट स्वाभाविक है। तुरंत इसके जवाब में उसने प्रतिक्रिया दी कि भारतीय प्रधानमंत्री के इस बयान से इस क्षेत्र में अशांति का खतरा पैदा हो गया है, जबकि पाकिस्तान अमन चाहता है।हालांकि इस तरह की विरोधाभासी प्रतिक्रियाएं वह सदा से देता आया है। आपरेशन सिंदूर के बाद भाजपा पूरे देश में तिरंगा यात्रा निकाल रही है। सरकार ने दुनिया के अलग-अलग देशों में पाकिस्तान की हकीकत बताने और अपना पक्ष रखने के लिए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजे हैं। इसी क्रम में प्रधानमंत्री ने भी गुजरात में दो दिन की रैली की। उसी दौरान उन्होंने पाकिस्तान को खरी-खरी सुनाई। सरकार ने बार-बार रेखांकित किया है कि आपरेशन सिंदूर फिलहाल स्थगित है, वह समाप्त नहीं हुआ है। यानी वह अब भी सक्रिय है और पाकिस्तान की हरकतों पर नजर बनाए हुए है। जाहिर है, इससे पाकिस्तान में घबराहट है। बेशक वह कहता है कि भारत के किसी भी हमले का जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार है, मगर हकीकत यही है कि जिस दौर से वह गुजर रहा है, फिलहाल वह किसी भी तरह के सैन्य संघर्ष का बोझ वहन कर पाने की स्थिति में नहीं है। अगर वह सचमुच भारत का मुकाबला कर सकने की स्थिति में होता तो, जैसा कि भारतीय विदेश मंत्रालय का कहना है, पाकिस्तान के सैन्य अधिकारी आपरेशन सिंदूर पर विराम लगाने की गुहार न लगाते। ऐसी स्थितियों में उसके नेता बेशक सार्वजनिक बयानों में भारत पर हमला करते रहे हों, पर जमीनी हकीकत हमेशा उससे दूर रही है। हकीकत यह है कि पाकिस्तान अपनी अंदरूनी स्थितियों से ही काफी परेशान है। उसकी माली हालत खस्ता हो चुकी है। कर्ज और इमदाद के भरोसे उसकी अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। बलूचिस्तान के विद्रोही उसकी नाक में दम किए हुए हैं। इधर भारत ने सिंधु जल समझौता और व्यापारिक गतिविधियां स्थगित करके और परेशानी पैदा कर दी है। ऊपर से भारत पूरी दुनिया में उसकी असलियत बताने में जुटा है। इस तरह पाकिस्तान पूरी अंतरराष्ट्रीय बिरादरी में लगातार अलग-थलग पड़ता गया है। ऐसे में उसके हुक्मरान को अपनी सेना और खुफिया एजंसी की भारत विरोधी आतंकी गतिविधियों पर रोक लगाने के रास्ते तलाशने ही होंगे। प्रधानमंत्री ने फिर से भारत का रुख स्पष्ट कर दिया है कि वह किसी भी रूप में आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा और इसके लिए पाकिस्तान को सबक सिखा कर रहेगा।

## बदलाव की परतें

एक ओर जहां वे सक्षम हैं, अपने पैरों पर खड़ी हैं और अपने परिवार और देश का नाम रोशन कर रही हैं, वहीं एक ऐसा तबका भी है, जहां औरतों को स्वतंत्रता के नाम पर केवल स्कूल तक ही जाने की अनुमति है। एक ओर उन्हीं स्कूलों में महिला शिक्षिका है और दूसरी ओर वहीं कुछ ऐसी भी बच्चियां हैं, जिन्हें सिर्फ एक निश्चित कक्षा तक पढ़ने की स्वतंत्रता मिली है। महिलाएं देश के लिए स्वर्ण पदक जीत रही हैं तो साथ ही देश के किसी कोने में ऐसी भी महिलाएं हैं, जिन्हें ऐसा सपना देखने तक का भी अधिकार नहीं है।

इसके पीछे जितना जिम्मेदार पुरुष है, उससे ज्यादा पुरुष वर्चस्व की मानसिकता इस घोषित-अघोषित नियंत्रण का कार्य करती है। पुरुष सक्षम महिलाओं की तारीफ कर आधुनिक बनते हैं, उन्हें दूसरी औरतों और बच्चियों के लिए आदर्श बताते हैं, वही अपने घर के महिलाओं और अपनी बच्चियों को इतना अधिकार हासिल नहीं करने देते कि वे अपने सपने का फैसला खुद कर सकें और सपने से जुड़े कार्य कर सके। दरअसल, जब से कुछ महिलाओं ने सारी बंदिशें तोड़ कर खुद को साबित किया है, तब से कथित महान पुरुष ज्ञानियों की चिंता बढ़ने लगी कि कहीं उनके ज्ञान पर संदेह उत्पन्न न हो। इसलिए नए सामाजिक नियम-कानून, धर्म और सदियों से चली आ रही परंपरा का नाम दे कर और बंदिशें लगाई गईं और कहा गया कि ये महिलाओं के भले के लिए हैं। सिंधु घाटी सभ्यता में हमें मातृ देवी या फिर मातृसत्तात्मक समाज होने के प्रमाण मिलते हैं। इससे यह पता चलता है कि मौजूदा दौर की भेदभाव की भावना सदैव नहीं थी। यह भेदभाव समय के साथ परिवर्तित स्थितियों के कारण हुई और यह भावना लोगों के दिमाग में बैठ गई। आज के जमाने में जहां महिलाएं अपने परिवार के साथ देश का भी नाम रोशन कर रही हैं।

वहीं समाज में बलात्कार, यौन उत्पीड़न और महिला उत्पीड़न के अन्य अपराध बढ़ते जा रहे हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की 2019 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में बलात्कार के 32,033 के मामले या औसतन 88 मामले प्रतिदिन दर्ज किए गए। महिलाओं के खिलाफ अन्य अपराधों की तस्वीर भी बेहद अफसोसनाक है। इससे यह पता चलता है कि समाज में चाहे जितना भी बदलाव आ जाए, स्त्रियां खुद में चाहे जितना भी बदलाव कर लें, पुरुष की संकीर्ण मानसिकता का कोई अंत नहीं।

## कहने का कौशल

फिर उन्हें मैंने एक कहानी सुनाई। कहानी क्या थी, बस इस पृथ्वी के निर्माण की बातें थीं। चांद था, धरती थी और कुछ संवाद थे। संवाद के साथ बोलने की शैली थी। सवाल फिर भी उठे। सवालों में यह भी शामिल था कि यह कहानी क्यों अच्छी लगी या क्या यह खराब लगी! इसका जवाब प्रतिभागियों ने दिय कि कहानी में जान डाल दी गई थी। भाव-भंगिमा, शब्दों के उतार-चढ़ाव, हाव-भाव सब कुछ थे। लेकिन हम शिक्षक हैं, कलाकार नहीं, इसलिए हमें यह शैली नहीं आती। इस पर मैंने कहा कि माना कि आप कलाकार या अभिनेता नहीं हैं

'पा कहानी पढ़ना और पढ़ाना दो भिन्न कौशल है। जो कथाकार है, संभव है वह कहानी शिक्षण की बारीकियों को शिक्षकों तक संप्रेषित न कर पाए। यह भी हो सकता है कि कहानी विधि को पढ़ाने वाला शिक्षण में तो बेहतर हो, लेकिन उसने कहानियां न लिखी हों। यह भी संयोग हो सकता है कि जो कहानी लिखते भी बेहतरीन हों और कक्षा में शिक्षकों को कहानी पढ़ाने के कौशल में भी प्रवीण हों। कक्षा में जब तीस-चालीस शिक्षक हों तो 'बाल कहानियां कैसे पढ़ाई जाएं' विषय पर सिद्धांत रूप में और कहानी के तत्त्वों पर पूरे दिन बातें की जा सकती हैं। लेकिन एक चुनौती यह है कि इसे सुन कर प्रतिभागी सोने न लगें। ऐसा ही एक तजुर्बा पिछले दिनों हुआ। प्राथमिक कक्षा के लगभग तीस शिक्षक कक्ष में उपस्थित थे। भाषा, भाषा शिक्षण आदि पर चर्चा हो चुकी थी। कहानी पर सीधे बातें करने की बजाय मैंने उन्हें एक दरी पर गोलाकार बैठाया। उन्हें कहा गया कि कोई ऐसी कहानी सुनाएं, जो बच्चों को सुनाई जा सके। सबने कोशिश की कि बेहतर कहानी सुनाई जा सके। कहानी सुनाने के बाद वहां मौजूद दूसरों से पूछा जाता कि क्या आपको कहानी अच्छी लगी? अगर हां तो क्यों और नहीं तो क्यों? इन सवालों पर बोलने वाले खुल कर बोलते- 'इसमें मजा नहीं आयाज कहानी में संवाद नहीं थाज रुचि नहीं पैदा हो रही हैज कहानी में हाव-भाव नहीं थाज बच्चों के परिवेश के अनुकूल नहीं थी आदि।' फिर उन्हें मैंने एक कहानी सुनाई। कहानी क्या थी, बस इस पृथ्वी के निर्माण की बातें थीं। चांद था, धरती थी और कुछ संवाद थे। संवाद के साथ बोलने की शैली थी। सवाल फिर भी उठे। सवालों में यह भी शामिल था कि यह कहानी क्यों अच्छी लगी या क्या यह खराब लगी! इसका जवाब प्रतिभागियों ने दिय कि कहानी में जान डाल दी गई थी। भाव-भंगिमा, शब्दों के उतार-चढ़ाव, हाव-भाव सब कुछ थे। लेकिन हम शिक्षक हैं, कलाकार नहीं, इसलिए हमें यह शैली नहीं आती। इस पर मैंने कहा कि माना कि आप कलाकार या अभिनेता नहीं हैं, लेकिन अभ्यास करने से इस कौशल को सीख सकते हैं। कुछ लोग सहमत हुए तो कुछ ने सहमति में सिर हिला दिया। लेकिन सच यही है कि कलाकार भी अभ्यास के माध्यम से अपनी कला और दक्षता को मांजता है। अगर शिक्षक कहानी कहने की कला को सीखना और मांजना चाहता है तो अभ्यास वह रास्ता है, जिसके जरिए वह कहानी कहने और कहानी शिक्षण में प्रवेश कर सकता है। सवाल है कि कहानी से अपेक्षा क्या है? बच्चों को कहानी क्यों सुनाई जाए? कहानी सुनाने और कहानी लिखने के प्रति बच्चों को कैसे प्रेरित करें? इस पर हम संवाद के जरिए आगे बढ़ते रहे। प्राथमिक कक्षाओं में शामिल विभिन्न कहानियों के हवाले से यह समझने की कोशिश की जा रही थी कि एक बाल कहानी में किन मुख्य तत्त्वों को शामिल किया जाना चाहिए। कहानी है तो उसमें कोई पात्र होगा। जैसे ईदगाह में दादी, हामिद, बाजार में दुकानदार हैं आदि। जब पात्र होंगे तो वे कुछ बोलेंगे भी। कहन है तो हर पात्र अपनी प्रकृति के अनुरूप ही बोलेगा, वैसे ही बर्ताव करेगा। इसलिए कहानी में संवाद होना जरूरी है। संवाद को कहने की शैली भी महत्त्वपूर्ण है। किस अंदाज में कहना है, यह कहने वाले पर निर्भर करता है कि कहानी के पात्र के साथ न्याय कर पा रहा है या नहीं। कहानी के पात्र आकाश से नहीं आएंगे, बल्कि इसी समाज और परिवेश से आएंगे। ठीक वैसे ही जैसे हमारे आसपास भिन्न तरह के परिवेशीय पात्र होते हैं। हर पात्र अपने साथ परिवेश लाता है। कहानी कब की है, कहां की है, कौन-कौन इस कहानी में शामिल है। कहानी के पात्रों के परिवेश के मुताबिक संवाद और संवाद की अदायगी की शैली बदल जाती है। कहानी में पात्र आ गए। पात्रों के साथ संवाद भी आया। संवाद के साथ परिवेश भी कहानी में आ गई। परिवेश के अनुसार भाषा और शब्दों का चुनाव भी आ चुका। अब कहानी को कहने के लिए जिन कौशलों की आवश्यकता पड़ती है, वह है कहने की शैली। इसलिए हमने कहानी की शैलियां बताने के बजाय प्रतिभागियों में कहानी के खंडों को बांट दिया, जिसमें संवाद भी थे। उन कहानियों को पढ़ना और बोलना था। कैसे भाव के साथ बोलें और पढ़ें, इसकी समझ मजबूत करनी थी। इसलिए कहानी का वाचन और पठन कराया गया।

# 'हेरा फेरी 3' कॉन्ट्रोवर्सी पर बोले डायरेक्टर प्रियदर्शन

परेश रावल के फिल्म 'हेरा फेरी 3' छोड़ने की खबर ने फैंस और फिल्म इंडस्ट्री को चौंका दिया है। फिल्म के डायरेक्टर प्रियदर्शन ने अब इस पूरे मामले पर चुप्पी तोड़ते हुए अमर उजाला से एक्सक्लूसिव बातचीत की। उन्होंने कहा कि परेश ने यह फैसला करने से पहले उन्हें कोई जानकारी नहीं दी थी। वो खुद इस स्थिति से हैरान और निराश हैं।

## आज तक परेश ने इस बारे में बात नहीं की

बातचीत में प्रियदर्शन ने कहा, फिल्म शुरू होने से पहले मैंने तीनों – अक्षय, सुनील और परेश – से क्लियर पूछा था कि क्या आप लोग तैयार हैं? सबने कहा – हां। फिर हमने एक दिन शूट भी किया। सब स्मूद चला। लेकिन अचानक परेश जी के हटने की खबर आई... बिना कुछ बोले, बिना कोई कारण बताए। आज तक उन्होंने मुझसे इस बारे में कोई बात ही नहीं की।'

## 'भूत बंगला' के सेट पर कोई तनाव नहीं दिखा

डायरेक्टर ने आगे बताया, ना कोई कॉल, ना कोई मैसेज। हाल ही में हमने 'भूत बंगला' की शूटिंग पूरी की। इस फिल्म में भी अक्षय और परेश दोनों साथ थे। वहां भी सब कुछ नॉर्मल था। दोनों के बीच बिल्कुल कॉर्डियल और प्रोफेशनल रिश्ता था। कोई तनाव नजर नहीं आया।

वहीं जब हमने प्रियदर्शन से पूछा कि क्या वाकई अक्षय कुमार ने परेश रावल पर 25 करोड़ का दावा ठोका है, तो उन्होंने कहा, इस फिल्म के राइट्स और प्रोडक्शन अक्षय कुमार संभाल रहे थे। ऐसे में अगर किसी को नुकसान हुआ है तो वो सिर्फ अक्षय हैं। अगर परेश जी को कोई दिक्कत थी तो कम से कम बात करते। खैर, मैं सिर्फ डायरेक्टर हूं। मुझे नहीं पता उनके और अक्षय के बीच क्या हुआ? ना उन्होंने कुछ बताया, ना ही कोई बातचीत की। मैं पूरी तरह ब्लैंक हूं।'

# प्रियंका चोपड़ा से दीपिका पादुकोण तक, फिल्मों के लिए तगड़ी फीस लेती हैं ये अभिनेत्रियां

हाल ही में खबर आई कि दीपिका पादुकोण की एंट्री प्रभास अभिनीत फिल्म स्पिरिट में हो गई है। इस फिल्म के लिए अभिनेत्री ने मोटी फीस चार्ज की है। रिपोर्ट्स के मुताबिक उन्होंने करीब 20 करोड़ रुपये लिए हैं। इस रकम के साथ वे बॉलीवुड की सर्वाधिक फीस लेने वाली अभिनेत्रियों के लिस्ट में शामिल हो गई हैं। फिल्मों के लिए तगड़ी फीस लेने वाली अभिनेत्रियों के बारे में जानते हैं...

## प्रियंका चोपड़ा

भारत में सर्वाधिक फीस लेने वाली अभिनेत्रियों के लिस्ट में देसी गर्ल प्रियंका चोपड़ा सबसे ऊपर हैं। हालांकि, पिछले छह वर्ष से उनकी कोई भारतीय फिल्म रिलीज नहीं हुई है। अब वे एस एस राजामौली की फिल्म में नजर आएंगी। इसमें वे महेश बाबू के साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आएंगी। बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के मुताबिक प्रियंका चोपड़ा ने इस साउथ फिल्म के लिए करीब 30 करोड़ रुपये फीस चार्ज की है। भारतीय सिनेमा में यह किसी अभिनेत्री के लिए सबसे ज्यादा फीस हो सकती है, लेकिन हॉलीवुड में वे इससे भी ज्यादा फीस चार्ज करती हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक सिटाडेल सीरीज के लिए उन्होंने करीब 41 करोड़ रुपये फीस ली।

## कैटरीना कैफ

कैटरीना कैफ बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस में शामिल हैं। फीस के मामले में भी वह हाइएस्ट पेड अदाकाराओं में शामिल हैं। वे विज्ञापनों के लिए करीब छह से सात करोड़ रुपये फीस चार्ज करती हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कैटरीना प्रति फिल्म करीब 10-12 करोड़ रुपये प्रति फीस लेती हैं।

## आलिया भट्ट

आलिया भट्ट का नाम भी लिस्ट में शामिल है। कपूर परिवार की बहू बन चुकी आलिया प्रति फिल्म करीब 10 से 15 करोड़ रुपये फीस चार्ज कती हैं।

## करीना

इंडस्ट्री के प्रतिष्ठित कपूर परिवार की करीना कपूर बॉलीवुड की पावरहाउस स्टार हैं। शादी और मां बनने के बाद भी करियर को किस कदर आगे बढ़ाया जा सकता है, करीना ने इसका उदाहरण सेट किया है। फीस की बात करें तो मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वे प्रति फिल्म करीब 8-18 करोड़ रुपये फीस लेती हैं।

## श्रद्धा कपूर

बीते वर्ष फिल्म स्त्री 2 से बॉक्स ऑफिस की गद्दी पर राज करने वाली अभिनेत्री श्रद्धा कपूर की भी अपनी चमक है। वह फिल्मों के लिए 7-15 करोड़ रुपये फीस लेती हैं। इसके अलावा विज्ञापनों के लिए भी वह अच्छी-खासी रकम चार्ज करती हैं।

# करिश्मा तन्ना को नहीं मिल रहा ढंग का काम

करिश्मा तन्ना को आखिरी बार अमेजन प्राइम के शो कॉल मी बे में देखा गया था। इसमें एक्ट्रेस गेस्ट अपीयरेंस में नजर आई थीं। करिश्मा फुल फ्लेज रोल में दो साल पहले हंसल मेहता की क्राइम सीरीज स्कूप में दिखी थीं। इसमें उन्होंने एक क्राइम जर्नलिस्ट की भूमिका निभाई थी। लंबे समय से स्क्रीन से गायब रहने पर एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू में बात की है। वह कहती हैं, मेरे पास वास्तव में इसका कोई जवाब नहीं है। लंबे समय के बाद, मेरे पास एक प्लेटफॉर्म और अभिनय-आधारित स्क्रिप्ट थी। स्कूप चुनौतीपूर्ण था। ऐसा नहीं है कि शो के बाद मैं बहुत ज्यादा चूजी हो गई हूं। मुझे पता है कि अगर सही स्क्रिप्ट लिखी जाए तो डायरेक्टर उसे और भी ऊंचे स्तर पर ले जा सकता है। मैं बस इस तरह के काम का इंतजार कर रही हूं।

करिश्मा आगे कहती हैं, मुझे अच्छे ऑफर मिले लेकिन किसी कारण से मेरे पास जो आया, उसके लिए मैं हां नहीं कहना चाहती। मैं किरदार आधारित भूमिकाओं की उम्मीद कर रही थी, क्योंकि मैंने दिखा दिया था कि मैं क्या करने में सक्षम हूं। इंटरव्यू के दौरान एक्ट्रेस ने स्वीकार किया कि खुद की रिलेवेंसी बनाए रखने के लिए वो ऐसी प्रोजेक्ट साइन करने के बहुत करीब पहुंच गई हैं, जो बेहद निराशजनक थे। वह कहती हैं, मैं ऐसी स्क्रिप्ट की उम्मीद करती हूं, जिसके साथ मैं न्याय कर सकूं।

# प्रभास की फिल्म छोड़ दीपिका ने थामा अल्लू अर्जुन का दामन

हीरोइन नंबर वन दीपिका पादुकोण की निर्देशक संदीप रेड्डी वांगा से खटक गई है। वह अब उनकी फिल्म 'स्पिरिट' में शायद ही काम करें क्योंकि दीपिका के अब एक दिन में सिर्फ आठ घंटे ही काम करने के नए नियम से संदीप खुश नहीं थे। 'स्पिरिट' की डेट्स दीपिका ने फिल्म 'जवान' के अपने निर्देशक एटली की झोली में डाल दी हैं, जो जल्द ही अभिनेता अल्लू अर्जुन के साथ एक मेगा बजट फिल्म करने जा रही हैं।

फिल्म 'एनिमल' के बाद इसके निर्देशक संदीप रेड्डी वंगा अब तक दूसरी फिल्म शुरू नहीं कर पाए हैं। लोगों को इसकी सीक्वल 'एनिमल पार्क' का बेसब्री से इंतजार है लेकिन उससे पहले संदीप का वादा प्रभास के साथ फिल्म 'स्पिरिट' पूरी करने का है। इस फिल्म की शूटिंग बीते साल ही शुरू हो जानी थी, लेकिन दीपिका के मां बनने की खबरें आने के बाद संदीप ने इस फिल्म की शूटिंग आगे के लिए टाल दी। अब दीपिका के मां बनने के बाद जो पहली फिल्म शुरू होनी थी, उसमें सबसे पहले 'स्पिरिट' का ही नंबर था। फिल्म के निर्माता इस फिल्म के लिए दीपिका को 20 करोड़ रुपये देने की बात भी मांग गए थे, लेकिन चूंकि संदीप रेड्डी वंगा का काम करने का स्टाइल अलग है तो दीपिका पहले से ही कुछ बातें लिखित में चाह रही थीं। जानकारी के मुताबिक दीपिका ने एक दिन में सिर्फ आठ घंटे ही काम करने की शर्त रखी और ये भी कि वह तेलुगु में अपनी डबिंग नहीं करेंगी।

# भारतीय सेना के 'ऑपरेशन खुकरी' पर फिल्म बनाएंगे रणदीप हुड्डा

बॉलीवुड अभिनेता रणदीप हुड्डा एक बार फिर बड़े पर्दे पर एक जबरदस्त किरदार में नजर आने वाले हैं। जाट जैसी सुपरहिट फिल्म की सफलता के बाद अब रणदीप अपनी अगली फिल्म में भारतीय सेना के सबसे साहसिक मिशन्स में से एक को जीवंत करने जा रहे हैं। एक्टर की आने वाली फिल्म का नाम है 'ऑपरेशन खुकरी', जो कि एक रियल लाइफ वॉर ड्रामा है।

## क्या है फिल्म का सब्जेक्ट?

यह फिल्म साल 2000 में सिएरा लियोन यानी पश्चिमी अफ्रीका के एक देश में हुए एक वास्तविक सैन्य अभियान पर आधारित है, जहां भारतीय सेना के 233 जवानों को विद्रोही बलों ने बंधक बना लिया था। यह मिशन भारतीय सेना द्वारा अब तक किए गए सबसे खतरनाक और साहसिक अभियानों में से एक माना जाता है। फिल्म में रणदीप हुड्डा मेजर जनरल राज पाल पुनिया की भूमिका निभाएंगे, जो उस वक्त 14वीं मैकेनाइज्ड इन्फेंट्री के कंपनी कमांडर थे और इस मिशन की अगुवाई कर रहे थे।

## प्रोजेक्ट पर क्या बोले रणदीप?

रणदीप हुड्डा ने इस प्रोजेक्ट के बारे में बात करते हुए कहा कि यह कहानी सिर्फ हथियारों और युद्ध की नहीं, बल्कि वीरता, बलिदान और भाइचारे की है। उन्होंने कहा, 'यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं ऐसे योद्धा की भूमिका निभा रहा हूं, जिसने 75 दिन तक दुश्मन के बीच फंसे जवानों को न सिर्फ जिंदा निकाला बल्कि भारत के सैन्य इतिहास में एक सुनहरा अध्याय जोड़ दिया।

## 'ऑपरेशन खुकरी' की कहानी

'ऑपरेशन खुकरी' की कहानी एक बेस्टसेलर किताब पर आधारित है, जिसे पेंग्विन रैंडम हाउस इंडिया ने प्रकाशित किया है। इस किताब के फिल्मी अधिकार अब ऑफिशियली राहुल मित्रा फिल्म्स और रणदीप हुड्डा फिल्म्स ने हासिल कर लिए हैं। फिल्म की स्क्रिप्ट पर काम जोरों पर है और इसे बड़े पैमाने पर शूट किया जाएगा। फिल्म की टीम का मानना है कि 'ऑपरेशन खुकरी' न सिर्फ एक थ्रिलिंग एक्शन फिल्म होगी, बल्कि यह भारतीय सेना की वीरगाथा को दुनियाभर के दर्शकों तक पहुंचाने का एक जरिया बनेगी।

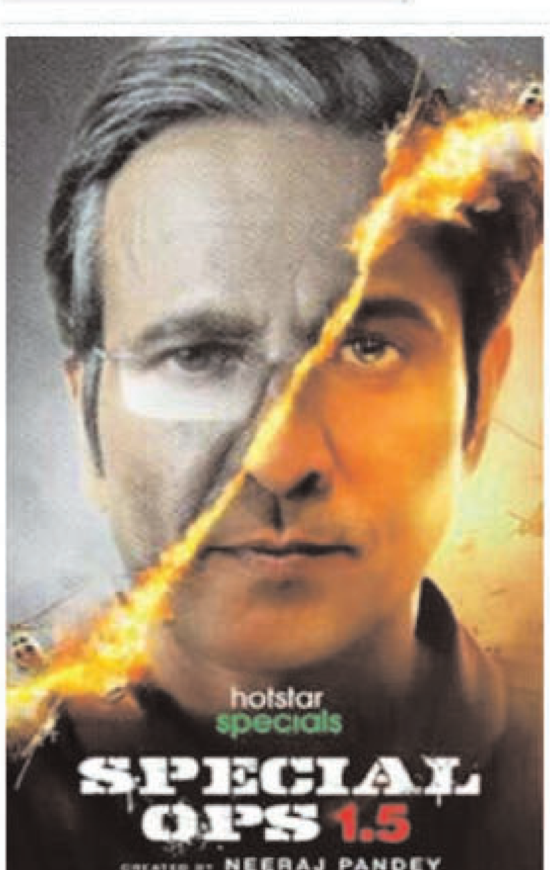


# 'स्पेशल ऑप्स 2' ही नहीं कई और सीरीज में दिखीं स्पाई स्टोरीज

**हाल ही में केके मेनन स्टारर वेब सीरीज 'स्पेशल ऑप्स 2' का टीजर रिलीज हुआ, जल्द ही यह वेब सीरीज दर्शकों को देखने को मिलेगी। इस स्पाई सीरीज के पहले सीजन को दर्शकों ने काफी सराहा था। इस सीरीज के अलावा भी स्पाई यानी जासूसों पर आधारित सीरीज बनी हैं। जानिए, ऐसी ही कुछ चर्चित सीरीज के बारे में।**

क्राइम के अलावा जासूसी कहानियों पर बेस्ड सीरीज भी दर्शकों को काफी पसंद आती हैं। कई सीरीज की पॉपुलैरिटी इतनी बढ़ जाती है कि इसके कई सीजन आते हैं। जल्द ही 'स्पेशल ऑप्स' के दूसरे सीजन का भी प्रीमियर होने वाला है।

## द नाइट मैनेजर

साल 2023 में 'द नाइट मैनेजर' नाम की एक वेब सीरीज रिलीज हुई। इसमें अनिल कपूर ने नेगेटिव रोल किया था और जासूस के रोल में आदित्य रॉय कपूर नजर आए। सीरियल में आदित्य रॉय कपूर एक पूर्व नौ सेना के ऑफिसर बने हैं, जो एक मिशन के लिए जासूस बनते हैं और विलेन के बुरे इरादों को नाकाम करते हैं। इस सीरीज को संदीप मोदी ने क्रिएट किया था।

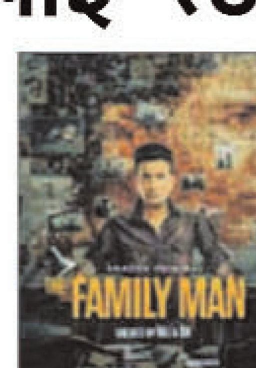


## फैमिली मैन

राज एंड डीके की पॉपुलर वेब सीरीज 'फैमिली मैन' में मनोज वाजपेयी ने लीड रोल किया है। इस सीरीज के कई सीजन आ चुके हैं, पहला सीजन 2019 में आया था। इस सीरीज की कहानी में एक मिडिल क्लास आदमी का रोल मनोज वाजपेयी ने निभाया है। वह दुनिया की नजर में एक आम इंसान है लेकिन असल में वह राष्ट्रीय जांच एजेंसी के एक स्पेशल सेल में काम करता है। वह एक सीक्रेट एजेंट है, जो देश को आतंकवादियों से बचाने की कोशिश करता है। अपने काम के साथ-साथ उसे अपने परिवार का ध्यान भी रखना है साथ ही उनसे अपनी सीक्रेट एजेंट की पहचान भी छुपानी है।

## बार्ड ऑफ ब्लड

साल 2019 में वेब सीरीज 'बार्ड ऑफ ब्लड' में इमरान हाशमी ने लीड रोल किया था। सीरीज में वह एक पूर्व रॉ एजेंट बने थे। जिसे फिर से एक मिशन पर जाना होता है। इस स्पाई सीरीज को रिभु दासगुप्ता ने निर्देशित किया था।

## मुखबिर

इस सीरीज को शिवम नायर और जयप्रद देसाई ने डायरेक्ट किया था। यह सीरीज एक नॉवेल 'मिशन टू पाकिस्तान' पर आधारित थी। स्पाई जॉनर वाली इस सीरीज में जैन खान दुर्रानी, प्रकाश राज, आदिल हुसैन, बरखा बिष्ट जैसे कलाकार नजर आए थे।

## द फ्रीलांसर

वेब सीरीज 'द फ्रीलांसर(2023)' में मोहित रैना ने लीड रोल निभाया था। इस सीरीज को भाव धूलिया ने निर्देशित किया। सीरीज की कहानी अविनाश नाम के एक एक्स पुलिस ऑफिसर की है, जो अब एक मिलिट्री फ्रीलांसर है। उसे सीरीया में जाकर आईएसआईएस की कैद से अपने दोस्त की बेटी को छुड़ाना है।

# तनावमुक्त रहना है तो रोज करें वृक्षासन

**वृक्षासन यानी पेड़ के समान। यह आसन करने से मनुष्य की आकृति पेड़ के समान हो जाती है। यही कारण है कि इसे वृक्षासन कहते हैं।**

इस आसन से न सिर्फ शारीरिक रूप से हमें लाभ पहुंचाता है वरन इसके करने से हमें मानसिक सुकून भी मिलता है। जहां एक ओर वृक्षासन से हमारे शरीर के विभिन्न अंग विशेषों को लाभ पहुंचता है, वहीं दूसरी मानसिक तनाव को भी यह आसन दूर रखता है। कहने का मतलब यह कि मानसिक सुकून चाहिए तो वृक्षासन कीजिए। इसके बारे में विस्तार से जानिए।

## इस आसन के लाभ

वृक्षासन के असंख्य लाभ है बशर्ते इसे नियमानुसार किया जाए। साथ ही इसकी सावधानियां भी बरती जाएं। योग विशेषज्ञों की मानें तो वृक्षासन सुबह उठकर किया जाए तो इसका हमें फायदा पहुंचता है। इसके नियमित करने से

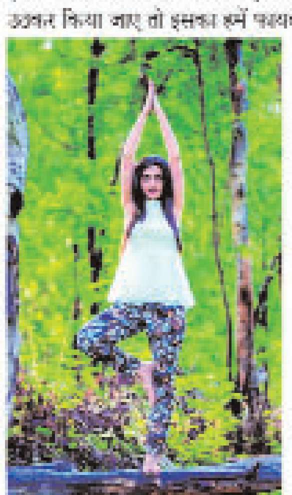

बेडौल शरीर सुडौल बनता है। जिन्हें घुटने के दर्द की शिकायत है, वृक्षासन करने से उन्हें घुटनों के दर्द से मुक्ति मिलती है। यह आसन उन लोगों के लिए खासकर लाभकर है जिन्हें चलने का काम ज्यादा करना पड़ता है। मसलन यदि आप सेल्स पर्सन है या किसी कूरिअर कंपनी में काम करते हैं तो इस आसन को अवश्य करें। इसकी एक वजह यह है कि वृक्षासन हमारे पैरों को मजबूती प्रदान करता है।

इतने में ही वृक्षासन की खूबी खत्म नहीं होती। नियमित वृक्षासन करने से हमारी एकाग्र क्षमता बढ़ती है। एकाग्र क्षमता जो कि हमारे याददाश्त की बेहतर होने की निशानी है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि मौजूदा दौर में बेहतर करिअर, बेहतर सम्बंध आदि के लिए बेहतर याददाश्त कितनी जरूरी है। यह आसन सिर्फ पुरुष करें, ऐसा जरूरी नहीं है। इस आसन में घर की महिलाएं और बच्चों को भी भाग लेना चाहिए।

वृक्षासन पैरों को मजबूत तो बनाता ही है। साथ ही यह स्नायुमण्डल का विकास कर पैरों को स्थिरता प्रदान करता है। यह कमर और कूल्हों के आसपास जमी अतिरिक्त चर्बी को हटाता है। मतलब यह है कि अगर आपका वजन ज्यादा है यानी आप मोटे हैं तो यह आसन आपको विशेष रूप से लाभ पहुंचा सकता है। चर्बी घटाने के बाद यह आसन शरीर को कमजोर नहीं करता वरन मजबूती देता है। अगर आप अपनी बढ़ती तोंद से परेशान हैं तो इस आसन को अवश्य करें।

## कैसे करें यह आसन

सावधान मुद्रा में खड़े हो जाएं। अब दोनों पैरों के बीच कुछ दूरी बनाकर खड़े रहें। फिर हाथों को सिर के ऊपर उठाते हुए सीधा कर हथेलियों को मिला दें।

अब दाहिने पैर को मोड़ते हुए उसके तलवे को बाईं जांघ पर टिका दें। बाएं पैर पर संतुलन बनाते हुए हथेलियां, सिर और कंधे एक ही सीध में हों। जब तक सम्भव हो ऐसे रहें। कुछ देर बाद अन्य पैर से भी यह दोहराएं।

## बरतें सावधानी

हमेशा यह ध्यान रखें कि आसन करने से पहले किसी विशेषज्ञ की राय अवश्य लें। यदि आप स्वयं वृक्षासन कर रहें हैं तो आपको अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ सकती है। इसकी एक वजह यह है कि अगर आप वृक्षासन सही से नहीं करेंगे तो हो सकता है कि आसन को साकारात्मक असर की बजाय नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकते हैं। इसे नियम, समय और सही तरीके का हमेशा ख्याल रखें। यूं तो वृक्षासन सबके लिए हितकर है। लेकिन यह जानना आवश्यक है कि वृक्षासन से किन लोगों को दूरी बनाए रखनी चाहिए। अगर आपको नींद से सम्बंधित कोई शिकायत है या अनिद्रा का रोग है तो इस आसन को न करें। सिरदर्द भी इसे न करने की एक ठोस वजह है। नियमित सिरदर्द की शिकायत वालों को यह आसन तनावमुक्त करने की बजाय तनाव से भर देगा। ब्लड प्रेशर के मरीजों को भी वृक्षासन नहीं करना चाहिए।

## एंटीबायोटिक दवाएं खो रहीं अपना असर

बीमारी से जल्द ठीक होने के लिए लोग एंटीबायोटिक्स दवाओं का इस्तेमाल धड़ल्ले से करते हैं। लेकिन अब एंटीबायोटिक दवाओं के असर को लेकर सवाल उठने लगे हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि आज के समय में एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस एक नई समस्या के रूप में उभर रहा है। एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस वह स्थिति है जिसमें कोई बैक्टीरिया एंटीबायोटिक दवा के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता पैदा कर लेता है।

## मोटापा कमजोर कर सकता है बच्चों की हड्डियां

एक नए अध्ययन से पता चला है कि मोटापा बच्चों की मांसपेशियों के साथ ही हड्डियों को भी कमजोर करता है। अध्ययन के अनुसार, मोटापे से जुड़ा एक्स्ट्रा फैट मांसपेशियों में जमा हो जाता है और यही फैट बच्चों की हड्डियों की कम वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। इन स्थितियों से निपटने के लिए बच्चों को उचित आहार और शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से एक स्वस्थ जीवन शैली की ओर प्रेरित करना चाहिए।

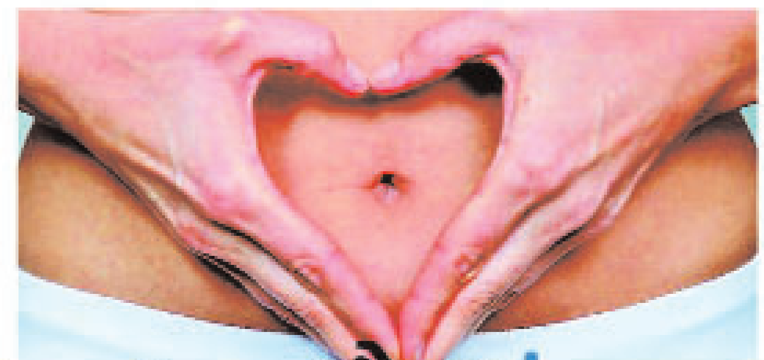

# बढ़ रहा है बांझपन

आजकल बदलती जीवनशैली ने जहां जीवन का स्तर बदला है, वहीं बहुत सी समस्याओं को भी जन्म दिया है। ऐसी ही समस्याओं की सूची में से एक है इन्फर्टिलिटी। हालांकि इन्फर्टिलिटी जैसी समस्या पर लोगों का ध्यान भी अधिक समय बाद जाता है जिससे कि यह समस्या और जटिल हो जाती है। खान-पान, नौकरियों और रहन सहन में आये बदलाव ने जहां जीवन का स्तर बदला है, वहीं कहीं ना कहीं हमारी समस्याएं भी बढ़ाई हैं।

## शारीरिक समस्याओं का सामना

मीडिया, काल सेंटर जैसी नौकरियों में समय की कोई बाध्यता ना होने के कारण व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समय से ना सोने और जागने से अनिद्रा, डिप्रेशन जैसी समस्याएं होना बहुत ही आम है। इन्हीं समस्याओं की सूची में से एक है 'इन्फर्टिलिटी'। हालांकि इन्फर्टिलिटी जैसी समस्या पर लोगों का ध्यान भी अधिक समय बाद जाता है जिससे कि यह समस्या और जटिल हो जाती है।

शहरी वातावरण में बढ़ते प्रदूषण और टॉक्सिन ने 45 से 48 प्रतिशत इन्फर्टिलिटी के मामले बढ़ा दिए हैं। जीवनशैली में बदलाव और खानपान की गलत आदतें भी अप्रत्यक्ष रूप से इन्फर्टिलिटी की जिम्मेदार हैं। पेस्टिसाइड और प्लास्टिक का खानपान के दौरान हमारी फूड चेन में आना हार्मोन के स्तर को प्रभावित करता है। यूनिवर्सिटी आफ नार्थ कैरोलिना, चैपल हिल के शोधकर्ताओं ने यह पता लगाया है कि वो महिलाएं जो नाइट शिफ्ट में काम करती हैं उनमें समय से पहले प्रसव की सम्भावना रहती है। बढ़ती इन्फर्टिलिटी के कुछ प्रमुख कारण हैं

## अधिक उम्र में विवाह

आज तरक्की और सफलता की चाह में पुरुष और महिला कम उम्र में विवाह नहीं करना चाहते। विवाह के अधिक उम्र में होने पर बच्चे के बारे में सोचने में भी उन्हें समय लग जाता है। महिलाएं भी आज ज्यादा आत्मनिर्भर होने लगी हैं और वो कम उम्र में बच्चा नहीं चाहतीं। अधिक उम्र में विवाह होने से स्त्रियों में ओवम की क्वालिटी प्रभावित होती है और इन्हीं कारणों से उनमें इन्फर्टिलिटी की सम्भावना भी बढ़ जाती है। दूसरे कारण जो आजकल अधिकांश स्त्रियों में पाये जा रहे हैं वो हैं फाइब्रायड का बनना, एन्डोमैट्रियम से सम्बन्धी समस्याएं। उम्र के बढ़ने के कारण हाइपरटेंशन जैसी दूसरी समस्याएं भी आ जाती हैं और इनके कारण महिलाओं में फर्टिलिटी प्रभावित होती है।

## काम का दबाव

काम के दबाव के कारण व्यायाम का समय निकालना हर किसी के लिए बहुत मुश्किल होता है। काल सेन्टर और मीडिया की नौकरी में समय की बाध्यता ना होने के कारण काम का दबाव और प्रतियोगिता भी दिनों दिन बढ़ती जा रही है। इन कारणों से पूरी नींद ना ले पाना भी बहुत से लोगों में आम है। हेड आफ गायनाकालाजिस्ट डिपार्टमेंट मिसेज दिनेश बन्सल का कहना है कि आज हमारे जीवन में रिक्रेअशन से ज्यादा जरूरी हो गयी है हमारी तरक्की और इसी कारण से हमारा ध्यान घर से ज्यादा आफिस के कामों में लगा रहता है। अधिक समय तक काम करने के बाद आफिस से थककर घर आने के बाद अधिकतर कपल्स में सेक्स की इच्छा में भी कमी हो जाती है।

### धूम्रपान , कोकीन और स्टेरायड का इस्तेमाल

धूम्रपान , कोकीन और स्टेरायड के इस्तेमाल से सीमेन की गुणवत्ता खराब हो जाती है। धूम्रपान से स्पर्म की गिनती और गतिशीलता कम होती है और यह होने वाले बच्चे में आनुवांशिक तौर पर बदलाव भी कर सकता है। इसी प्रकार से अल्कोहल भी टेस्टोस्टेरोन के उत्पादन को कम करता है। किसी प्रकार की दवाओं या ड्रग्स के गलत तरीके से इस्तेमाल के कारण भी इन्फर्टिलिटी हो सकती है। स्टेरायड जैसे हार्मोन हमारे शरीर के हार्मोन के स्तर में बदलाव लाते हैं जो कि हमारे स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकते हैं। बीमारी होने पर भी चिकित्सक की सलाहनुसार ही दवाएं लेनी चाहिए। हम यह सकते हैं कि विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है और बहुत सी बीमारियों के उपचार भी ढूंढ निकाले हैं लेकिन इन्फर्टिलिटी जैसी समस्या से निदान पाना कई स्थितियों में बहुत मुश्किल हो जाता है और कभी कभी नामुमकिन। इन्फर्टिलिटी के बहुत से कारक हो सकते हैं, लेकिन ऐसी समस्या पर समय पर ध्यान देकर आप मातृत्व और पैतृत्व का सुख उठा सकते हैं अधिक उम्र में विवाह होने पर चिकित्सक का परामर्श लें। अगर आप विवाह के तुरंत बाद बच्चा नहीं चाहते, तो भी चिकित्सक से सम्पर्क करें।

- शराब, सिगरेट, कोकीन जैसे मादक पदार्थों से दूर रहें।
- अस्वस्थ सेक्सुअल आदतों से बचें।
- स्वस्थ आहार लें और आफिस के बाद सैर पर जाएं या प्रतिदिन व्यायाम के लिए कुछ समय जरूर निकालें।

## स्वास्थ्य समस्याएं

हाइपरटेंशन और हाई ब्लड प्रेशर जैसी समस्याएं जिन्हें कि बुजुर्गों की बीमारी माना जाता था। आज यह युवाओं में भी बहुत आम हो गयी हैं और इनका प्रभाव व्यक्ति की सेक्सुअल लाइफ पर भी पड़ता है। हेड आफ गायनाकालाजिस्ट डिपार्टमेंट मिसेज दिनेश बन्सल जीवनशैली में बदलाव को इन्फर्टिलिटी का कारक मानती हैं। डायबिटीज, पी सी ओ डी (पालीसिस्टमिक ओवेरियन डिजीज) के कारण महिलाओं में बहुत सी बीमारियां आम हो गयी हैं। 60 से 70 प्रतिशत महिलाओं में ओव्युलेशन की क्रिया ही नहीं होती।

वज़न का बढ़ना और व्यायाम की कमी के कारण भी सही मात्रा में हार्मोन नहीं बन पाते। बचपन से ही लोगों में कंप्यूटर और लैपटाप पर बैठना आम है और यह कारण भी कहीं ना कहीं इन्फर्टिलिटी के जिम्मेदार होते हैं।

# क्या है सर्दियों में जोड़ों के दर्द का तोड़

जोड़ों का दर्द यानी ज्वाइंट पेन की समस्या आजकल आम होती जा रही है। इस समस्या से परेशान लोगों की मुश्किलें सर्दी के मौसम में और भी बढ़ जाती हैं। पढ़ें ऐसे लोगों के लिए क्या-क्या सावधानियां जरूरी हैं।

अनुमन देखा गया है कि सर्दियों में जोड़ों में दर्द की समस्या बढ़ जाती है। विशेषज्ञों का मानना है कि जो लोग पहले से ही इस समस्या से गुजर रहे होते हैं या कहें कि आर्थराइटिस या गठिया के मरीजों में अक्सर ठंड के मौसम में यह समस्या बढ़ जाती है। ठंड के मौसम में हमारी रक्त नलियां संकुचित हो जाती हैं, इसलिए जोड़ों का दर्द बढ़ा हुआ जान पड़ता है।

हालांकि इससे कोई नई समस्या पैदा नहीं होती। जिन लोगों में ऐसी कोई समस्या पहले से ही होती है, लेकिन वे इसकी जांच नहीं कराते और इसे दरकिनार करते रहते हैं, उन्हें ठंड के मौसम में ज्यादा परेशानी होने लगती है। इसके अलावा इस मौसम में अधिक उम्र के लोगों, खासकर जिन्होंने पहले घुटने का रिप्लेसमेंट करवाया हो, को जानकारी के अभाव में इस दर्द से दो-चार होना पड़ता है।

## ऐसे पहचानें

अगर रोजमर्रा के काम करने में परेशानी हो रही हो, 10 से 15 मिनट चलने के बाद दर्द शुरू हो जाता हो, घुटनों के आसपास सूजन आ रही है तो समझ लें कि जोड़ों की समस्या है। तुरंत डॉक्टरी सलाह लें।

## क्या हैं कारण

आज की तनाव भरी जीवनशैली, सूरज की किरणें न मिल पाना, खाने-पीने में कैल्शियम की प्रचुर मात्रा न होना, नियमित रूप से व्यायाम न करना और शरीर को आवश्यक विटामिन डी-3 उपलब्ध न करा पाना आदि सामान्यतः जोड़ों में दर्द की समस्या का सबसे बड़ा कारण हैं। हालांकि कई बार यूरिन की परेशानी भी इसका कारण हो सकती है। महिलाओं में हारमोनल डिस्बेलेंस, मासिक धर्म, मेनोपॉज और तनाव इसका बड़ा कारण माने जाते हैं।

## जांच है आसान

एक्सरे, एमआरआई और रक्त की जांच से इसके वास्तविक कारणों का पता लगाया जा सकता है।

### क्या करें

- जोड़ों को खुली हवा से बचा कर रखें। गर्म या ऊनी कपड़े पहने रहें।
- नियमित रूप से व्यायाम करना न भूलें। व्यायाम से शरीर में रक्त का संचार व्यवस्थित होता है, जिससे शरीर का तापमान संतुलित रखने में मदद मिलती है।
- खाने में कैल्शियम, प्रोटीन्स और मिनरल्स प्रचुर मात्रा में शामिल करें।

### समस्या को पहचानें

ज्वाइंट पेन का मतलब आर्थराइटिस नहीं होता। 35 साल की उम्र के बाद जोड़ों की समस्या होना सामान्य है। नी-पेन मांसपेशियों के कमजोर होने की वजह से भी हो सकता है।

### क्या करें

- दर्द बढ़ता जा रहा हो तो फौरन ऑर्थोपेडिक्स की सलाह लें। हालांकि फिजियोथेरेपिस्ट भी एक्सरे और एमआरआई देख कर दर्द का कारण समझ लेते हैं।
- यदि गठिया की समस्या नजर आती है तो वही विशेषज्ञ उसका सही इलाज करते हैं। फिजियोथेरेपिस्ट से सही तरह से व्यायाम करने की जानकारी लेना जरूरी हो जाता है।
- फिजियोथेरेपिस्ट व्यायाम के जरिए आपकी मांसपेशियों की स्टिफनेस को दूर करते हैं और कमजोर हो रही मांसपेशियों को व्यायाम के जरिए मजबूत बनाए रखते हैं

# हल्की सर्दी में काम के हैं पोंचू...

किसी जमाने में दादी-नानी के हाथों में क्रोशिया की सिलाई देखी जाती थी और घरों में क्रोशिया से बुने हुए तकिए के कवर, रुमाल, शो पीस और अन्य सामान आसानी से देखे जाते थे। बदलते वक्त और भागदौड़ की व्यस्त जिंदगी में घरों और बाजारों में क्रोशिया की बुनी हुई चीजें गायब होती चली गईं। बाजार में अब क्रोशिया से बने वेस्टर्न और इंडियन आउटफिट का बोलबाला शुरू हुआ है, जिसमें फैशन डिजाइनर नए-नए फ्यूजन के साथ कपड़ों को तैयार कर रहे हैं। इन्हें पहनने से आप आकर्षक तो लगते ही है, साथ ही फैशन में एक नयापन भी आया है। आज हम आपके सामने क्रोशिया , सिल्क, वूलन आदि से बने पोंचू लेकर आए है जिन्हें आप सर्दीयों के मौसम में भी पहन सकती हैं। दिन की नरम धूप हो या शाम की हल्की सर्दी, ऐसे समय में आपको सेफ रखते हैं पोंचू। इन्हें आप किसी भी ड्रेस के ऊपर पहन सकते हैं। आपकी सिंपल ड्रेस भी पोंचू से खूबसूरत बन जाती है। चलिए आज आप को बताते हैं पोंचू के भी कई वैराइटीज हैं जिसको लेकर आप एक्सपेरिमेंट कर सकती हैं।

## क्रोशिया से बने पोंचू

क्रोशिया से बने पोंचू को गर्मी और सर्दी दोनो मौसम में पहना जा सकता है। गर्मियों में धागे से बने पोंचू और सर्दियों में ऊनी पोंचू पहने जाते हैं। इसे गर्मियों में बोरिंग ड्रेस को ग्लैमरस लुक देने और धूप से बचने के पहना जाता है।

## निटेड पोंचू

जहां क्रोशे पोंचू गर्मियों के लिए उचित हैं वहीं निटेड पोंचू आपको ठंड से सुरक्षा देते हैं। ये अपको ट्रेंडी और वार्म लुक देते हैं।

## एम्ब्रॉयडेड पोंचू

ये ट्रेडिशनल पोंचू हैं जो कई वैरायटी और पैटर्न व स्टाइल में मिलते हैं। ये बहुत एलेगेंट फैब्रिक में आते हैं।

## वूलन फैब्रिक पोंचू

वूलन फैब्रिक पोंचू सर्दियों से बचाव के लिए हैं। इन्हें ऊन से बुना नहीं जाता बल्कि वार्म वूलन फैब्रिक से बनाया जाता है। इनकी गर्माहट इनके फैब्रिक पर डिपेंड करती है। हुडेड और टर्टलनेक पोंचू जिद हुड जैसे ज्यादातर पोंचू बच्चों के लिए बनाए जाते हैं।

## सिल्क पोंचू

सिल्क पोंचू वजन में हल्के होते हैं जिन्हें आप बतौर एक्सेसरी पहन सकते हैं जो आपके पहनावे को नया लुक देते है।

## रेसिपी

### पालक मेथी ना मुठीया

**सामग्री**

2 कप बारीक कटी हुई पालक, 1 1/2 कप बारीक कटी हुई मेथी, नमक स्वादअनुसार, 2 टी-स्पून अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, 2 टेबल-स्पून गेहूं का आटा, 4 टेबल-स्पून बेसन, 1 टेबल-स्पून सूजी, 1/2 टी-स्पून जीरा, 2 चुटकी बेकिंग सोडा, 1/2 टी-स्पून शक्कर, 2 1/4 टी-स्पून तेल, 1 टी-स्पून सरसों, 1 टी-स्पून तिल, 1/4 टी-स्पून हींग

**विधि**

पालक, मेथी और थोड़े नमक को एक प्लेट में डालकर अच्छी तरह मिला लें और लगभग 5 मिनट के लिए एक तरफ रख दें। सारा पानी नीचोड़कर पालक और मेथी को एक बाउल में रख दें। अदरक हरी मिर्च का पेस्ट, गेहूं का आटा, बेसन, सूजी, जीरा, बेकिंग सोडा, शक्कर, नमक और 1 टी-स्पून तेल डालकर, बहुत ही नरम आटा गूथ लें। अपने हाथों में 1/4 टी-स्पून तेल लगाकर आटे को 4 बराबर भाग में बांट लें। प्रत्येक भाग को लगभग 150 मिमी के लंबे और 25 मिमी व्यास के गोल आकार में रोल कर लें। रोल्स को तेल से चुपड़ी छन्नी में रखकर, स्टीमर में 20 25 मिनट के लिए स्टीम कर लें। निकालकर हल्का ठंडा कर ले और 12 मिमी के स्लाइस में काटकर एक तरफ रख दें। तड़के के लिए, एक गहरे पैन में बचे हुए 1 टी-स्पून तेल को गरम करें और सरसों और तिल डालें। जब बीज चटकने लगे, हींग डालकर 15 सेकन्ड के लिए भुन लें। स्लाईस्ड मुठीया डालकर हल्के हाथों मिला लें और धिमी आंच पर 2 से 3 मिनट के लिए या हल्का सुनहरा होने तक भून लें। हरी चटनी के साथ गरमा गरम परोसें।

### पोहा ढोकला

**सामग्री**

1/2 कप जाड़ा पोहा, 1/2 कप सूजी, 1 कप दही, 1 टी-स्पून हरी मिर्च की पेस्ट, नमक , स्वाद अनुसार, 1 टी-स्पून फ्रूट सॉल्ट, 1 टेबल-स्पून तेल, 1/2 टी-स्पून सरसों, एक चुटकी हिंग, सजाने के लिए, 1 टेबल-स्पून बारीक कटा हुआ धनिया, परोसने के लिए, ग्रीन चटनी

**विधि**

दही और 1 कप पानी को गहरे बाउल में डालकर अच्छे से मिलाइए। अब उसमें सूजी, जाड़ा पोहा, हरी मिर्च की पेस्ट और नमक डालकर अच्छे से मिलाइए और 10 मिनट के लिए एक तरफ रख दिजिए। ढोकला बनाने से पहले, मिश्रण पर फ्रूट सॉल्ट और 2 टी-स्पून पानी उपर से डालिए। जब बुलबुले आना शुरू हो, तब मिश्रण को धीरे से मिलाइए। अब 175 mm व्यास की चुपड़ी हुई थाली में मिश्रण डालकर उसे एकसमान फैलाइए। अब स्टिमर में 10 से 12 मिनट या ढोकला पकने तक स्टिम करें और एक तरफ रख दीजिए। एक छोटा पैन में तेल गरम करें और उसमें सरसों डालें। जब सरसों चटखने लगे, तब उसमें हिंग डालिए। मध्यम आंच पर कुछ सेकंड भूनिए और इस तड़के को ढोकले के उपर फैलाइए। थोड़ा ठंडा होने के लिए एक तरफ रखिए और चौकोर आकार में समान काटकर उपरसे धनिया डालकर सजाइए।

# तनाव घटाने के लिए लोग करते है कुछ ऐसा

आप तनाव महसूस कर रहे हैं। तो आप क्या करना चाहेंगे। जाहिर तौर पर म्यूजिक सुनना चाहेंगे या चहलकदमी करना चाहेंगे। पर दक्षिण कोरिया में आजकल लोग तनाव को भगाने के लिए मरने के बाद की लाइफ में जाना चाहते हैं। और ऐसा महसूस कराने के लिए बाकायदा कंपनियां भी हैं, जो ये काम कर रही हैं। जी हां, दक्षिण कोरिया में लोग 10 मिनट ताबूत में रहते हैं। मरने के बाद की जिंदगी को लेकर धर्मगुरुओं से ज्ञान भी लेते हैं। ताकि वो तनाव को भगा सकें। हैरानी की बात है कि ऐसा करने वाले बाद में कहते हैं कि उन्हें ऐसा करके अच्छा लगा। चांग योंग वो(67) नाम की महिला ने कहा कि 10 मिनिट मरने के बाद की जिंदगी बिताकर मुझमें नया उत्साह आ गया है। ऐसा लगता है कि मुझे नई जिंदगी मिली है। और मैं नई शुरुआत कर सकती हूं। कोरिया में तनाव घटाने के लिए लोग करते हैं मरने के बाद की जिंदगी का अहसास! सोचिए, आप तनाव महसूस कर रहे हैं। तो आप क्या करना चाहेंगे। जाहिर तौर पर म्यूजिक सुनना चाहेंगे या चहलकदमी करना चाहेंगे। उन्होंने कहा कि मेरी मां मुझसे बहुत प्यार करती थी, वो कम उम्र में ही चली गई। वो बहुत खूबसूरत थी। दक्षिण कोरिया में मॉक फ्यूनरल मतलब मरने के बाद के अंतिम संस्कार का अभ्यास अब नया ट्रेंड बनता जा रहा है। ऐसा कराने के लिए तमाम कंपनियां भी मैदान में उतर चुकी हैं। और अब ये बड़ा बिजनेस बन चुका है।

## जिले में सिलिकोसिस बीमारी के नाम पर हुआ बड़ा फर्जीवाड़ा, CMHO ने कोतवाली थाना पर मामला कराया दर्ज

जयपुर टाइम्स

**धौलपुर(निसं.)।** जिले सिलिकोसिस बीमारी के नाम पर बड़ा फर्जीवाड़ा सामने आया है। जिला क्षय निवारण केंद्र के कर्मचारियों ने 109 लोगों को सिलिकोसिस से पीड़ित बताकर प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। सीएमएचओ डॉ. धर्म सिंह मीणा को जब इस मामले की जानकारी मिली, तो उन्होंने जांच शुरू की। जांच में पता चला कि जनवरी से मार्च 2025 के बीच रोजाना 25 से 35 मरीज सिलिकोसिस के आ रहे थे। यह संख्या सामान्य से कहीं अधिक थी, क्योंकि पहले केवल 2-5 मरीज ही आते थे। जांच में एक और चौंकाने वाला तथ्य सामने आया। 106 मरीजों के एक्सरे के ओपीडी नंबर तो धौलपुर अस्पताल के थे, लेकिन एक्सरे बाहर से कराए गए थे। रेडियोग्राफर से ओपीडी नंबर लिए जा रहे थे और मरीजों की अन्य जांचें भी दूसरी जगहों से की जा रही थीं। इस घोटाले की जानकारी जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक को दी गई है। स्वास्थ्य विभाग को भी रिपोर्ट भेजी गई है। ष्टस्नाह्र मीणा ने बुधवार को दोपहर 12 बजे बताया कि फर्जी प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाले 106 लोगों के खिलाफ कोतवाली पुलिस थाने में मामला दर्ज कराया गया है। विभाग अब इस मामले की गहन जांच कर रहा है।

## अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों को किराए पर रहकर अध्ययन पर दिए जाएंगे 2 हजार रुपये प्रतिमाह

जयपुर टाइम्स

**धौलपुर(निसं.)।** अम्बेडकर डीबीटी योजनान्तर्गत राजकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों को स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर राजकीय महाविद्यालयों में घर से दूर किराए पर कमरा लेकर अध्ययनरत छात्रों को 2 हजार रुपये प्रतिमाह दिए जाएगें। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी ने बताया कि राजकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र जिला मुख्यालय पर संचालित समस्त स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के राजकीय महाविद्यालयों के केवल शैक्षणिक पाठ्यक्रम कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय में अध्ययनरत केवल बालक छात्र जिनकी पारिवारिक वार्षिक आय 2.50 लाख रुपये तक हो और वह घर से दूर रहकर अन्य स्थान पर कमरा किराए पर लेकर अध्ययन करते है उनके लिए आवास, भोजन, एवं बिजली-पानी सुविधाओं के पुनर्भरण राशि के रूप में अम्बेडकर डीबीटी वाउचर योजनान्तर्गत दो हजार रुपये प्रतिमाह दिए जाएगें। उन्होंने बताया कि अधिकारी के लिए जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी कार्यालय में सम्पर्क कर सकते है।

## माहवारी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधन पर जिला स्तरीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

### अंतर्राष्ट्रीय माहवारी स्वच्छता दिवस पर कार्यालय उपनिदेशक, महिला अधिकारिता के तत्वावधान में हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** अंतर्राष्ट्रीय माहवारी स्वच्छता दिवस के अवसर पर जेएलएन मार्ग स्थित इंदिरा गांधी पंचायती राज संस्थान में एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यालय उपनिदेशक, महिला अधिकारिता विभाग के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों ने माहवारी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधन की बारीकियों से रूबरू करवाया। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के डॉ. सोनू ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए स्वयं सहायता समूह, एनजीओ की सदस्यों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं साथिनों के साथ-साथ बालिकाओं को माहवारी के दौरान अपनी सेहत की देखभाल के तौर तरीकों की जानकारी दी। उपनिदेशक, महिला अधिकारिता डॉ. राजेश डॉगीवाल ने कार्यशाला में प्रतिभागियों को विभागीय योजनाओं की जानकारी दी एवं प्रत्येक पात्र लाभार्थी तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने की अपील की।

**राजस्थान महिला निधि केडिट को-ऑपरेटिव फेडरेशन लिमिटेड**
तृतीय तल, बी-ब्लॉक उद्योग भवन सी स्कीम, जयपुर, 302001, Email ID - ACCOUNTS.RMN@RAJASTHAN.GOV.IN
क्रमांक :- F1(7)RD/RMN/2024/1885 दिनांक :- 27/05/2025

**Notice Inviting Bid**

Offline Bid for Job Basis Support staff (Computer Operator with Machine & Multi Task Worker) for Rajasthan Mahila Nidhi. Are Invited from interested bidders up to 02.06.2025 (time) 02.00 P.M. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(https://sppp.rajasthan.gov.in/)** of the state; and **https://mahilanidhi.rajasthan.gov.in/mahilanidhi/UI/NewsEvents.aspx.** The approximate value of the procurement is Rs.3,20,000/-.
**UBN : MNC2526SSOB00001, NIB : MNC2526A0001**
**Chief Executive Officer**
**Rajasthan Mahila Nidhi**
**Raj.Samwad/C/25/3222**

**ERCP Eastern Rajasthan Canal Project Corporation Limited**
Sinchai Bhawan, JLN Marg, Jaipur 302017 Tel: 0141-2709667 Email: ceercpc@gmail.com
No. :- 1125 Date :- 27/05/2025

**NIB No. - ERCPCL/09/2025-26**

Managing Director, ERCPCL invites bid for "Supply and installation of IT Equipment's under ERCPCL Jaipur with 3 year Comprehensive Warranty "from interested bidders up to 09.06.2025 (06.00 PM). Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(https://sppp.rajasthan.gov.in/sppp/ and http://eproc.rajasthan.gov.in)** of the state. The approximate value of the procurement is Rs. 70.05 Lacs.
**NIB Code : ERP2526A0013, UBN No. : ERP2526GLOB00014**
**Raj.Samwad/C/25/3229** **MD cum Chief Engineer**

## एक दिन की सीईओ बनी नेहा - बालिका शिक्षा और संविधानिक चेतना का प्रेरणास्रोत"

जयपुर टाइम्स

**धौलपुर(निस.)।** चन्द्रज्योति अभियान के तहत "एक दिन की सीईओ" बनने का अवसर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पचगांव की कक्षा 11वीं की छात्रा नेहा को प्राप्त हुआ। यह अवसर उसे भारतीय संविधान पर आयोजित जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में विजेता स्थान प्राप्त करने पर मिला, जिसमें जिलेभर के रोल प्ले विजेता विद्यार्थियों ने भाग लिया था। नेहा ने जिला परिषद कार्यालय का दौरा किया और मुख्य कार्यकारी अधिकारी आव्हाद निवृत्ति सोमनाथ के साथ दिनभर प्रशासनिक गतिविधियों का अनुभव लिया। उन्होंने राजीविका स्वयं सहायता समूह की बैठक में भाग लेकर महिलाओं की समस्याएं सुनीं, उनके आत्मविश्वास और समूहों के नवाचारों को समझा। साथ ही, टीम के अन्य सदस्यों से संवाद कर प्रशासनिक कार्यप्रणाली की जानकारी ली। मुख्य कार्यकारी अधिकारी नेहा से संवाद किया और उसके आत्मविश्वास, दृष्टिकोण और नेतृत्व कौशल की सराहना करते हुए भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं। इस पहल ने नेहा को न केवल संविधान की व्यवहारिक समझ दी, बल्कि उसके भीतर देश सेवा का सपना और अधिक सशक्त किया। चन्द्रज्योति अभियान का उद्देश्य बाल संसद के माध्यम से संविधानिक जागरूकता को विद्यार्थियों के जीवन में आत्मसात करना है। यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक आंदोलन है जो शिक्षा विभाग, जिला प्रशासन और विद्यालयों के सहयोग से गाँव-गाँव तक पहुँच रहा हैं। इस अवसर पर भूपेश गर्ग, मंगेश, चन्द्रज्योति अभियान टीम शिक्षक अरूण कुमार, रूपम शर्मा, भाई अरूण और जिला परिषद के अधिकारी उपस्थित रहें।

## जयपुर में दिव्य चिकित्सा मंत्रों का सजीव अनुभव, अश्विनी गुरुजी ने कराई आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** ध्यान फाउंडेशन द्वारा होटल रमाडा में आयोजित विशेष सत्र में दिव्य चिकित्सा मंत्रों का अद्वितीय संगम देखने को मिला। इस आयोजन में विश्वविख्यात वैदिक गुरु, अश्विनी गुरुजी ने स्वयं मंत्रों का उच्चारण कर साधकों को उनकी गूढ़ ऊर्जा व प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। देश-विदेश से पधारे 150 से अधिक साधक-साधिकाएं इस सत्र में वैदिक मंत्र साधना एवं यज्ञ प्रणाली सीखने के उद्देश्य से शामिल हुए। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिक ज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा, बल्कि इसमें क्लेरवॉयंस व मंत्रों की ऊर्जा का वैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया। ध्यान फाउंडेशन ने पूर्व में मंत्र स्कैनर द्वारा गुरुजी के मंत्रोच्चारण का विश्लेषण कर विभिन्न दिव्य स्वरूपों की संरचनाएं रिकॉर्ड की थीं, जो ध्यानफाउंडेशन.कॉम पर उपलब्ध हैं। गुरुजी ने बताया कि "दिव्य चिकित्सा मंत्र" सात विशिष्ट मंत्रों का संयोजन है, जो चक्रों को जाग्रत कर नाड़ियों को खोलते हैं व शरीर में उपचारकारी ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। इनके मंत्रोच्चारण से कई साधकों को दिव्य अनुभूतियाँ हुई हैं। स्पिरिचुअल हीलिंग, योग, आयुर्वेद व वैदिक मार्शल आर्ट्स में निपुण अश्विनी गुरुजी दशकों से गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत यह ज्ञान निशुल्क प्रदान कर रहे हैं। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री श्रीपद नाइक भी ध्यान आश्रम में यज्ञ सत्र में भाग लेकर मंत्रों की शक्ति से अभिभूत हुए थे। यह आयोजन उन सभी के लिए विशेष रहा जो वैदिक ऊर्जा, यज्ञ एवं मंत्र विज्ञान की शक्ति को प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहते हैं।

## पाली में ट्रक की टक्कर से जैन संत की मौत

**पाली(निसं.)।** पाली में विहार कर रहे जैन संत की सड़क हादसे में मौत हो गई। तेज रफ्तार मिनी ट्रक ने जैन संत आचार्य पुंडरिक रत्न सुरीश्वर को टक्कर मार दी। जिससे उनके सिर में गंभीर चोट लगी। बांगड़ हॉस्पिटल में जांच के बाद डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हादसा बुधवार सुबह 6.30 शिवपुरा थाना इलाके के जाडन में हुआ। जाडन चौकी प्रभारी रामनिवास ने बताया कि जैन संत कॉलेज से साथी जैन संतों के साथ विहार पर रवाना हुए थे। करीब 10 किलोमीटर चलने के बाद उन्हें जाडन टोल नाके पास स्थित विराट धाम पहुंचना था।

**कार्यालय जिला परिषद्, चूरू**

क्रमांक -प.1/संस्था/2025-26/1102 दिनांक 21/5/2025

**निविदा संख्या**

इस कार्यालय में ब्लॉक राजगढ के लिए एक ब्लॉक फैलो की नियुक्ति हेतु खुली निविदा आमंत्रित की जाती है जिसकी विस्तृत जानकारी पोर्टल www.sppp.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।

६८८१/२०२५

**मुख्य कार्यकारी अधिकारी**
**जिला परिषद, चूरू**

**आम सूचना**

मैं अरविन्द असवाल पुत्र स्व0 ओमप्रकाश असवाल जाति खटीक निवासी वार्ड नम्बर 21 कस्बा उदयपुरवाटी जिला झुंझुनूं राजस्थान।वाहन रेनोल्ट क्रिड कार रजि0 नम्बर RJ 18 CC 2187 चैचिस नम्बर MEEBBA004H8521485 इंजन नम्बर B4DA404E165433 मॉडल 2017 के पंजिकृत मालिक/ रजिस्टर्ड ऑनर मेरे पिताजी ओमप्रकाश असवाल पुत्र बोदू राम जाति खटीक निवासी वर्तमान वार्ड नम्बर 21 कस्बा उदयपुरवाटी जिला झुंझुनूं राज. थे मेरे पिताजी ओमप्रकाश असवाल की मृत्यु दिनांक 03-04-2022 को हो चुकी है। इस कार पर मेरा स्वामित्व है। इस वाहन को अब मेरे नाम से ट्रांसफर करवाना चाहता हूं। इसकी समस्त जिम्मेदारी मेरी होगी। इस पर यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज 07 दिन में अपनी आपत्ति परिवहन विभाग झुंझुनूं में दर्ज करवा सकते हैं।

**कार्यालय नगर पालिका मण्डल विराटनगर (कोटपूतली - बहरोड़)**

Ph. 01422-243929 Email- viratnagar.jaipur@yahoo.com
क्रमांक: न.पा.वि./2025 / 182 दिनांक- 28/4/25

**सार्वजनिक आपत्ति सूचना**

ऑनलाईन प्राप्त प्रकरणो के सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह 07 दिवस में मय सबूत आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा वाद मियाद कोई आपत्ति मान्य नही होगी। ऑनलाईन प्राप्त आवेदन निम्नानुसार है

| क्र.स. | आवेदक का नाम व पता | राजस्व ग्राम | खसरा नम्बर | प्रयोजनार्थ |
|---|---|---|---|---|
| 1 | श्री छग्गनलाल वर्मा पुत्र श्री गंगा लहरी वर्मा | पापड़ी (रजत विहार) | 1196, 1197, 1198 (भूखण्ड संख्या-80) | 180.00 वर्गगज आवासीय पट्टा स्थानान्तरण करवाने बाबत् । |

**अधिशाषी अधिकारी**
**नगर पालिका विराटनगर**

**कार्यालय नगर पालिका मण्डल विराटनगर (कोटपूतली - बहरोड़)**

Ph. 01422-243929 Email- viratnagar.jaipur@yahoo.com
क्रमांक: न.पा.वि./2025 / 183 दिनांक- 25/4/25

**सार्वजनिक आपत्ति सूचना**

ऑनलाईन प्राप्त प्रकरणो के सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह 07 दिवस में मय सबूत आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा वाद मियाद कोई आपत्ति मान्य नही होगी। ऑनलाईन प्राप्त आवेदन निम्नानुसार है

| क्र.स. | आवेदक का नाम व पता | राजस्व ग्राम | खसरा नम्बर | प्रयोजनार्थ |
|---|---|---|---|---|
| 1 | श्री पुरूषोतम निमोरिया पुत्र श्री सूरजमल वर्मा | पापड़ी (रजत विहार) | 1196, 1197, 1198 (भूखण्ड संख्या-81) | 180.00 वर्गगज आवासीय पट्टा स्थानान्तरण करवाने बाबत् । |

**अधिशाषी अधिकारी**
**नगर पालिका विराटनगर**

**OFFICE OF GRAM PANCHAYAT DHANDHELA P.S. PATAN (SIKAR)**

S.NO.:ग्रा.प./धा./2025-26/37 DATE: 28/05/2025

**Notice Inviting Bid**

Bid for construction works undar Other Scheme are invited from intersted bidders upto 27-04-2025, 09:30 AM to 03-06-2025, 11:00 AM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in) of the state. The approximate value of the work is maximum RS. 425000
UBN No. PKP2526WSOB00065-69

**PRASHASHAK**
**GP DHANDHELA**
**VDO**
**GP DHANDHELA**

**Office of Gram panchayat Nyorama P.S. Patan (SIKAR)**

date 27.5.2025

**NOTICE OF INVITING BID**

Bid for construction works under other Scheme are invited from interested bidders up to 27.5.2025, 9:30 AM to 2.6.2025, 2:00PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http:/sppp.raj.nic.in) of the State. The appro & imate value of the work is maximum 13.50 lac.
UBN NO : PKP2526WSO B.00.061, 62, 63,64

**PRASHASHAK**
**GP NYORANA**
**VDO**
**GP NYORANA**

## विश्व माहवारी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधन की कार्यशाला का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

**धौलपुर(निसं.)।** विश्व माहवारी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधन की जिला स्तरीय एक दिवसीय कार्यशाला का जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी के निर्देशन में नगर परिषद सभागार में आयोजन किया। कार्यशाला का शुभारंभ सहायक निदेशक महिला अधिकारिता विभाग जयप्रकाश निराणिया द्वारा करते हुए विभागीय योजनाओं की विस्तार से जानकारी प्रदान की एवं अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत सत्कार किया। कार्यशाला में मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद ए एन सोमनाथ द्वारा ग्रामीण इलाकों में माहवारी सम्बन्धी जागरूकता पर बल दिया तथा ग्राम साथिनो को पंचायत स्तर पर बैठने की व्यवस्था करवाने के निर्देश दिए। साथ ही विभागीय योजनाओं में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 30 ग्राम साथिनों एवं मंचासीन अतिथियों को प्रमाण पत्र एवं दैनिक डायरी देकर सम्मानित किया। कार्यशाला के दौरान डॉ. चित्रा बसंल द्वारा माहवारी से सम्बन्धित बीमारियों एवं उनके उपचार आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डॉ. नीति गुप्ता द्वारा माहवारी के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों एवं एनीमिया सम्बन्धित जानकारी प्रदान की तथा डॉ. निर्मला सिंह द्वारा माहवारी के दौरान पोषण इत्यादि की आवश्यकता पर बल दिया। नगर परिषद सभापति खुशबू सिंह द्वारा महिलाओं को अपने स्तर पर जागरूकता लाने तथा माहवारी स्वच्छता व स्वास्थ्य के बारे में उद्बोधन देकर लाभान्वित किया। कार्यशाला में विभागीय योजनाओं को दर्शित करने वाली दैनिक डायरी एवं पुस्तिका का विमोचन किया गया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धर्मसिंह मीणा, उप निदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग धीरेन्द्र सिंह, कॉलेज की छात्राएं व ग्रामीण महिलाओं सहित अन्य उपस्थित रहे। कार्यशाला में 5 वर्ष की बालिका का जन्मोत्सव मनाया गया। मंच संचालन सहायक लेखाधिकारी मांगीलाल आर्य ने किया।

## करौली में दो इनामी बदमाश गिरफ्तार, एक साल से थे फरार

**करौली(निसं.)।** नादौती थाना पुलिस ने एक साल से फरार चल रहे दो इनामी बदमाशों को गिरफ्तार किया है। रावताडा मोड़ से पकड़े गए आरोपियों में धोलेटा निवासी रणजीत मीना और मेघचंद मीना शामिल हैं। नादौती थाना अधिकारी वीर सिंह गुर्जर ने बताया कि रणजीत मीना पर 2 हजार रुपए और मेघचंद मीना पर एक हजार रुपए का इनाम करौली एसपी ने घोषित किया था। दोनों आरोपी पुलिसकर्मियों के साथ अभद्रता, सरकारी कार्य में बाधा और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के मामलों में वांछित थे। आरोपी लगातार अपनी लोकेशन बदलकर पुलिस से बचते रहे। गिरफ्तारी में थानाधिकारी के साथ सहायक उपनिरीक्षक प्रेमसिंह, मुकुट, हेड कॉन्स्टेबल ऋषिकेश, कॉन्स्टेबल राजेश, कुमर सिंह, वीरेन्द्र सिंह, अमीर सिंह और हरि सिंह शामिल थे। पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। उनके खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज है। करौली पुलिस जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगातार सक्रिय है।

**कार्यालय ग्राम पंचायत लूणास**
**पंचायत समिति तारानगर, चूरू**

क्रमांकः ग्रा.प. / सामग्री निविदा / 14-19 दिनांक 28.05.2025

**ई निविदा 01/2025-26**

में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत लूणास महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं / संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https://eproc.rajasthan.gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https://eproc.rajasthan.gov.i एंव https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है

**सरपंच**
**ग्राम पंचायत लूणास**
**पंचायत समिति तारानगर**

**ग्राम विकास अधिकारी**
**ग्राम पंचायत लूणास**
**पंचायत समिति तारानगर**

**कार्यालय ग्राम पंचायत अलायला**
**पंचायत समिति तारानगर, चूरू**

क्रमांकः ग्रा.प./ सामग्री निविदा / 88-93 दिनांक 28.05.2025

**ई निविदा 01/2025-26**

राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत अलायला में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं /संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https:// eproc.rajasthan.gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https://eproc.rajasthan.gov.i एंव https:// sppp. rajasthan. gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है एन आई बी कोड

**सरपंच**
**ग्राम पंचायत अलायला**
**पंचायत समिति तारानगर**

**कार्यालय ग्राम पंचायत नेठवा**
**पंचायत समिति तारानगर, चूरू**

क्रमांकः ग्रा.प./ सामग्री निविदा / 66-70 दिनांक 28.05.2025

**ई निविदा 01/2025-26**

राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत नेठवा में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं /संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https://eproc.rajasthan.gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https://eproc.rajasthan.gov.i एंव https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है

**सरपंच**
**ग्राम पंचायत नेठवा**
**पंचायत समिति तारानगर**

**ग्राम विकास अधिकारी**
**ग्राम पंचायत नेठवा**
**पंचायत समिति तारानगर**

**कार्यालय ग्राम पंचायत ढाणी कुम्हारान**
**पंचायत समिति तारानगर, चूरू**

क्रमांक- ग्रा.प./ सामग्री निविदा / 11-13 दिनांक 28.05.2025

**ई निविदा 01/2025-26**

राजस्थान राज्यपाल महोदय की ओर से ग्राम पंचायत ढाणी कुम्हारान में वित्तीय वर्ष 2025 2026 के लिये महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनाओं में निर्माण सामग्री क्रय हेतु इच्छुक पंजीकृत प्रतिष्ठानों/ बोलीदाताओं /संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईड https:// eproc. rajasthan. gov.in पर आनलाईन निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा सूचना की ग्राम पंचायत वार विवरण एंव शर्ते https://eproc.rajasthan.gov.i एंव https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एंव Download कर प्राप्त की जा सकती है एन आई बी कोड

**सरपंच**
**ग्राम पंचायत ढाणी कुम्हारान**
**पंचायत समिति तारानगर**

**ग्राम विकास अधिकारी**
**ग्राम पंचायत ढाणी कुम्हारान**
**पंचायत समिति तारानगर**

# शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
29 मई, 2025


## भागवत कथा सुनने से व्यक्ति का आध्यात्मिक जागरण होता है: पारीक

जयपुर टाइम्स

**मण्डावा(निस)।** राजस्थान ब्राह्मण महासभा के झुंझुनूं जिलाध्यक्ष अरविन्द पारीक बुधवार को प्रतापगढ के आचार्य मांगीलाल शर्मा के मुख से श्रीमदभागवत कथा के समापन के अवसर पर मण्डावा गढ स्थित कथा स्थल पहुंचे और कथा श्रवण किया। पारीक ने कथा आरम्भ होने से पूर्व दीप प्रज्ज्वलित किया। पारीक ने कहा कि भागवत कथा सुनने से व्यक्ति का आध्यात्मिक जागरण होता है। उन्होंने कहा कि आचार्य शर्मा ने अपनी तपश्चर्या से आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत उच्च स्थान बनाया है और व्यासपीठ से उनके मुख से भागवत कथा का रसास्वादन करने का अवसर मिलना सौभाग्य की बात है। सुषमा पारीक कहा कि भागवत शास्त्र व्यक्ति की मुक्ति का नहीं बल्कि समष्टि के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला शास्त्र है। उन्होंने कहा कि भागवत कथा का श्रवण व्यक्ति को सूक्ष्मता, अहंता और ममता के बंधन तोड़ कर ईश्वर की ओर प्रवृत्त करता है। शर्मा ने जिलाध्यक्ष को वात्सल्य ग्राम का मोमेंटो भी भेंट किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने कथा सुनी।

## नेत्रदान व रक्तदान की जानकारी देकर किया जागरूक

जयपुर टाइम्स

**सरदारशहर(निस)।** तहसील के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बरड़ासर में 17 मई से 31मई तक चल रहे समाज सेवा शिविर में बुधवार को नेत्रदान व रक्तदान जनजागरण अभियान के जिला संयोजक और नेत्र संग्रह केन्द्र के समन्वयक गणेशदास स्वामी ने नेत्रदान व रक्तदान के बारे में विद्यालय के छात्र-छात्राओं को विस्तार से जानकारी देते हुए जागरूक किया। समाज में फैली भ्रांतियों का निवारण किया। विद्यालय के प्राचार्य रूपाराम मेव व समाज सेवा शिविर प्रभारी सुनिता स्वामी वरिष्ठ अध्यापिका ने शिविर के बारे में विस्तृत जानकारी दी। शिविर में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें गोमती ने प्रथम व मधु ने द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर उन्हें पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर नेत्रदान, रक्तदान व नशामुक्ति पर प्रचार सामग्री वितरित की गई।

## टीडा गेला दादी मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव 31 मई को

जयपुर टाइम्स

**लक्ष्मणगढ़(निस)।** शहर के कबूतरिया कुआं के पास स्थित श्री श्याम बिहारी मंदिर में ढांढणवाली दादीजी का टीडा गेला दादी मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम 31 मई को किया जाएगा। संयोजक संदीप बजाज ने बताया कि कार्यक्रम में बजाज हेल्थकेयर लिमिटेड के अध्यक्ष सजन बजाज सहित बजाज परिवार के प्रवासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे। पालवास पीठाधीश्वर विक्रमनाथ महाराज व गाड़ौदा पीठाधीश्वर महावीर जति महाराज विशेष रूप से उपस्थित होकर अपना आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

## जिला क्रियान्वयन समिति की बैठक कल

जयपुर टाइम्स

**चूरू(निस)।** जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा की अध्यक्षता में 30 मई, को दोपहर 01.15 बजे डीओआईटी वीसी सभागार में जिले में तिलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार की ओर से जारी नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल - तिलहन के क्रियान्वयन के लिए जिला क्रियान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाएगी। कृषि विस्तार संयुक्त निदेशक मुकेश कुमार माथुर ने बताया कि बैठक में जिले में तिलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने तथा वैल्यू चैन पार्टनर से प्राप्त प्रस्तावों पर चर्चा की जाएगी।

# बुजुर्गों के आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण पर जोर, एक दिवसीय कार्यशाला

जयपुर टाइम्स

**झुंझुनूं(निस)।** जिले में बुजुर्गों के कल्याण, सशक्तिकरण और सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करने के उद्देश्य से सूचना केंद्र सभागार में एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग की ओर से हुई। इस कार्यशाला में वरिष्ठ नागरिकों को मानसिक, शारीरिक, कानूनी और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए विशेषज्ञों की ओर से महत्वपूर्ण प्रशिक्षण और परामर्श प्रदान किया गया।

### बुजुर्गों के आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण पर जोर बुजुर्गों को स्वावलंबी बनाना

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए झुंझुनूं विधायक राजेन्द्र भांभू ने इस पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और विभाग की प्राथमिकता है कि बुजुर्ग किसी भी रूप में दूसरों पर आश्रित न रहें। भांभू ने जोर देकर कहा कि बुजुर्गों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनना चाहिए ताकि वे स्वयं बेहतर जीवन जी सकें और समाज की नींव भी मजबूत हो। उन्होंने कहा कि यदि बुजुर्ग स्वस्थ, सुरक्षित और मानसिक रूप से सशक्त रहेंगे, तो सामाजिक संरचना भी उतनी ही सुदृढ़ होगी।

### बुजुर्ग है समाज की अमूल्य धरोहर

जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने कार्यशाला में कहा कि ऐसी पहल से न केवल बुजुर्गों को जीवन में एक नई ऊर्जा और आत्मविश्वास मिलता है, बल्कि समाज में बुजुर्गों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित होता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बुजुर्ग समाज की अमूल्य धरोहर हैं और उनकी भलाई के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

### विशेषज्ञों का मार्गदर्शन और विविध विषयों पर जानकारी

इस महत्वपूर्ण कार्यशाला में जिले के प्रमुख विशेषज्ञों की भागीदारी रही। नामचीन मनोवैज्ञानिकों, श्रेष्ठ योग प्रशिक्षकों, आहार विशेषज्ञों, स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के अधिकारियों, पुलिस विभाग, साइबर सेल और जिला प्रशासन से जुड़े अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान किया। वरिष्ठ नागरिकों को डिजिटल जागरूकता, स्वास्थ्य प्रबंधन, पोषण, मानसिक स्वास्थ्य, साइबर सुरक्षा और कानूनी सहायता जैसे विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई, जिससे उन्हें वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना करने में मदद मिल सके।

### दिव्यांगो को इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर का वितरण

सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के उप निदेशक पवन पुनिया ने बताया कि कार्यशाला के अंतर्गत एक विशेष पहल के तहत मांसपेशीय दुर्विकास (मस्कुलर डिस्ट्रॉफी) से पीड़ित 20 दिव्यांगजनों को इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर भी वितरित की गई। उन्होंने कहा कि यह पहल न केवल दिव्यांगों के जीवन को सरल बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है, बल्कि सरकार की समावेशी सोच का भी प्रतीक है, जो समाज के हर वर्ग के कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध है।

## एडीएम को ज्ञापन सौंपकर टैंकरों से पेयजल सप्लाई की मांग

जयपुर टाइम्स

**सुजानगढ़(नि.सं.)।** कृषि उपज मंडी के पीछे स्थित नाथ धोरा बस्ती की महिलाओं ने एडीएम कार्यालय पहुंचकर टैंकरों से पेयजल की सप्लाई शुरू करने की मांग की है। इससे पहले किसान मोर्चा के अध्यक्ष तेजपाल गोदारा व कॉमरेड रामनारायण रूलाणिया के नेतृत्व में नारेबाजी करते हुए एडीएम कार्यालय पर लोग पहुंचे। जहां एडीएम मंगलाराम पूनिया को ज्ञापन सौंप कर टैंकरों से पेयजल सप्लाई शुरू करवाने की मांग की गई। ज्ञापन में बताया गया है कि गत 19 मई को नाथ धोरा टेंकर से पेयजल सप्लाई की व्यवस्था करने के लिए उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन दिया गया था। जिस पर 21 मई से नियमित टैंकर से पेयजल सप्लाई करने का आदेश दिया था। लेकिन ठेकेदार की ओर आज दिन तक टैंकर से पेयजल सप्लाई शुरू नहीं की गई है। जिसके कारण इस भीषण गर्मी में मौहल्ले के लोगों को पेयजल समस्या से परेशान होना पड़ रहा है। ज्ञापन में ठेकेदार पर एक हजार रूपए में पानी के टेंकर बेचने और पेयजल सप्लाई में धांधली करने का आरोप लगाते हुए टैंकरों पर जीपीएस सिस्टम लगाने और टेंकरों से कहां पानी की सप्लाई की जा रही है, इसकी जांच करवाने की मांग की गई। ज्ञापन सौंपने के दौरान एड. रामकुमार मेघवाल, जगदेव बेड़ा, गुरूदेव गोदारा के साथ प्याली देवी, सरिता, कमला, बिमला, सुमन, कंचन, मुन्नी सहित अनेक नाथ धोरा बस्ती की अनेक महिलाए मौजूद रही।

## सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का समापन

जयपुर टाइम्स

**मण्डावा(निस)।** मण्डावा गढ़ में चल रहे सात दिवसीय श्रीमद भागवत कथा का बुधवार को समापन हुआ। भागवत कथा में चार वेद, पुराण, गीता व श्रीमद् भागवत महापुराण की व्याख्या, प्रभुपाद, प्रतापगढ के पण्डित मांगीलाल शर्मा के मुखारवृंद से उपस्थित भक्तों ने श्रवण किया। विगत सात दिनों तक भगवान श्री कृष्ण जी के वात्सल्य प्रेम, असीम प्रेम के अलावा उनकी ओर से किए गए विभिन्न लीलाओं का वर्णन कर वर्तमान समय में समाज में व्याप्त अत्याचार, अनाचार, कटुता, व्यभिचार को दूर कर सुंदर समाज निर्माण के लिए युवाओं को प्रेरित किया। इस धार्मिक अनुष्ठान के सातवें व अंतिम दिन भगवान श्री कृष्ण के सर्वोपरी लीला श्री रास लीला, मथुरा गमन, दुष्ट कंस राजा के अत्याचार से मुक्ति के लिए कंसबध, कुबजा उद्धार, रुक्मणी विवाह, शिशुपाल वध व सुदामा चरित्र का वर्णन कर लोगों को भक्तिरस में डूबो दिया। इस दौरान भजन गायन ने उपस्थित लोगों को ताल व धुन पर नृत्य करने के लिए विवश कर दिया। पंडित जी ने सुंदर समाज निर्माण के लिए गीता से कई उपदेश के माध्यम अपने को उस अनुरूप आचरण करने कहा जो काम प्रेम के माध्यम से संभव है, वह हिंसा से संभव नहीं हो सकता है। समाज में कुछ लोग ही अच्छे कर्मों से सदैव चिर स्मरणीय होता है, इतिहास इसका साक्षी है। लोगों ने इस संगीतमयी भागवत कथा का आनंद उठाया। इस सात दिवसीय भागवत कथा में श्रद्धालुओं ने इस कथा का आनंद उठाया। सात दिनों तक इस कथा में पूरा वातावरण भक्तिमय रहा। प्रवचन के बाद मुख्य यजमान ठाकुर दुर्गा सिंह की ओर से उपस्थित भक्तों के बीच प्रसाद वितरण किया गया। इस धार्मिक कार्यक्रम में विप्र समाज के जिलाध्यक्ष अरविन्द पारीक, सुषमा पारीक, भोला सिंह, पवनदास महाराज, अजय शर्मा, लोकेश शर्मा सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

## राजा परीक्षित और कलयुग की कहानी को सुनकर भावविभोर हो उठे श्रद्धालु

जयपुर टाइम्स

**मण्डावा(निस)।** मुकुन्दगढ मार्ग स्थित श्री जाल वाले बालाजी मन्दिर में बुधवार को प्रयागराज के संत स्वामी ओम चैतन्य महाराज के आगमन पर श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। इस दौरान महाराज ने कलयुग-परीक्षित प्रसंग को लेकर प्रवचन दिए। इस पर श्रद्धालु श्रोता भावविभोर हो उठे। उन्होंने कहा कि एक बार परीक्षित महाराज कुरुक्षेत्र की यात्रा कर रहे थे, तब उन्होंने वहां पर एक अद्भुत दृश्य देखा। वह दृश्य था कि एक बुड्ढे बैल के तीन पैर टूटे हुए थे और उसके साथ एक गाय थी। उन दोनों के पीछे एक काले रंग का पुरुष राज चिन्ह धारण किए हुए खड़ा था वास्तव में वह बूढ़ा बैल धर्म था, गाय पृथ्वी थी और यह काला पुरुष कल्कि था। बूढ़ा बैल और वह गाय आपस में बातचीत कर रहे थे कि अब कलयुग आ गया है और पृथ्वी पर देवताओं का वास नहीं रहेगा। इंद्रदेव वर्षा नहीं करेंगे। जिसके कारण प्रजा भूखी मर जाएगी। उनके संवाद को देखकर राजा परीक्षित ने उस पुरुष की तरफ देखा इसके बाद राजा परीक्षित अपने धनुष पर बाण चढ़ाकर उस पुरुष को मारने के लिए तैयार हो गए। तब उस पुरुष ने उन राज चिन्ह को त्याग दिया और राजा परीक्षित के चरणों में गिर गया। इसके बाद राजा परीक्षित ने उन्हें माफ कर दिया। उस पुरुष ने राजा परीक्षित से कहा कि आप मेरे रहने का कोई स्थान दीजिए, जहां पर मैं आपकी आज्ञा से निश्चिंत होकर रहूं। इसके बाद राजा परीक्षित ने कहा तुम अहिंसा, क्रोध, मोह लोभ इन चार स्थानों में वास करो। इसके बाद उस कलि पुरुष ने महाराजा से यह विनती की आप मुझे वह स्थान बताइए जहां पर यह चारों अधर्म एक साथ निवास करते हो। तब राजा ने उसे सुवर्ण स्थान बताया। वही ओम चैतन्य महाराज ने पृथ्वी धर्म व विष्णु संवाद पर भी विस्तार से चर्चा किया। वही राजा परीक्षित व कलयुग के युद्ध के बारे में भी श्रोताओं को अवगत कराया। इस मौके पर पण्डित गिरधारी लाल सुरोलिया, सुमन जोशी, सुमित्रा सुन्दरिया, पिंकी टेलर, उर्मिला, रामस्वरूप स्वामी, एसपी लाहोरा, सज्जनलाल शर्मा, महेश बारी, रविन्द्र शर्मा, मुकेश शर्मा, परिक्षीत शर्मा सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद रहे।

## *शनि जयंती पर सरदारशहर में आध्यात्मिक समारोह आयोजित*

जयपुर टाइम्स

**सरदारशहर(निस)।** शहर के घंटाघर के पास स्थित शनि मंदिर में शनि जयंती के अवसर पर 17 वां विशाल जागरण आयोजित किया गया। प्रसिद्ध भजन गायक संत रोशननाथ महाराज ने अपनी सुरीली आवाज से श्रद्धालुओं को भजनों से मंत्रमुग्ध किया। रोशननाथ महाराज ने 'गणेश आया रिद्धि सिद्धि लाया' से भजनों की शुरुआत की। उन्होंने 'रटो पार्वती के भरतार' और 'मलिक के दरबार में है सभी का खाता' जैसे भजन प्रस्तुत किए। श्रद्धालु भक्ति रस में डूबे नजर आए। कार्यक्रम में समाजसेवी विमल जम्मड़, भाजपा नेता मधुसूदन राजपुरोहित और पंचायत समिति उप प्रधान केसरी शर्मा सहित कई श्रद्धालु मौजूद रहे। विमल जम्मड़ ने कहा कि शनि मंदिर में दर्शन से जीवन की बाधाएं दूर होती हैं। साथ ही कर्मों में सुधार होता है और आत्मिक बल मिलता है। शास्त्रों के अनुसार शनिदेव भगवान कर्मों के दंडदाता और न्यायप्रिय देवता हैं। मान्यता है कि उनकी पूजा और मंदिर में दर्शन से बाधाएं दूर होती हैं और न्याय की भावना बढ़ती है। इससे मन में धैर्य और साहस का संचार होता है। जीवन में स्थिरता और शांति मिलती है। इसी क्रम में शहर के अन्य शनि भगवान के मंदिर मीणा का कुआं, करती छात्रावास, गिड़गिचिया रोड़ सहित शनि महाराज के अनेक मंदिरों में शनि महाराज की जयंती पर भव्य धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। क्षेत्र के अनेक ग्रामीणों व शनि महाराज के भक्तों ने शनि महाराज के धोक लगाकर सुख समृद्धि की कामना की।

## शादी समारोह में हवाई फायरिंग, पिता-पुत्र व एक अन्य के खिलाफ मामला दर्ज

जयपुर टाइम्स

**मण्डावा(निस)।** श्योपुरा (ढाका का बास) में एक शादी समारोह में हवाई फायरिंग कर दहशत फैलाने का मामला सामने आया है। सोशल मीडिया पर इसका वीडियो भी वायरल हो रहा है। थानाधिकारी रामनिवास ने बताया कि गांव के ही बृजलाल ने थाने में रिपोर्ट दी कि 11 मई को शाम 6.30 बजे के आसपास नरेंद्र सिंह के भाई के लड़के की बारात रवाना हो रही थी, उस समय मैं नेता दादा मंदिर पर जाकर वापस घर आ रहा था, ज्यो ही मै बारातियों के पास पहुंचा तो नरेंद्र का पुत्र निखिल की नजर मेरे ऊपर पड़ी,।तब निखिल ने अपनी जेब से पिस्टल निकाली और लहराते हुए हवाई फायरिंग करनी शुरू कर दी। पास खड़े एक अन्य व्यक्ति को भी अपनी पिस्टल देकर हवाई फायरिंग करवाई तब मैं दहशत में आ गया और डरकर वहां से जाने लगा व वही साइड में मेरा बेटा प्रदीप खड़ा था जिसने उक्त घटना का अपने मोबाइल से वीडियो बना लिया, मेरे वहां से थोड़ा आगे जाने पर मेरे पीछे से भी निखिल ने हवाई फायरिंग की। उक्त घटना बाबत मुझे धमकी दी गई यदि तुमने थाने में कोई रिपोर्ट दर्ज कराई तो तुझे वह तेरे परिवार को व किसी ने गवाही दी तो जान से मार देंगे। रिपोर्ट में बताया गया कि नरेंद्र सिंह वह उसका पुत्र निखिल अवैध हथियार रखते हैं तथा उन हथियारों को साथ में लेकर गांव में घूमते रहते हैं। मैं दिखाई देता हूं तो फायरिंग करते हैं और कहते हैं कि तुझे, तेरे बेटे प्रदीप और एडवोकेट अजय को जान से मारेंगे। रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

## पिता किसान, सरकारी स्कूल के छात्र जगदीश ने हासिल किए 98.17% अंक

### दसवी बोर्ड परीक्षा का मामला, गांव में खुशी की लहर

जयपुर टाइम्स

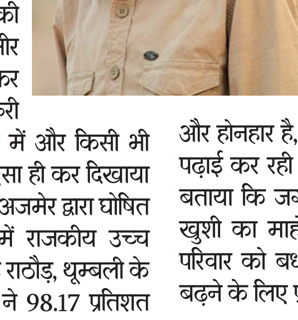

**रावतसर(निसं.)** कहते हैं कि मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती, जरुरत है तो लक्ष्य पर अडिग रहने की और लक्ष्य पाने के लिए किसी अमीर मां बाप का होना या कोचिंग या फिर प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करना जरुरी नहीं है। लक्ष्य किसी भी परिस्थिति में और किसी भी जगह हासिल किया जा सकता है ऐसा ही कर दिखाया है राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा घोषित 10वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शहीद नाथूसिंह राठौड़, थूम्बली के छात्र जगदीश पुत्र लूणाराम सुथार ने 98.17 प्रतिशत अंक (589 अंक) प्राप्त कर स्कूल और गांव दोनों का नाम रोशन किया है। जगदीश के पिताजी लूणाराम सुथार पहले फर्नीचर का कार्य करते थे, लेकिन पिछले कई वर्षों से मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। ऐसे कठिन हालात में परिवार की जिम्मेदारी उनकी माता जी ने उठाई और सिलाई का काम कर बच्चों की पढ़ाई में सहयोग दिया। परिवार में जगदीश के अलावा एक बड़ा भाई और एक छोटी बहन भी हैं। बड़ा भाई पढ़ाई और खेलकूद में सक्रिय और होनहार है, जबकि छोटी बहन भी नियमित रूप से पढ़ाई कर रही है। स्थानीय निवासी हीराराम चौधरी ने बताया कि जगदीश की इस उपलब्धि से पूरे गांव में खुशी का माहौल है। ग्रामीणों द्वारा उसे और उसके परिवार को बधाइयाँ दी जा रही हैं तथा निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

# पीड़ित पक्ष को कुल 15.92 लाख रूपए का अवार्ड पारित

जयपुर टाइम्स

**तारानगर(निस)।** तारानगर न्यायालय मोटर दुर्घटना दावाधिकरण के पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने सड़क दुर्घटना के मामले में कुल 15.92 लाख रूपये का अवार्ड पारित किया। पीड़ित पक्ष की ओर से पैरवी कर रहे अधिवक्ता अनिल कुमार स्वामी राजपुरा ने बताया कि जगदीश सिंह 9 फरवरी 2021 को अपनी दुकान मंगल करके मोटरसाईकल से रामपुरा से गेट का नाप लेने के लिये जा रहा था, जो रामपुरा पॉवर हाउस से थोड़ा पहले पहुंचा तो सामने से ट्रेक्टर चालक तेजसिंह ट्रेक्टर को तेज गति व लापरवाही से चलाकर जगदीशसिंह की मोटरसाईकल को टक्कर मार दी, जिससे जगदीशसिंह के सिर व शरीर पर गम्भीर चोटें आई। जगदीशसिंह डीबी अस्पताल चूरू भर्ती करवाया। जहां गम्भीर चोटें होने की वजह से हायर सेंटर रेफर कर दिया, जिसको गुरुकृपा अस्पताल सीकर में भर्ती करवाया। गम्भीर चोटें होने की वजह से जगदीशसिंह की मृत्यु हो गई। ट्रैक्टर चालक के खिलाफ भालेरी थाने में घटना का मुकदमा दर्ज करवाया। पुलिस ने अनुसंधान कर न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट चूरू में चालान पेश किया। मृतक की ओर से उसके वारिसान ने न्यायालय में क्लेम याचिका पेश की, जो करणीसिंह आदि बनाम एचडीएफसी ई. क. लि. आदि पेश की, जिसमें पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने दोनों पक्षों की आपस में समझाईश कर लोक अदालत की भावना से प्रार्थी के पक्ष में कुल 15.92 लाख रूपये का अवार्ड पारित किया।

# शिविर में भाग लेकर लौटी एनसीसी कैडेट्स

जयपुर टाइम्स

**सुजानगढ़(नि.सं.)।** सोना देवी सेठिया स्नातकोतर कन्या महाविद्यालय में संचालित एनसीसी के कैडेट्स जोधपुर की इकाई 3 राज गर्ल्स बटालियन की ओर से आयोजित एनुअल ट्रेनिंग शिविर में हिस्सा लेकर लौटे। एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट मेघना सोनी ने बताया कि इस दस दिवसीय शिविर में कैडेट्स ने राइफल के पार्ट्स की जानकारी ली। इस दौरान राइफल चलाना, ड्रील, गार्ड ऑफ ऑनर, मैप रीडिंग, फिल्ड क्राफ्ट, बैटल क्राफ्ट, टैन्ट पीचिंग, पर्सनलटी डवलपमेंट, कम्युनिकेशन स्किल्स, साइबर सिक्योरिटी, हैल्थ एंड हाइजीन आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में कैडेट्स को सेना में रोजगार के अवसरों की जानकारी दी गई। कैडेट्स ने शिविर में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओ में हिस्सा लिया। जिसमें कैडेट पायल प्रजापत ने टग ऑफ वॉर में गोल्ड व कैडेट आइना ने सिल्वर, कैडेट भाग्यलक्ष्मी ने ग्रुप सिंगिंग गोल्ड, कैडेट खुशी गहलोत ने फ्लैग एरिया में सिल्वर व कैडेट कमला नायक ने चार सौ मी.रीले रेस में गोल्ड मेडल प्राप्त किए प्राचार्य डॉ.साधना सिंह ने सभी कैडेट्स का स्वागत करते हुए उन्हें बधाई दी। उप प्राचार्य डॉ.जयश्री सेठिया ने बताया कि महाविद्यालय में गत पन्द्रह वर्षो से एनसीसी संचालित है, जिसके कारण कैडेट्स प्रशिक्षण प्राप्त कर देश सेवा में अपना योगदान दे रहे है।

# एकदिवसीय कृषि जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर टाइम्स

**रतनगढ़(निस)।** तहसील के गाँव सिमसिया बिदा में ग्राम पंचायत भवन में बुधवार को कृषि विभाग की ओर से राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती योजना अंतर्गत एकदिवसीय कृषि जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती और रासायनिक खेती में अंतर बताते हुए किसानों को जागरूक किया। साथ ही कृषि पर्यवेक्षक विनोद कुमार की ओर से कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं तारबंदी, फॉर्म पॉन्ड, कृषि यंत्र, गोवर्धन जैविक उर्वरक, सिंचाई पाइपलाइन, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, पोध संरक्षण आदि योजनाओं की जानकारी दी। इस मौके पर सरपंच परमेश्वर लाल मेघवाल, गोविंदराम कालेर, पर्यावरण प्रेमी शिवम् प्रजापति, सोहन लाल, हरीराम कालेर, भागवाना राम, शिव कुमार, माना राम आदि ग्रामीण मौजूद रहे।

# हज पर जाने वाले दंपति का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

**चूरू(निस)।** चूरू जिला मुख्यालय स्थित चमन बास में मोहम्मद अब्बास अगवान व इनकी धर्मपत्नी निसार बानों के सऊदी अरब में हज के मुकद्दर सफर के लिए रवाना होने से पूर्व में सर्व समाज के प्रबुद्धजनों की ओर से माल्यार्पण व पुष्प गुच्छ भेंट कर व शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव रियाजत अली खान ने कहा कि अब्बास अली अगवान व इनकी धर्मपत्नी निसार बानों सऊदी अरब में हज पर जाकर देश में अमन चैन खुशहाली भाईचारा देश की तरक्की उन्नति के लिए दुआ करेंगे। इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव रियाजत अली खान, राजवंशी खान महासभा के अध्यक्ष सिराज खां जोईया, अमन ट्रस्ट के अध्यक्ष उस्मान अंसारी, कांग्रेस बीकानेर प्रभारी एडवोकेट सद्दाम हुसैन, आबिद खान मोयल, रफीक खान चौहान, सलीम चौहान, सलीम पीए, रतनलाल जांगिड़, नब्बू खां ठेकेदार, आजम भाटी, समीर खान, राशिद, अली हसन, सद्दाम अली, मोहम्मद सोयल, मोहम्मद जावेद, मोहम्मद रमज़ान, नासीर खां सहित बड़ी संख्या में सर्व समाज के कई लोग उपस्थित रहे।

# शिविर में 154 रोगियों का किया परीक्षण

जयपुर टाइम्स

**सुजानगढ़(नि.सं.)।** लायंस क्लब सुजानगढ़ व शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर के तत्वावधान में जिला अंधता निवारण समिति जयपुर व हितेश ज्वेलर्स, सुजानगढ़ के आर्थिक सौजन्य से इक्कीस वें नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन माहेश्वरी सेवा सदन में किया गया। क्लब सचिव प्रशान्त पारीक ने बताया कि सुजानगढ़ नगरपरिषद के उप सभापति अमित मारोठिया, छापर नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी भवानी शंकर व्यास, विकास सैनी, समाजसेवी

डॉ.कन्हैयालाल मारोठिया, क्लब अध्यक्ष कमल तापड़िया, सचिव प्रशांत पारीक, देवेंद्र बेदी, पवन मौसूण व शंकरा आई हॉस्पिटल के डॉ. दिव्या ने दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया। शंकरा आई हॉस्पिटल की टीम ने 154 रोगियों का परीक्षण किया और ऑपरेशन के लिए 57 रोगियों का चयन किया। अध्यक्ष लॉयन कमल तापड़िया ने शिविर के सफल आयोजन के लिए शंकरा आई हॉस्पिटल, जयपुर की टीम, हितेश ज्वेलर्स, लायंस क्लब के सभी सदस्यों और सभी सहयोगियों, मारुति अनुकंपा नर्सिंग स्टाफ, माहेश्वरी सेवा सदन के स्टाफ का आभार व्यक्त किया। लायंस क्लब की ओर से रोगियों को निशुल्क दवाइयां व चश्मे प्रदान किए गए। लायंस क्लब के अध्यक्ष कमल तापड़िया, सचिव प्रशांत पारीक, पवन मौसूण, एड. रजनीकांत सोनी, देवकृष्ण मालपानी, सहदेव सोनी, सी.ए.रोहित शर्मा, कैलाश तंवर, मुरली राठी, देवेंद्र बेदी, एडवोकेट कैलाश खंडेलवाल, रूपेश शर्मा, विनय माटोलिया, हरनारायण शारदा एवम सहयोगी प्लंबर जावेद, मो.अनवर मौलानी, गोपालचंद सोनी, मालाराम प्रजापत, गिरधारी प्रजापत, जयप्रकाश जांगिड़ एवम माहेश्वरी सेवा सदन के स्टाफ, अनुकंपा नर्सिंग होम के नर्सिंग स्टाफ ने भी अपनी सेवाएं दी।

*पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिह राठौड़ ने यात्रा को किया रवाना*

# ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद तारानगर में निकाली तिरंगा यात्रा

जयपुर टाइम्स

**तारानगर(निस)।** भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद सेना के सम्मान में तारानगर कस्बे में बुधवार को सर्व समाज के लोगों ने नगर अध्यक्ष अनूप खंडेलवाल की अध्यक्षता में तिरंगा यात्रा निकाली। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिह राठौड़ ने तिरंगा यात्रा को नगरपालिका से रवाना किया जो सुबह लगभग 9 बजे बस स्टैंड, अम्बेडकर सर्किल सहित मुख्य बाजार से होते हुए गढ़ कार्यालय तक पहुंची। भारत माता की जय, भारतीय सेना जिंदाबाद के नारे लगाते हुए सर्वसमाज के लोगों ने जोश के साथ तिरंगा यात्रा में शामिल हुए। मुख्य बाजार में व्यापारियों ने पुष्प वर्षा कर व शीतल पेयजल पिलाकर यात्रा का भव्य स्वागत किया। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राठौड़ ने कहा हमारी भारतीय सेना ने दुश्मन देश का जो हाल किया वो सबके सामने है, हमें हमारी सेना पर बहुत गर्व है। पराक्रम राठौड़ ने यात्रा में शामिल होने वाले सभी लोगों का धन्यवाद

ज्ञापित किया। यात्रा के दौरान यातायात व्यवस्था करने में सहायक उप निरीक्षक सुमेर मीणा, यातायात प्रभारी सुरजाराम प्रजापत सहित पुलिस टीम का विशेष सहयोग रहा। इस मौके पर भाजपा नेता महावीर पूनियाँ, पूर्व पालिकाध्यक्ष जसवंत स्वामी, अजीत सिँह राठौड़, लीलाधर बागोरिया, बलवीर सहारण, हरी इंदौरिया, जमरदीन तेली, अयूब पटवा, एडवोकेट राजेंद्रसिँह न्यागली, अमर सिँह चारण, मोहम्मद तैयब, सरपंच राकेश शर्मा, सुरेन्द्र मेघवाल, त्रिलोक रेगर, कैलाश चाचान, वीर बहादुर सिँह राठौड़, एडवोकेट जितेंद्र सिँह राठौड़, शिव कुमार शर्मा, राकेश टाक, सुनील सगतानी, चिरंजीलाल शर्मा सहित सर्व समाज के हजारों पुरुष व नारी शक्ति तिरंगा यात्रा में शामिल हुए।

# सड़क हादसे में बाइक सवार दो घायल

जयपुर टाइम्स

**रतनगढ़(निस)।** एनएच 11 पर जयपुर पुलिया के पास बुधवार शाम हुई सड़क दुर्घटना में बाईक पर सवार दो जने घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि एनएच 11 पर जयपुर पुलिया के पास सड़क के किनारे एक स्कॉर्पियो गाड़ी खड़ी थी। गाड़ी के पीछे खड़ी बाईक पर दो जने सवार थे। सामने से पशु चारे से भरा हुई ट्रेक्टर ट्रॉली स्कॉर्पियो से टकरा गई, जिससे स्कॉर्पियो पीछे की ओर चल पड़ी। पीछे खड़ी बाईक पर सवार दो लोग चपेट में आ गए। 74 वर्षीय मघाराम पुत्र मूलाराम प्रजापत निवासी भरतियो की ढाणी व 18 वर्षीय सांवरमल पुत्र परमेश्वरलाल प्रजापत निवासी भरतियो की ढाणी बाईक पर सवार थे, जो घटना में घायल हो गए। घायलों को टोल एम्बुलैंस ने जिला अस्पताल में भर्ती करवाया, जहां पर सांवरमल को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई, वहीं मघाराम का उपचार समाचार लिखे जाने तक जारी था। घटना को लेकर बुधवार शाम तक पुलिस में मामला दर्ज नहीं हुआ है। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और पशु चारे से भरे वाहन को पुलिस थाने ले आई।

# महिला शक्ति ने जताया सेना का आभार

जयपुर टाइम्स

**सुजानगढ़(नि.सं.)।** ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद तिरंगा यात्रा के अंतर्गत सुजानगढ़ विधान सभा क्षेत्र में महिला शक्ति की ओर से सैनिक आभार अभिव्यक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वेंकटेश्वर मंदिर में भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण से शुरू हुए कार्यक्रम में सिंदूर यात्रा की चूरू जिला संयोजक भारती मुद्गल, प्रधान मनभरी मेघवाल मंचासीन रहें। सिंदूर यात्रा की सुजानगढ़ विधानसभा क्षेत्र की संयोजिका व पार्षद डॉ. शर्मिला सोनी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित महिला शक्ति को संबोधित करते हुए भारती मुद्गल, प्रधान मनभरी मेघवाल, सुरभी पांडे, रानी जैन ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर देश के वीर सैनिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान किरण शर्मा ने राष्ट्र प्रेम गीत गाकर ऑपरेशन सिंदूर के लिए धन्यवाद जताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही डॉ.शर्मिला सोनी ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष चंद्र प्रभा

सोनी, सह संयोजिका सुमन सामरिया, जिला उपाध्यक्ष शोभाग कंवर, जिला मंत्री सुमित्रा सैन, जिला परिषद सदस्य अनीता चौधरी, जसोदा प्रजापत, सुरभि पाण्डेय, रेखा जांगिड़, किरण शर्मा, कौशल्या गुलेरिया, एड. रेखा सोनी, संतोष नाई, अंजू सोनी, संतोष शर्मा सहित क्षेत्र की महिला शक्ति उपस्थित रही। कार्यक्रम में मुरली सेन व मुरारी खंडेलवाल का सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत मे दो मिनिट का मौन रख के सीमा पर शहीद हुए वीर जवानो को श्रद्धांजलि दी गई। सैनिको के सम्मान में एक लाख ग्यारह हजार का चेक जलमंदिर के निमित दिया गया। राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

# क्यूआर कोड आधारित फास्ट ट्रैक ओपीडी रजिस्ट्रेशन की सेवा शुरू

जयपुर टाइम्स

**लक्ष्मणगढ़(निस)।** राजस्थान सरकार की महत्वपूर्ण बजट घोषणा राजस्थान डिजिटल हेल्थ मिशन राजस्थान जिसका मुख्य लक्ष्य राज्य के सभी नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकॉर्ड के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य प्रणाली मुहैया करवाना है। इसके क्रम में राज्य के राजकीय चिकित्सा संस्थानो पर एचएमआईएस सॉफ्टवेयर के माध्यम से स्कैन एंड शेयर सुविधा के माध्यम से टोकन जनरेट कर कतार प्रबंधन सुद्रढ़ किया जा रहा है, जिससे हेल्थ रिकॉर्ड आभा आई डी से लिंक व एक्सचेंज किए जा सकते हैं। जिला चिकित्सालय के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. अटल भास्कर ने बताया कि वर्तमान में मरीजों को अस्पताल में लंबी कतारो में लगकर ओपीडी पर्ची बनवानी पड़ती है। राज्य सरकार के निर्देशानुसार लंबी कतारो से राहत के लिए कोई भी मरीज़ एबीडीएम कम्प्लायंट ऐप के माध्यम से अस्पताल का क्यूआर कोड स्कैन कर अपना ओपीडी टोकन जनरेट कर सकता है। टोकन नंबर के अनुसार, रोगी पंजीकरण काउंटर पर जा सकता है और डॉक्टर के परामर्श के लिए सीधे अपनी बाह्य रोगी पर्ची ले सकता है क्योंकि उनका विवरण पहले से ही पंजीकरण काउंटर पर मौजूद है। टोकन जनरेट होने के 60 मिनट तक प्रभावी रहेगा।

# भीषण गर्मी में अघोषित बिजली कटौती बनी मुसीबत

## कर्मभूमि सेवा संस्थान ने उपखंड अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

**सरदारशहर(निस)।** चूरू जिले की तपती रेत और चुभती लू के बीच सरदारशहर के नागरिक अब बिजली की मार से बेहाल हैं। अघोषित बिजली कटौती ने आमजन की दिनचर्या तो बिगाड़ी ही है अब रात की नींद भी छीन ली है। इस विकराल होती समस्या को लेकर कर्मभूमि सेवा संस्थान के अध्यक्ष एडवोकेट माणकचंद भाटी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने बुधवार को उपखंड अधिकारी डॉ दिव्या चौधरी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में संस्था ने बताया कि अप्रैल 2025 से लेकर अब तक लगातार दिन में कई घंटों तक बिजली गुल रहती है। सूर्यास्त के बाद भी बिजली ट्रिपिंग आम बात हो गई है। 26 मई की रात 7 बजे बिजली काटी गई जो आधी रात 12 बजे आई। आमजन की क्या हालत रही होगी इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। ज्ञापन में इस पीड़ा को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। संस्थान ने जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड पर उपभोक्ताओं से मनमाने चार्ज व सरचार्ज वसूलने के आरोप लगाए हैं और कहा है कि जब सेवा ही नहीं मिल रही तो शुल्क वसूली किस आधार पर की जा रही है। यदि अघोषित बिजली कटौती पर जल्द नियंत्रण नहीं लगाया गया तो संस्था ने जनआंदोलन छेड़ने की चेतावनी भी दी है। साथ ही यह भी मांग की गई है कि यदि किसी कारणवश बिजली कटौती करनी पड़े तो उसकी पूर्व सूचना स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से सार्वजनिक की जाए ताकि नागरिकों को तैयारी का मौका मिल सके। ज्ञापन देने पहुंचे प्रतिनिधियों में एडवोकेट माणकचंद भाटी, भगवती प्रसाद सांडेला, कालीचरण पारीक, मोहर सिंह, भंवरलाल, नरेश भाटी, केसर सिंह सहित अनेक स्थानीय नागरिक शामिल रहे।

# भाऊवाला बने हिंदुस्तान स्काउट्स-गाइड्स के जिलाध्यक्ष

जयपुर टाइम्स

**चूरू(निस)।** शहर के प्रतिष्ठित व्यापारी और समाजसेवी सुनील भाऊवाला को हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड राजस्थान का चूरू जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया। चूरू जिला ऑर्गेनाइजर कुलदीप गोयल ने बताया कि बुधवार को दादू भवन में हुई जिला कार्यकारिणी की बैठक में सुनील भाऊवाला को सर्वसम्मति से जिलाध्यक्ष चुना गया। शिक्षा विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल व संगठन के राज्य सचिव नरेंद्र औदीच्य की अनुशंसा पर सुनील भाऊवाला को नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर जिला ऑर्गेनाइजर कुलदीप गोयल ने उनका स्काउट स्कार्फ पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान संगठन के राज्य मुख्यालय आयुक्त ओम फगेड़िया ने उन्हें नियुक्ति पत्र प्रदान किया। गोयल ने बताया कि चूरू जिले में जिला प्रशिक्षण केंद्र ग्राम गाजसर में स्थापित किया गया है। फगेड़िया ने कहा कि इनकी नियुक्ति से संगठन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। उन्होंने कहा कि स्काउटिंग आज के छात्र जीवन की आवश्यकता है। स्काउटिंग के माध्यम से छात्र-छात्राएं विषम परिस्थितियों में भी जीवन जीने की कला सिखाते हैं और एक अच्छे राष्ट्र के निर्माण में भागीदार बनते हैं। इस अवसर पर सुनील भाऊवाला ने प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जो जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई है, वह बखूबी पूरी ईमानदारी से उसका निर्वाह करने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि चूरू जिले में स्काउटिंग की गतिविधियों को और आगे बढ़ाया जाएगा। भाऊवाला ने कहा कि चूरू जिले में स्कूलों और कॉलजो में स्काउटिंग की नई टीमें तैयार की जाएगी। वहीं आगामी समय में कई प्रकार के कैंप भी आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि जिला कार्यकारिणी के संरक्षक मंडल में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़ और विधायक हरलाल सहारण भी शामिल हैं। इस दौरान कल्पना फगेड़िया, मनीराज बिड्ढ, सुशील अग्रवाल, रवि दाधीच, अनिल प्रकाश कानखेड़िया, राकेश अग्रवाल, कुलदीप शर्मा, गौरीशंकर व बाबू पाटिल को सदस्य बनाए गए हैं। कार्यकारिणी सदस्यों का भी स्काउट स्कार्फ पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर मानस अग्रवाल, केशव शर्मा, रजनीश, सुरेन्द्र सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

# झुंझुनूं में युवक की हत्या को लेकर धरना जारी, पुलिसकर्मी पर आरोप

## परिजन मुआवजे और सरकारी नौकरी की मांग पर अड़े

जयपुर टाइम्स

**झुंझुनूं(निस)।** जिले के धनुरी थाना क्षेत्र स्थित बिरमी गांव में युवक सुभाष मेघवाल की हत्या का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। मृतक के परिजनों और ग्रामीणों की ओर से हत्या के आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी, पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा और मृतक के आश्रित को सरकारी नौकरी देने की मांग को लेकर लगातार चौथे दिन भी धरना प्रदर्शन जारी है। प्रशासन और पुलिस की ओर से पिछले तीन दिनों से लगातार समझाइश की कोशिशें की जा रही हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस समाधान नहीं निकल सका है, जिससे गांव में तनाव का माहौल बना हुआ है।

### पुलिसकर्मी पर हत्या का गंभीर आरोप

मृतक सुभाष मेघवाल की पत्नी मनोज देवी ने 18 मई को धनुरी थाने में हत्या का मामला दर्ज कराया था। दर्ज प्राथमिकी के अनुसार, 16 मई को त्रिलोका का बास निवासी मुकेश जाट, उसके साले और दो-तीन अन्य ने सुभाष पर जानलेवा हमला किया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया और उसे जयपुर रेफर किया गया। इलाज के दौरान सुभाष की मृत्यु हो गई। परिजनों का आरोप है कि मुख्य आरोपी मुकेश जाट पुलिस विभाग में कनिष्ठ सहायक के पद पर नियुक्त हुआ था, वर्तमान में वह पदोन्नत होकर वरिष्ठ सहायक के रूप में पुलिस मुख्यालय, जयपुर में तैनात है। परिजनों का दावा है कि मुकेश जाट का पुलिस विभाग में रसूख होने के कारण ही अब तक उसकी गिरफ्तारी नहीं हो सकी है, जिससे उन्हें न्याय मिलने में बाधा आ रही है। हत्या के आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी की जाए, पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा दिया जाए, मृतक के आश्रित को सरकारी नौकरी दी जाए। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि जब तक उनकी सभी मांगें पूरी नहीं होतीं, वे अपना आंदोलन समाप्त नहीं करेंगे। वे जिला प्रशासन से यह भी मांग कर रहे हैं कि मामले की निष्पक्ष जांच के लिए एक उच्चस्तरीय समिति गठित की जाए, ताकि पुलिस विभाग से जुड़े आरोपी को किसी भी तरह से बचाया न जा सके।

### *प्रशासन की समझाइश विफल, पुलिस बल तैनात*

*जिला प्रशासन और पुलिस के अधिकारी लगातार धरनास्थल पर पहुंचकर ग्रामीणों को समझाने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन प्रदर्शनकारी अपनी मांगों पर अड़े हुए हैं। जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक ने परिजनों को उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है, लेकिन परिजनों का कहना है कि जब तक गिरफ्तारी नहीं होती, वे किसी भी मौखिक आश्वासन को नहीं मानेंगे। घटना के चलते गांव में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूरी सतर्कता बरती जा रही है। ग्रामीणों का यह आंदोलन अब एक बड़े जनआंदोलन का रूप लेता जा रहा है।*

## राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सालासर बालाजी मंदिर में दर्शन कर पूजा अर्चना की

जयपुर टाइम्स

**चूरू(निस)।** राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को सालासर बालाजी मंदिर में दर्शन कर पूजा - अर्चना की और देश - प्रदेश में खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर धर्मवीर पुजारी, यशोदा नंदन पुजारी, जीतमल पुजारी, मनीष पुजारी, नागरमल पुजारी, धर्मचंद, किशन, गौरीशंकर आदि ने विधानसभा अध्यक्ष को पूजा अर्चना करवाई तथा बालाजी का चित्र व दुपट्टा भेंट कर अभिनंदन किया। इस दौरान सुजानगढ़ एसडीएम ओमप्रकाश वर्मा, सीओ दरजाराम, नायब तहसीलदार अमरसिंह, हरिराम रणवां सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारी मौजूद रहे।

## दिव्या ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

**सुजानगढ़(नि.सं.)।** स्थानीय वार्ड नंबर 5 ने निवासी बालचंद जाट की पुत्री दिव्या ऐचरा ने डीडी स्प्रिंग डेल्स सैकेंडरी स्कूल में अध्यनरत रहते हुए 600 में से 585 अंक हासिल किए हैं। 97.50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर दिव्या ने स्कूल में प्रथम स्थान हासिल किया है। इसी स्कूल में अध्यनरत वार्ड नंबर 3 के पीथाराम ज्याणी के पुत्र नितिन ज्याणी ने 94.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। दिव्या और नितिन ने सफलता का श्रेय परिजनों व गुरूजनों को दिया है।

## विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम आज से, बैठक में कृषि अधिकारियों को दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

**चूरू(निस)।** कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से खरीफ पूर्व अभियान के तहत विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम का आयोजन जिले में 29 मई से 12 जून तक किया जाएगा। कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु बुधवार को कृषि विस्तार संयुक्त निदेशक मुकेश कुमार माथुर ने बैठक में कृषि अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए। बैठक में कृषि विज्ञान केन्द्र चांदगोठी के वैज्ञानिक डॉ बलबीर सिंह, परियोजना निदेशक आत्मा डॉ राजकुमार कुलहरी, सहायक निदेशक कृषि संगीता मीणा, कुलदीप शर्मा, कृषि अधिकारी उद्यान रामावतार शर्मा, कृषि अधिकारी नागेन्द्र नायक, विजय पुरी, कृषि अनुसन्धान अधिकारी कविता बुडानिया आदि ने भाग लेकर कार्यक्रम के क्रियान्वयन पर विस्तृत चर्चा की। कृषि विस्तार संयुक्त निदेशक मुकेश माथुर ने बताया कि कार्यक्रम अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र सरदारशहर व चांदगोठी के वैज्ञानिकों की ओर से खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों से संबंधित आधुनिक तकनीकी, किसानों के लिए उपयोगी विभिन्न सरकारी विभागीय योजनाओं की जानकारी, मृदा स्वास्थ्य कार्ड में सुझाई गई विभिन्न फसलों के चयन तथा संतुलित उर्वरक व खाद, प्रमुख रूप से बीजों की नई किस्मों, उत्पादकता वृद्धि के मूल मंत्र जैसे कि समय पर बुवाई, प्रमाणित/उन्नत बीज का प्रयोग, मिट्टी की जांच के आधार पर संतुलित उर्वरक प्रयोग, उचित बीज दर व फसल की कतार में बुवाई, दलहनी/तिलहनी फसलों में जिप्सम का उपयोग, फव्वारा/ड्रिप/सिचांई पाईपलाईन का उपयोग, फसल की क्रान्तिक अवस्थाओं पर सिंचाई, मित्र कीटों का सरंक्षण, उन्नत कृषि यंत्रों का उपयोग इत्यादि के बारे में किसानों को जागरूक किया जाएगा। साथ ही प्राकृतिक खेती को बढावा देने पर बल दिया जाएगा और किसानों से फीडबैक लिया जाएगा, जिससे किसानों की ओर से किए गए नवाचार के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सके तथा अनुसंधान की दिशा का निर्धारण कर सके। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के नोडल अधिकारी उप निदेशक कृषि व पदेन परियोजना निदेशक आत्मा, चूरू होंगे। विभाग की ओर से कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रत्येक टीम के साथ समन्वय के लिए विभाग के प्रतिनिधि के रूप में सहायक निदेशक कृषि/कृषि अधिकारी/कृषि अनुसंधान अधिकारी का मनोनयन किया गया है। क्षेत्रीय कृषि कार्मिकों को शिविरों में अधिकाधिक किसानों को आमंत्रित करने के निर्देश दिए गए हैं।

## 10 वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में आदर्श स्कूल के विद्यार्थियों ने लहराया परचम

जयपुर टाइम्स

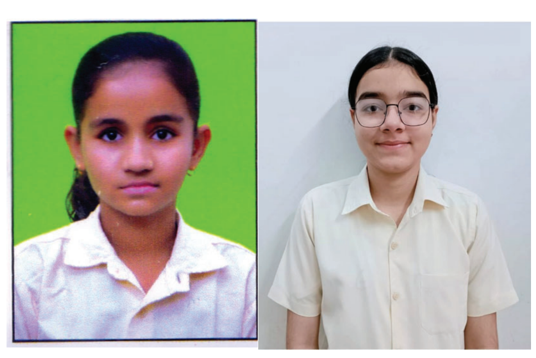

**सरदारशहर(निस)।** शहर के श्री भारतीय आदर्श विद्यापीठ स्कूल व श्री आदर्श क्रिएटिव स्कूल के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर की ओर से घोषित माध्यमिक परीक्षा परिणाम में विद्यालय के विधार्थियो ने 98.17 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर बनाया कीर्तिमान। जिसमें स्कूल के विद्यार्थी 98.17 सनिधि शर्मा पुत्री राकेश कुमार शर्मा, 95.33 वृंदा शर्मा पुत्री मनीष कुमार सेवदा, 94.33 राजश्री पुत्री मुकेश कुमार गुसाई, 93.83 कनिष्का सिंह पुत्री मुन्नीलाल, 93.67 चित्राक्षी पुत्री धनेश कुमार, 93.67 युवराज शर्मा पुत्र सूरज कुमार, 92.83 सारांश पुत्र राजेंद्र पांडिया, 92.83 आयुषी पारीक पुत्री पवन कुमार, 92.67 शिविष गजराज पुत्र अमित गजराज, 92.50 विकास बिजारणिया पुत्र दलूराम, 91.83 अवलिया पुत्री मो अयूब, 91.50 भूमिका पुत्री सतेंद्र, 91.17 निशांत व्यास पुत्र श्याम लाल, 91.17 भक्ति सोनी पुत्री लोकेश सोनी, 91.17 भजनलाल पुत्र हेमराज, 90.83 वासुदेव जोशी पुत्र मुकनाराम, 90.50 ईशा प्रजापत पुत्री महेंद्र कुमार, 90.17 कृष्ण प्रजापत पुत्र अनिल कुमार ने अंक प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया। विद्यालय परिवार द्वारा विधार्थियो व अभिभावकों को साफा व माला पहनाकर ग़ुलाल लगाकर, मिठाई खिलाकर सम्मानित किया गया। शानदार आतिशबाजी कर बेहतरीन परीक्षा परिणाम का स्कूल परिसर में जश्न मनाया गया। भारी संख्या में समारोह में मौजूद ग्रामीण व शहर से पधारे लोगों ने विधार्थियो व विद्यालय परिवार को बधाई व शुभकामनायें प्रदान की। इस अवसर पर प्रधानाचार्य राधेश्याम बढ़ाढरा ने बताया कि यह एक अनूठी उपलब्धि है। सचिव राधा लाटा ने आदर्श प्रतिभाओं को इस स्वर्णिम सफलता पर बधाई देते हुए आदर्श टेस्ट सीरीज, आदर्श महासंग्राम, स्टॉफ की कड़ी मेहनत, अभिभावकों का विद्यालय प्रशासन के प्रति सकारात्मक सहयोग और विद्यार्थियों के नियमित अध्ययन को इस सफलता का श्रेय दिया। समारोह में उपस्थित अभिभावकों ने आदर्श को शहर का गौरव बताया। अनेक विद्यार्थियों ने भी अपने विचार रखे।

## चूरू-मोलीसर ट्रैक दोहरीकरण का स्पीड ट्रायल सफल, 90 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ेगी ट्रेन

### बीकानेर रेल मंडल के चूरू-मोलीसर रेलखंड में बुधवार को मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त ने किया स्पीड ट्रायल

जयपुर टाइम्स

**चूरू(निस)।** बीकानेर रेल मंडल परीक्षण के दौरान लगभग 27 किलोमीटर लंबे चूरू-मोलीसर रेलखंड तक रेल संरक्षा आयुक्त बुधवार को स्वचालित ट्रॉली से पहुंचे और चूरू से मोलीसर तक स्पीड ट्रायल सीआरएस स्पेशल से 120 किमी प्रतिघंटा की स्पीड से ट्रायल किया। ट्रायल सफल होने के बाद सीआरएस श्रीनिवास ने 90 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से ट्रेन चलाने की अनुमति प्रदान की। निरीक्षण के दौरान सीआरएस ई श्रीनिवास ने सुरक्षा मानकों, तकनीकी पहलुओं व ट्रैक की गुणवत्ता का बारीकी से अवलोकन किया। उल्लेखनीय है कि पूर्व में रतनगढ़ से मोलीसर तक डबल लाइन थी और मोलीसर से चूरू तक सिंगल लाइन थी, अब मोलीसर से चूरू तक डबल लाइन पर गाड़ी चलाने की अनुमति मिलने से रेलवे कम समय में अधिक गाड़ियां चला सकेगा और रेलवे अधिक माल का परिवहन कर सकेगा, जिससे रेलवे की आय में वृद्धि होगी। उक्त स्पीड ट्रायल दोहरीकरण परियोजना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे इस मार्ग पर ट्रेनों की गति, संख्या व संचालन क्षमता में वृद्धि होगी। आने वाले समय में यात्रियों को तेज और सुरक्षित यात्रा सुविधा प्राप्त होगी। स्पीड ट्रायल के दौरान बीकानेर मंडल रेल प्रबंधक डॉ. आशीष कुमार, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी रणसिंह गोदारा, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक जयप्रकाश, सीनियर डीएसटीई ललित कुमार, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वयक) अमित जैन, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (दक्षिण) अमन अग्रवाल, सीनियर डीईई टीआरडी जितेंद्र कटारिया, वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (सामान्य) आदित्य लेघा, डिप्टी चीफ इंजीनियर विजय सिंह, चीफ इंजीनियर कंस्ट्रक्शन एस.एल मीना, मूवमेंट इंस्पेक्टर महेंद्र सिंह, धीरज थानवी सहित रेलवे के अनेक अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

## कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने किया आउटडोर फिटनेस सेंटर और ओपन जिम का शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

**जयपुर(कासं.)।** कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने वार्ड नं. 62 सोमेश्वर पार्क, झोटवाड़ा में आउटडोर फिटनेस सेंटर और ओपन जिम का शुभारंभ किया। कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ का संकल्प है कि झोटवाड़ा परिवार स्वस्थ और समृद्ध हो। यह उनकी प्राथमिकता है। इसके लिए वह लगातार प्रयासरत हैं और पूरे झोटवाड़ा में आउटडोर फिटनेस सेंटर और ओपन जिम की सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं। इसी क्रम में कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ वार्ड नं. 62 सोमेश्वर पार्क, झोटवाड़ा में आउटडोर फिटनेस सेंटर और ओपन जिम का शुभारंभ किया। जनता ने इसके लिए कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ का हार्दिक आभार जताया है। कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में फिट रहना किसी चुनौती से कम नहीं है। फिटनेस को जीवनशैली का हिस्सा बनाना बहुत जरूरी हो गया है। इसी आवश्यकता को समझते हुए अब शहरों और कस्बों में आउटडोर फिटनेस सेंटर और ओपन जिम की शुरुआत की जा रही है। आउटडोर फिटनेस सेंटर और ओपन जिम का शुभारंभ केवल एक स्वास्थ्य सुविधा है। यह पहल न केवल शारीरिक रूप से फिट रखने में सहायक है बल्कि मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक और सामूहिक चेतना को भी बढ़ावा देती है।

# विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी आए लक्ष्मणगढ़

जयपुर टाइम्स

**लक्ष्मणगढ़(निस)।** राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी बुधवार को एक दिवसीय दौरे पर शेखावाटी पर आए। देवनानी के सीकर पहुंचने पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी जयपुर से सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ पहुंचे। जहां आदर्श विद्या मंदिर में बुधवार से शुरू हुए तीन दिवसीय सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार यज्ञानुष्ठान कार्यक्रम के शुभारंभ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस दौरान देवनानी का राजस्थानी साफा व शॉल ओढ़ाकर आयोजिकों की ओर से स्वागत अभिनंदन किया गया। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि आचार्य पंडित नटवरलाल जोशी की स्मृति में भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय अध्यधीन केंद्रीय संस्कृत विद्यालय नई दिल्ली और मीडिया फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहे तीन दिवसीय भारतीय ज्ञान प्रणाली में गुरु शिष्य परंपरागत उपनयन संस्कार प्रशिक्षण कार्यशाला व सामूहिक उपनयन यज्ञोपवीत संस्कार अनुष्ठान के वर्ग का आयोजन किया गया है जिसमें वह शामिल हुए हैं। विधानसभा में हुए गतिरोध पर बोलते हुए देवनानी का कहा कि जिस ओर से गतिरोध है तो इसका जवाब वह देंगे, मेरी ओर से कोई गतिरोध नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारी विधानसभा का काम गरिमामय, परंपराओं, नियमों व मर्यादा पूर्ण चले यह हर विधानसभा अध्यक्ष का दायित्व है वही मैं कर रहा हूं अगर कोई मर्यादाओं का उल्लंघन करेंगे तो निश्चित रूप से नियमानुसार कार्रवाई होगी। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कोटा में लगातार बढ़ रहे छात्रों के सुसाइड के मामलों को लेकर कहा कोचिंग के साथ परिवार को भी बच्चों को अनुकूल वातावरण देना चाहिए। अभिभावक को डॉक्टर और इंजीनियर बनने की बजाय अच्छा नागरिक या शिक्षाविद बनाना चाहिए, बच्चों पर अनावश्यक दबाव न बनाकर उन्हें अनुकूल वातावरण देना चाहिए और बच्चे अपनी बात कह सके इस तरह का वातावरण भी बनाना जरूरी है। देवनानी ने कहा कि हर बच्चे में गुण अलग-अलग होते हैं, हर बच्चे को डॉक्टर और इंजीनियर बनना है इस बात का भी मां-बाप को कभी भी दबाव नहीं डालना है। उन्होंने कहा कि सभी बच्चों के अलग-अलग गुण है इसलिए उसकी इच्छा के अनुकूल और उसकी क्षमता के अनुकूल पाठ्यक्रम करवाएं। देवनानी ने कहा कि जहां वह पाठ्यक्रम करें वहां का वातावरण उन्हें शुद्ध मिले, गुरु शिष्य के साथ उसके मन में क्या चल रहा है, इस पर भी संवाद करना चाहिए। विपक्ष की ओर से भाजपा पर सेना के शौर्य पर राजनीति करने के आरोप पर बोलते हुए वासुदेव देवनानी ने कहा कि राष्ट्रीय मुद्दों पर राजनीति करना एक तरह से सही नहीं है। उन्होंने कहा कि पहली बार भारतीय सेना ने पाकिस्तान सीमा के 100 मीटर अंदर घुसकर आतंकवादी ठिकानों पर हमला कर उन्हें नेतनाबूद किया है। उन्होंने कहा कि हर भारतीय को हमारी सेना और राष्ट्रीय नेतृत्व पर आस्था होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मुद्दों पर राजनीति नहीं करनी चाहिए राजनीति जहां करनी हो वहां करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि देश के साथ, राष्ट्रवाद या राष्ट्रीय मुद्दों और सैनिकों व देश के नेतृत्व पर इस तरह की सोच उनकी संकीर्ण सोच है। इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज बाटड़, भाजपा पूर्व जिला अध्यक्ष व किसान मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष हरिराम रणवा, भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष महेश शर्मा सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता व आमजन मौजूद रहे। इससे पूर्व विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के लक्ष्मणगढ़ आगमन पर भाजपा स्थानीय भाजपा की ओर से जिला मंत्री गोपाल लाटा, शहर मण्डल अध्यक्ष ललित पंवार, नेता प्रतिपक्ष एडवोकेट ललित पुरोहित, पूर्व मंडल अध्यक्ष जयप्रकाश सरावगी व मधुसूदन दायमा के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का माल्यार्पण कर शानदार अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में भाजपा पदाधिकारी पार्षद व कार्यकर्ताओं सहित स्थानीय वार्डवासी उपस्थित रहे। इस मौके पर देवनानी ने कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया और पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।